

संस्कृत स्वयं शिक्षक

प्रथम भाग

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

संस्कृत स्वयं शिक्षक

प्रथम भाग



SANSKRIT SELF TAUGHT
Part I.

लेखक—

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

(चारों वेदों के भाष्यकार और संस्कृत के अन्य
धीसियों ग्रन्थों के रचयिता)

प्रकाशक—

म० राजपाल प्रेस संज

अनारकली लादीर

दो शब्द

संस्कृत स्वयं शिक्षक का अभिमान संस्करण आपके हाथ में है। पुस्तक कितनी उपयोगी सिद्ध हुई है इसका अनुमान केवल इसी घात से लग सकता है कि थोड़े से समय में दो यह पुस्तक आठ बार छपकर हाथों हाथ बिक चुकी है।

संस्कृत स्वयं शिक्षक की पंजाब टैक्सट बुक कमेटी, महाराजा साहब बदीदा, मिनिस्त्रल सिन्ध नेशनल कॉलेज और अन्य कई शिक्षा विभागों ने मुक्त-कंठ से प्रशंसा करते हुए इसकी सिफारिश की है।

महात्मा गान्धी जी ने भी इस पुस्तक की शैली को पसन्द किया है।

आशा है आप पूर्ववत् इस नए संस्करण को अपनाकर देववाणी संस्कृत का सन्मान करेंगे।

—प्रकाशक—

संस्कृत स्वयं शिक्षक

पुस्तक आरम्भ करने से पहिले इसे अवश्य पढ़ —

इस पुस्तक का नाम "संस्कृत स्वयं शिक्षक" है और जो यह इस नाम से विदित होता है वैसे ही इसका कार्य है। बिना किसी परिचित की सहायता आर्य-भाषा (हिन्दी) जानने वाला मुख्य इस पुस्तक के पढ़ने से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जो देवनागरी अक्षर नहीं जानते, उनको उचित है, कि देवनागरी अक्षर पहिले पढ़ कर इस पुस्तक को पढ़ें, देवनागरी अक्षरों को जाने बिना संस्कृत का ज्ञानना कठिन है।

बहुत लोग यह समझते हैं कि "संस्कृत भाषा बहुत कठिन है, कई वर्ष प्रयत्न करने से ही उसका ज्ञान हो सकता है।" परन्तु वास्तव में विचार किया जाय तो यह भ्रम मात्र है। संस्कृत भाषा नियमबद्ध होने के कारण तथा स्वभाव सिद्ध होने के कारण सब वर्तमान भाषाओं से सुगम है। कम से कम मैं यह कह सकता हूँ कि अंग्रेजी भाषा संस्कृत भाषा से दस गुणा कठिन है, मैंने कई वर्षों के अनुभव से यह देखा है कि संस्कृत भाषा अत्यन्त सुगम रीति से पढ़ाई जा सकती है, और अपना व्यवहारिक वातावरण तथा रामायण महाभारतादि पुस्तकों का अध्ययन करने के लिये जितना संस्कृत का अभ्यास चाहिये वतना संस्कृत का ज्ञान प्रति-दिन घण्टा, आधा घण्टा करने से एक वर्ष की अवधि में अच्छी प्रकार प्राप्त हो सकता है। यह मेरी कोई कल्पना नहीं परन्तु अनुभव की हुई बात है। इसी कारण संस्कृत जिज्ञासु सर्वसाधारण

जनता के सम्मुख उसी अनुभव की हुई अपनी विशिष्ट पद्धति को इस पुस्तक द्वारा रखना चाहता हूँ ।

हिन्दी अर्थात् आर्य भाषा के कई वाक्य इस पुस्तक में भाषा की रीति से कुछ विरुद्ध पाए जायेंगे, परन्तु वे वैसे इस लिये लिखे गये हैं कि वे संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त हुए शब्दों के क्रम के अनुकूल हों तथा किसी किसी स्थान पर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी उसके नियमों के अनुसार नहीं लिखा है तथा शब्दों की संधि कहीं भी नहीं की गई । यह सब इसलिये किया है कि पाठकों को सुमीता हो और उनका संस्कृत में प्रवेश सुगमता पूर्वक हो सके । पाठक यह भी देखेंगे कि जैसा प्रवेश अधिक २ हो गया है वैसा वैसा शब्दों का क्रम भी यथा-योग्य हो गया है अर्थात् जो भाषा की शैली की न्यूनता पहिले पाठों में है वह आगे के पाठों में नहीं है । भाषा शैली की कुछ न्यूनता सुगमता के लिये जान बूझ कर रक्खी गई है, इसलिये पाठक इसकी ओर ध्यान न देकर अपना अभ्यास जारी रखें ताकि उनका संस्कृत-मन्दिर में प्रवेश भलीभाँति हो सके ।

पाठकों को उचित है कि वे न्यून से न्यून प्रतिदिन एक घण्टा इस पुस्तक का अध्ययन किया करें और जो जो शब्द जानें उनका प्रयोग बिना किसी प्रकार के मंकोच के करने का यत्न करें इससे उनकी व्रत्ति प्रतिदिन होती रहेगी ।

जिस रीति का अवलंबन हम पुस्तक में किया है वह न केवल सुगम है परन्तु निःसन्देह स्वभाविक है, और स्वभाविक होने के कारण ही इस रीति से थल्प काल में और थोड़े परिश्रम से बहुत लाभ होगा ।

यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि प्रतिदिन एक घण्टा

प्रयत्न करने से एक वर्ष के अन्दर व्यवहारिक संस्कृत भाषा का ज्ञान इस पुस्तक की पद्धति से हो सकता है। परन्तु, पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि केवल उत्तम शैली से ही काम नहीं चलेगा, पाठकों का यह कर्तव्य होगा कि वे प्रतिदिन पर्याप्त और निश्चित समय इस कार्य के लिये अवश्य लगाया करें नहीं तो कोई पुस्तक कितनी ही अच्छी क्यों न हो बिना प्रयत्न के पाठन से उसे पूरा ज्ञान नहीं उठा सकते।

इस पुस्तक का अभ्यास करने की पद्धति

(१) प्रथम पाठ तक जो कुछ लिखा है, उसे अच्छी प्रकार पढ़िये। सब ठीक समझने के पश्चात् प्रथम पाठ को पढ़ना प्रारम्भ कीजिये।

(२) हर एक पाठ प्रथम सम्पूर्ण पढ़ना चाहिये, पश्चात् उसको क्रमशः स्मरण करना चाहिये; हर एक पाठ को न्यून से न्यून दस बार पढ़ना चाहिये।

(३) हर एक पाठ में जो जो संस्कृत वाक्य हैं, उनको कण्ठ करना चाहिये तथा जिन जिन शब्दों का रूप दिये हैं, उनको स्मरण करके, उनके समान जो जो शब्द दिये होंगे, उन शब्दों के रूप जैसे ही बताने का यत्न करना चाहिये।

(४) जहाँ परीक्षा के प्रश्न दिये हों वहाँ उनका उत्तर दिये बिना आगे पढ़ना नहीं चाहिये। यदि प्रश्नों का उत्तर देना अशक्य हुआ, तो पूर्व पाठ द्वारा पढ़ना चाहिये। प्रश्नों का मूट उत्तर न देने का यही मतलब है कि पूर्व पाठ ठीक प्रकार तय्यार नहीं हुए।

(५) जहाँ द्वारा पढ़ने की सूचना दी है वहाँ अवश्य द्वारा पढ़ना चाहिये।

(६) दो पाठक साथ साथ अभ्यास करेंगे और परस्पर प्रश्नोत्तर करके एक दूसरे की मदद देंगे तो अभ्यास बहुत शीघ्र हो सकता है।

(७) यह पुस्तक तीन महीनों के अभ्यास के लिये है, इसलिये पाठकों को चाहिये कि वे समय के अन्दर पुस्तक समाप्त करें; जो पाठक अधिक समय लेना चाहें वे ले सकते हैं। यह पुस्तक अच्छी प्रकार स्मरण होने के पश्चात् ही दूसरी पुस्तक प्रारम्भ करनी चाहिए।

अक्षर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
 ॡ ॢ ए ऐ ओ औ अं अः।
 क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ,
 ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न,
 प फ ब भ म, य र ल व
 श ष स ह ञ्ञ ञ्ञ ।

ॐ शुद्ध स्वर ॐ

अ, इ, उ, ऋ, ए,

यह पाँच शुद्ध स्वर हैं ।

संयुक्त—स्वर

अ और अ	अथवा	आ	मिलकर	“आ”—बना है
इ ” ई ”	इ ”	ई ”		“ई”—बनी है
उ ” ऊ ”	उ ”	ऊ ”		“ऊ”—बना है
ऋ ” ॠ ”	ऋ ”	ॠ ”		“ऋ”—बना है
अ ” इ ”	ई ”	ई ”		“ए”—बना है
आ ” इ ”	ई ”	ई ”		“ए”—बना है
अ ” उ ”	ऊ ”	ऊ ”		“ओ”—बना है
आ ” उ ”	ऊ ”	ऊ ”		“ओ”—बना है
अ } आ } अ } आ }	“ ए ”	ऐ ”		“ऐ”—बना है
	“ ओ ”	औ ”		“औ”—बना है

इतने संयुक्त स्वर हैं ।

स्वर अन्य अक्षर (स्वरों से बने हुए अक्षर)

इ अथवा ई स्वर अ के साथ मिलकर “य” बनता है

उ ” ऊ ” अ ” ” “व” ” ”

श	॥	श	॥	अ	॥	र	॥	"र"	॥	॥
ल	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	"ल"	॥	॥

मगुण व्यञ्जन ।

क	और	प	मिलकर	यप	[क]	पना है
ज	॥	ब	॥	जज	[ज]	॥
फ	॥	व	॥	यव	[फ]	॥
ब	॥	म	॥	र्म		॥
भ	॥	र	॥	अ		॥
त	॥	र	॥	अ		॥
द	॥	र	॥	द्र		॥
त	॥	य	॥	त्य		॥
प	॥	त	॥	स		॥
ल	॥	ल	॥	ल		॥
ह	॥	य	॥	ल		॥
व	॥	र	॥	व		॥
क	॥	र	॥	क		॥
म	॥	न	॥	अ		॥
स	॥	र	॥	स		॥
व	॥	द	॥	व्द		॥
द—र—य			॥	द्रय		॥

प-त-य , प्य ,

श-र-य , श्रय ,

इस प्रकार अनन्त संयुक्ताक्षर हैं, हिन्दी भाषा के पाठकों को अचित्त दे कि वे इस संयुक्ताक्षर पद्धति को जानें ताकि वे अच्छी तरह संयुक्ताक्षरों की पढ़ सकें।

कुछ स्वरों की सन्धि

ए+अ=अय । ऐ+अ=आय । ओ+अ=अव ।
 औ+अ=आर होता है ।

इसी प्रकार अन्य स्वर मिलने पर सन्धि जाननी चाहिये । जैसा:-

ए+आ=अपा ।	ऐ+ई=आपी ।
ओ+उ=अवु ।	औ+ऊ=आवृ ।
ए+ए=अये ।	ऐ+औ=आया ।
ओ+ए=अये ।	औ+ओ=आमो ।

इस प्रकार "प ऐ, ओ, औ" की सन्धि पाठक जान सकेंगे !

संस्कृत भाषा का स्वयं-शिक्षक

पाठ १

नीचे कुछ संस्कृत शब्द और उनके अर्थ दिये हुए हैं उनको याद करना चाहिये, संस्कृत भाषा के शब्द बड़े अक्षरों में लिखे हैं।

शब्द

। सः=वह। त्वं=तू। अहं=मैं।

गच्छति=वह जाता है। गच्छा^१सि=तू जाता है।

गच्छामि=मैं जाता हूँ।

वाक्य

अहं गच्छामि=मैं जाता हूँ। त्वं गच्छसि=तू जाता है।

॥ गच्छति=वह जाता है।

पाठक लोग यहाँ ध्यान रखें कि संस्कृत वाक्यों का भाषा में अर्थ शब्दों के क्रम से ही दिया है, इस बात का ज्ञान शब्दों के ऊपर जो अंक दिये हैं उनको देखने से हो सकता है।

कुत्र=कहाँ। यत्र=जहाँ। अत्र=यहाँ।

। तत्र=वहाँ। सर्वत्र=सब स्थान पर। किं=क्या।

वाक्य

१. त्वं कुत्र गच्छसि=तू कहाँ जाता है ?

२. यत्र स गच्छति=जहाँ वह जाता है।

३. अहं तत्र गच्छामि=मैं वहाँ जाता हूँ।
४. स कुत्र गच्छति=वह कहाँ जाता है ?
५. यत्र अहं गच्छामि=जहाँ मैं जाता हूँ।
६. त्वं सर्वत्र गच्छसि=तू सब-स्थान-पर जाता है।
७. किं स गच्छति=क्या वह जाता है ?
८. स गच्छति किं=वह जाता है क्या ?
९. स कुत्र गच्छति=वह कहाँ जाता है ?
१०. यत्र त्वं गच्छसि=जहाँ तू जाता है।
११. त्वं गच्छसि किं=तू जाता है क्या ?
१२. अहं सर्वत्र गच्छामि=मैं सब-स्थान पर जाता हूँ।

सूचना—पठकों को ये सब वाक्य ध्यान में रखने चाहियें, अगर दो पाठक साथ साथ पढ़ते हों, तो एक दूसरे को संस्कृत तथा भाषा के वाक्य ब्यारण करके दूसरे से अर्थ पूछने चाहियें, और दूसरे को चाहिये कि वह अर्थ बताये परन्तु अगर अकेला ही पढ़ता हो तो उसे प्रथम ऊँची व्यासप्त में प्रत्येक वाक्य दस बार ब्यारण करके तत्पश्चात् संस्कृत वाक्यों की ओर दृष्टि देकर उनका अर्थ भाषा के वाक्यों की ओर दृष्टि न देते हुए मन में लाने का प्रयत्न करना चाहिये, ऐसा दो तीन बार करने से सब वाक्य याद हो सकते हैं।

जो पाठक इन वाक्यों की ओर ध्यान देंगे उनको इन शब्दों से कई अन्य वाक्य स्वयं रचने की योग्यता आवेगी और पता लगेगा कि योंदे से शब्दों से किनकी वागचीत हो सकती है।

शब्द

न=नहीं । अस्ति=है ।

कः=कौन । नास्ति=नहीं है ।

वाक्य

१. अहं न गच्छामि=मैं नहीं जाता हूँ ।
२. त्वं न गच्छसि=तू नहीं जाता है ।
३. स न गच्छति=वह नहीं जाता है ।
४. अहं तत्र न गच्छामि=मैं वहाँ नहीं जाता हूँ ।
५. त्वं सर्वत्र न गच्छसि=तू सब स्थान पर नहीं जाता है ।
६. किं स न गच्छति ?=क्या वह नहीं जाता है ?
७. यत्र त्वं न गच्छसि=जहाँ तू नहीं जाता है ।
८. त्वं न गच्छसि किम् ?=तू नहीं जाता है क्या ?
९. अहं सर्वत्र न गच्छामि=मैं सब स्थान पर नहीं जाता हूँ ।

सूचना—पाठक यहाँ ध्यान से देख सकते हैं कि केषल पक्ष 'न' कार के उपयोग से किमुने नये उपयोगी वाक्य बन गये हैं । अब 'कः' शब्द का उपयोग देखिये:—

१. कः तत्र गच्छति=कौन वहाँ जाता है ?
२. कः सर्वत्र गच्छति=कौन सब-स्थान-पर जाता है ?
३. तत्र कः न गच्छति=वहाँ कौन नहीं जाता ?
४. कः सर्वत्र न गच्छति=कौन सब स्थान-पर नहीं जाता ?
५. कः तत्र अस्ति=कौन वहाँ है ?

११. यत्र गच्छति=जहा वह जाता है ।

१२. तत्र त्वं गच्छसि किं=वहाँ तू जाता है क्या ?

यह वाक्य याद करने के पश्चात् नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये ।

यदा=जब । कदा=कब । सदा=सदा, हमेशा ।

सर्वदा=सदा, हमेशा । सदैव=सर्वकाल, हमेशा । तदा=तब ।

अब नीचे लिखे हुए वाक्यों को याद कीजिए । यदि आपने पूर्वोक्त वाक्य कण्ठ किए हों तो यह वाक्य आप स्वयं बना सकते हैं ।

१. कदा नगरं गच्छति=कब वह नगर को जाता है ?

२. यदा स ग्रामं गच्छति=जब वह गाँव को जाता है ।

३. अहं सदैव पाठशालां गच्छामि=मैं हमेशा पाठशाला को जाता हूँ ।

४. सर्वदा उद्यानं गच्छति=वह सदैव बाग को जाता है ।

५. किं त्वं सदा आपणं गच्छसि=क्या तू हमेशा बाजार को जाता है ?

६. अहं सदैव नगरं गच्छामि=मैं हमेशा नगर को जाता हूँ ।

७. यदा त्वं ग्रामं गच्छसि=जब तू गाँव को जाता है ।

८. तदाहं उद्यानं गच्छामि=तब मैं बाग को जाता हूँ ।

९. स नगरं गच्छति किम्=वह नगर को जाता है क्या ?

१०. स सर्वदा ग्रामं गच्छति=वह सदा गाँव को जाता है ।

११. किं त्वं उद्यानं गच्छसि=क्या तू बाग को जाता है ?

१२. अहं सदैव उद्यानं गच्छामि=मैं सदा बाग को जाता हूँ ।

१३. त्वं कुत्र गच्छसि=तू कहां जाता है ?

१४. त्वं कदा गच्छसि=तू कब जाता है ?

१५. स सदैव गच्छति=वह हमेशा जाता है ।

पूर्वोक्त प्रकार से इन वाक्यों को भी ऊँचे धीले कर इस इस धार उच्चारण करना चाहिए, तत्पश्चात् संस्कृत वाक्य की ओर देख कर (भाषा के वाक्य को न देखते हुए) उसका भाषा का वाक्य बनाना चाहिए, तत्पश्चात् भाषा का वाक्य देखकर उसका संस्कृत वाक्य बनाना चाहिए, इस प्रकार करने से पाठक स्वयं कई नए वाक्य बना सकते हैं । अब कुछ निषेध के वाक्य बताते हैं ।

१. अहं गृहं न गच्छामि=मैं घर नहीं जाता हूँ ।

२. स ग्रामं न गच्छति=वह गांव को नहीं जाता है ।

३. त्वं पाठशालां न गच्छति किम्=तू पाठशाला को नहीं जाता है क्या ?

४. स उद्यानं किं न गच्छति=वह बाग को क्यों नहीं जाता ?

५. किं स ग्रामं न गच्छति=क्या वह गांव को नहीं जाता ?

६. किं त्वं आपणं न गच्छसि=क्या तू बाजार नहीं जाता ?

७. तत्र त्वं किं न गच्छसि=वहां तू क्यों नहीं जाता ?

८. यदा स ग्रामं न गच्छति=जब वह गांव को नहीं जाता ?

९. कः सदा उद्यानं न गच्छति=कौन हमेशा बाग को नहीं जाता ?

१०. स उद्यानं सर्वदा न गच्छति=वह बाग को हमेशा नहीं जाता ।

११. त्वं तत्र किं न गच्छामि=तू वहां क्यों नहीं जाता ?

१२. स तत्र सदैव न गच्छति=वह वहाँ हमेशा नहीं जाता ।

इस प्रकार पाठक वाक्य बना सकते हैं ।

पाठ ३

यदि आपने पूर्वपाठ के वाक्य तथा शब्द अच्छी प्रकार बगुठ किए हों तो अब आप निम्न लिखित शब्दों को याद कीजिए :—

सायं=शाम को । प्रातः=प्रातःकाल । रात्री=रात्री में ।

श्वः=रुल (आगामी दिन) । पर श्वः=परसों ।

दिवा=दिन में । मध्यान्हे=दोपहर । अद्य=आज ।

ह्यः=रुल (गत दिन) । न=नहीं ।

वाक्य

१ त्वं कुत्र सदैव प्रातः गच्छसि=तु कहीं हमेशा प्रातःकाल जाता है ?

२ अहं सदैव प्रातः उद्यानं गच्छामि=मैं सदा प्रातःकाल बाग को जाता हूँ ।

३ सायं उद्यानं गच्छति=वह सायंकाल बाग को जाता है ।

४ त्वं अद्य पाठशालां गच्छसि किम्=तु आज पाठशाला को जाता है क्या ?

५ अद्य अहं पाठशालां न गच्छामि=आज मैं पाठशाला को नहीं जाऊँगा ।

६ त्वं मध्यान्हे तु गच्छसि=तु दोपहर में कहीं जाता है ?

७ अहं मध्यान्हे ग्रामं गच्छामि=मैं दोपहर में गाँव को जाता हूँ ।

८ स दिवा नगरं गच्छति=वह दिन में नगर को जाता है ।

६ अहं रात्रौ गृहं गच्छामि=मैं रात्री में घर को जाता हूँ ।

१० यत्र त्वं रात्रौ गच्छसि=जहाँ तू रात्री में जाता है ।

११ तत्र अहं दिवा गच्छामि=वहाँ मैं दिन में जाता हूँ ।

१२ तत्र स प्रातः गच्छति=वहाँ वह प्रातःकाल जाता है ।

शब्द

यदि=यदि, अगर । तर्हि=तब । गमिष्यसि=तू जायगा ।

गमिष्यति=वह जायगा । यथा=जैसा । तथा=वैसा ।

कथं=कैसा । गमिष्यामि=जाऊँगा ।

जालंधरनगरं=जालंधर शहर को । हरिद्वारनगरं=हरिद्वार शहर को

वाक्य

१ यदि त्वं जालंधर नगरं स्वः गमिष्यसि=अगर तू जालंधर
को कल जायगा ।

२ तर्हि अहं हरिद्वार नगरं पर्यः गमिष्यामि=तब मैं हरिद्वार
शहर को पर्यों जाऊँगा ।

३ यदा त्वं गमिष्यसि तदा अहं गमिष्यामि=जब तू जायगा
तब मैं जाऊँगा ।

४ यदि त्वं न गमिष्यसि तर्हि अहं न गमिष्यामि=अगर तू
नहीं जायगा तब मैं नहीं जाऊँगा ।

५ स हरिद्वारं स्वः गमिष्यति=उह हरिद्वार को कल जावेगा ।

६ स प्रातः जालंधरनगरं गमिष्यति=वह प्रातः जालंधर
शहर को जायगा ।

७ यत्र स श्वः गमिष्यति=जहाँ वह कल जायगा ।

८ तत्र अहं परश्वः गमिष्यामि=वहाँ मैं परसों जाऊँगा ।

९ त्वं परश्वः ग्रामं गमिष्यसि किम्=तू परसों गांव को जायगा क्या ?

१० न अहं अद्य सायं नगरं गमिष्यामि=नहीं मैं आज सायंकाल
शहर को जाऊँगा ।

११ यथा त्वं गच्छसि तथा स गच्छति=जैसे तू जाता है वैसे वह
जाता है ।

१२ कथं तत्र स श्वः गमिष्यति=कैसे वहाँ वह कल नहीं जायगा ?

१३ स तत्र श्वः गमिष्यति=वह वहाँ कल नहीं जायगा ।

ये वाक्य देख पाठकों को पता लगेगा कि वे तनिक व्यवहार
के नए वाक्य स्वयं बना सकते हैं, इसलिये पाठकों से प्रार्थना है
कि वे नये नये वाक्य-प्राप्त शब्दों से बनाने का यत्न किया करें ।

अब निषेध के वाक्य देखिए:—

१ स सायं उद्यानं न गच्छति=वह शाम को बाग को नहीं जाता

२ कः मध्याह्ने पाठशालां न गच्छति=कौन दोपहर में पाठशाला
नहीं जाता ?

३ अहं रात्रौ नगरं न गच्छामि=मैं रात्रि में शहर को नहीं जाता ।

४ कः तत्र दिवा न गच्छति=कौन वहाँ दिन में नहीं जाता ?

५ त्वं श्वः जालंधरं न गमिष्यसि किम् ?=तू कल जलधर नहीं
जायगा क्या ?

६ यथा त्वं न गच्छसि तथा स न गच्छति=जैसे तू नहीं

जाता वैसे वह नहीं जाता ।

७. कथं स न गच्छति=कैसे वह नहीं जाता ?
 ८. स रात्रौ कुत्र कुत्र न गमिष्यति ?=वह रात्रि में कहां कहां नहीं जायगा ?
 ९. यत्र यत्र त्वं गमिष्यसि, तत्र तत्र स न गमिष्यति=जहां जहां तू जायगा, वहां वहां वह नहीं जायगा ।

पाठ ४

“गम्=(गच्छ)” अर्थ “जाना” । परन्तु उसके आगे “धा” लगाने से उसी का अर्थ “आना” होता है, देखिए—

शब्द

गच्छति=वह जाता है ।	गच्छसि=तू जाता है ।
गच्छामि=जाता हूँ ।	गमिष्यति=वह जायगा ।
गमिष्यसि=तू जायगा ।	गमिष्यामि=जाऊँगा ।
आगच्छति=आता है ।	आगच्छसि=तू आता है ।
आगच्छामि=आता हूँ ।	आगमिष्यति=आयेगा ।
आगमिष्यसि=तू आयेगा ।	आगमिष्यामि=आऊँगा ।
अपि=भी ।	नहि=नहीं ।
च=और ।	
वनं=वन को ।	कूर्पं=कूर्प को ।
अपि=भी ।	अपि=भी ।

वाक्य

१. यदा त्वं वनं गमिष्यसि=जब तू वन को जायगा,
२. तदा अहं अपि आगमिष्यामि=तब मैं भी आऊँगा ।

३. यदा तत्र स गमिष्यति=जब वहाँ वह जायगा,
 ४. तदा तत्र त्वं न आगमिष्यसि किं=तब वहाँ तू न आवेगा
 क्या ?
 ५. अहं प्रातः गमिष्यामि च सायं आगमिष्यामि=मैं सवेरे
 जाऊँगा और सायंकाल आऊँगा ।
 ६. कदा त्वं तत्र गमिष्यसि=कब तू वहाँ जावेगा ?
 ७. अहं मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि=मैं दोपहर को वहाँ जाऊँगा ।
 ८. यदि त्वं गमिष्यसि=अगर तू जायगा,
 ९. स अपि न आगमिष्यति=वह भी नहीं आवेगा ।

शब्द

भक्षयति=वह खाता है ।	भक्षयसि=तू खाता है ।
भक्षयामि=खाता हूँ ।	अन्नं=अन्न को ।
फलं=फल को ।	मोदकं=लड्डू को ।
भक्षयिष्यति=खायगा ।	भक्षयिष्यसि=तू खावेगा ।
भक्षयिष्यामि=खाऊँगा ।	ओदनं=चावल ।
सुवृगौदनं=खिरकी ।	आन्नं=आम को ।

वाक्य

१. स अन्नं भक्षयति=वह अन्न खाता है ।
 २. त्वं मोदकं भक्षयसि=तू लड्डू खाता है ।
 ३. अहं फलं भक्षयामि=मैं फल खाता हूँ ।
 ४. स ओदनं भक्षयिष्यति=वह चावल खावेगा ।

५. त्वं आम्नं भक्षयिष्यमि=तू आम् खावेगा।
 ६. अहं मुद्गोदनं भक्षयिष्यामि=मैं खिचड़ी खाऊँगा।
 ७. यदि स वनं प्रातः गमिष्यति=अगर वह वन की प्रातः
 काज जायगा।
 ८. तर्हि आम्नं भक्षयिष्यति=तब आम् खायेगा।
 ९. अहं तत्र गमिष्यामि च फलं भक्षयिष्यामि=मैं वहाँ
 जाऊँगा और फल खाऊँगा।
 १०. स गृहं गमिष्यति च मोदकं भक्षयिष्यति=वह घर
 जायगा और लड्डू खायगा।
 ११. किं स अन्नं भक्षयिष्यति=क्या वह अन्न खायगा।
 १२. यथा स ओदनं भक्षयिष्यति=जैसे वह चावल खायगा,
 १३. तथा तत्र अहं आम्नं भक्षयिष्यामि=वैसे वहाँ मैं आम्
 खाऊँगा।

अब पाठक बहुत कुछ चाक्य बना सकते हैं। इस लिए अब
 कुछ विभक्तियों के रूप देते हैं। जिनकी समझ करने से पाठकों
 की योग्यता बहुत बढ़ सकती है।

संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। (ये विभक्तियाँ भाषा
 में भी हैं) —

‘देव’ शब्द के सातों विभक्तियों के रूप

विभक्ति का नाम	विभक्ति के रूप	भाषा में अर्थ
१. प्रथमा	देव	देव
२. द्वितीया	देवम्	देव-को

१. तृतीया	देवेन	देव-द्वारा
४. चतुर्थी	देवाय	देव-के लिए
५. पंचमी	देवात्	देव-से
६. षष्ठी	देवस्य	देव-का
७. सप्तमी	देवे	देव में
८. सम्बोधन	[हे] देव	हे देव

पाठक यहाँ देख सकते हैं कि इन रूपों का वातचीत करने में कितना उपयोग होता है, वक्त रूपों का उपयोग करके अब कुछ वाक्य देते हैं—

१. देवः तत्र गच्छति=देव वहाँ जाता है।

२. हे देव ! त्वं तत्र गच्छसि किम् ?=हे देव ! तू वहाँ जाता है क्या ?

३. तत्र देवं पश्य=वहाँ देव को देख।

ॐ वक्त वाक्यों में “पश्य” आदि शब्द नये आप हैं, उनका अर्थ भाषा क वाक्यों को देख कर पाठक जान सकते हैं। अर्थ देखने के लिये १, २, ३, ४ ऐसे अक शब्दों के ऊपर रखे हैं।

१. देव तत्र न गच्छति।

२. हे देव ! त्वं तत्र न गच्छसि किम् ?

३. तत्र देवं न पश्यति।

४. देवेन अन्नं न दत्तम्।

५. देवाय फलं न देहि।

६. देवात् ज्ञानं न लभते।

४. देवेन अन्नं दौ^३मू=देव ने अन्न^३ दिया ।
५. देवाय फलं देहि^३=देव के लिए फल दे ।
६. देवात् ज्ञानं लभते=देव से ज्ञान मिलता है ।
७. देवस्य गृहं अस्ति=देव का घर है ।
८. देवे ज्ञानं अस्ति=देव में ज्ञान है ।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकेंगे, उनको उचित है कि वे इस प्रकार प्राप्त शब्दों का उपयोग करते रहें । अब शक्त वाक्यों के निरूपणार्थ के वाक्य देते हैं । इनका अर्थ पाठक स्वयं ज्ञान सकेंगे इस लिए दिए नहीं-

वाक्य

अहं नैव आगमिष्यामि । स मांसं नैव भक्षयिष्यति ।
 स आग्नं कदा भक्षयिष्यति ? यदा त्वं मोदकं भक्षयिष्यसि ।
 ॥ नित्यं फदलीफलं आनयति । देवः इदानीं कुत्र अस्ति ?
 देवः सर्वत्र अस्ति । स कदा आगमिष्यति ? स अत्र श्वः
 प्रातः आगमिष्यति । यत्र यत्र अहं गच्छामि तत्र तत्र स
 नित्यं आगच्छति ।

७. देवस्य गृहं न अस्ति ।

८. देवे ज्ञानं न अस्ति ।

पाठकों को ग्यान में रखना चाहिये कि ये वाक्य कोई खास अर्थ नहीं रखते हैं । यहाँ इतना ही बताया है, कि मन्त्र के साथ वाक्य कैसे बनाये जाते हैं । इनको देख पाठक बहुत नये वाक्य बना कर बोल सकते हैं ।

पाठ ५

पूर्वोक्त वाक्यों को तथा शब्दों को याद करने से पाठक स्वयं कई वाक्य बना कर प्रयोग में ला सकेंगे । हमने शब्द तथा वाक्य इस प्रकार रखे हैं, कि व्याकरण का बोझ पाठकों पर न पड़ कर उनके मन के ऊपर व्याकरण का सम्भार स्वयं हो जाय, और वे स्वयं वाक्य बना सकें, इस लिये पाठकों से प्रार्थना है कि वे पहिला पाठ पकाये बिना अगामी पाठ को प्रारम्भ न करें, तथा जो जो शब्द पाठों में दिये हुए हैं उनसे अन्यत्र वाक्य स्वयं बनाने का यत्न करें । अब नीचे लिखे हुए शब्द फल कीजिये —

नक्तं=रात्री में ।

नयति=वह ले जाता है ।

नयसि=तू ले जाना है ।

नयामि=मे जाना हूँ ।

नेष्यति=वह ले जायगा ।

नेष्यसि=तू ले जायगा ।

नेष्यामि=ले जाऊँगा ।

नवीनं=नया ।

सर्वं=सब ।

आनयति=जाता है ।

आनयसि=तू लाता है ।

आनयामि=जाता हूँ ।

आनेष्यति=वह लायगा ।

आनेष्यसि=तू लायगा ।

आनेष्यामि=लाऊँगा ।

पुराणं=पुराना ।

१. स फलं नयति=वह फल ले जाता है ।

२. अहं आन्नं आनयामि=मैं आन लाता हूँ ।

३. त्वं अन्नं आनेष्यसि किं=तू अन्न लायेगा क्या ?

४. अहं तत्र गमिष्यामि=मैं वहाँ जाऊँगा ।

५ फलं च आनेष्यामि=और फल लाऊंगा ।

६ त्वं श्वः कुत्र गमिष्यसि ?=तू कल कहां जायगा ?

८ त्वं कदा आगमिष्यसि=तू कब आवेगा ?

शब्द

जलं=जल । पुष्पं=फूल । अपूपं=पूड़ा । सूयं=दाज ।

पुस्तकं=पुस्तक । किमर्थं=किस लिए ।

१ अहं जलं आनयामि=मैं जल लाता हूँ ।

२ त्वं पुष्पं आनयसि=तू फूल लाता है ।

लेखनीं=लेखनी, कलम । मयीं=स्याही की ।

मसीपात्रं=दवात । वस्त्रं=कपड़ा । उत्तरीयं=दुपट्टा ।

व्यर्थं=व्यर्थ, गामुछा है ।

३ स वस्त्रं तत्र नयति=वह वस्त्र वहां ले जाता है ।

४ स सदा नगरं गच्छति च पुस्तकं आनयति=वह हमेशा

शहर जाता है और पुस्तक लाता है ।

५ स अद्य आगमिष्यति वस्त्रं च नेष्यति=वह आज आवेगा

और कपड़ा ले जायगा ।

६ अहं आम्रं आनयामि=मैं आम लाता हूँ ।

७ त्वं अपूपं आनयसि=तू पूड़ा लाता है ।

८ स उत्तरीयं नयति=वह दुपट्टा ले जाता है ।

९ कदा स मसीपात्रं पुस्तकं च तत्र नेष्यति=कब वह दवात

और पुस्तक वही ले जायगा ?

१० स सायं तत्र मसीपात्रं लेखनीं च नेष्यति-वह शाम क
वहा दवात और लेखनी ले जायगा ।

११ त्वं रात्रौ हरिद्वारं गमिष्यसि किं=तु रात्रि में हरिद्वार
जायगा क्या ?

१२ नहि, अहं शयः मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि=नहीं मैं बल
दोपहर को वहा जाऊँगा ।

१३ अहं गृहं गमिष्यामि स्रूप च भक्षयिष्यामि=मैं घर जाऊँगा
और दाल खाऊँगा ।

इस समय तब पाठकों के पास बहुत कुछ वाक्य बनाने का
मसाला पहुँच चुका है । पूर्ण पाठ में जैसे 'देव' शब्द की सातों
विभक्तियों का रूप दिये थे वैसे इस पाठ में राम शब्द का है—
राम' शब्द के रूप ।

विभक्तियों के नाम	शब्दों के रूप ।	भाषामें अर्थ
१ प्रथमा	राम	रा
२ द्वितीया	रामम्	राम को
३ तृतीया	रामेण	राम द्वारा
४ चतुर्थी	रामाय	राम के लिये
५ पञ्चमी	रामात्	राम से
६ षष्ठी	रामस्य	राम का
७ सप्तमी	रामे	राम में
सम्बोधन	(हे) राम ।	हे राम ।

देव और राम इन दो शब्दों के रूप अगर पाठक अच्छी
प्रकार स्मरण करेंगे तो वे निम्न शब्दों के रूप बना सकेंगे ।

● जिन शब्दों में र अक्षर पा दृष्टा करता है उनके न को ए
हो जाता है । इस विषय का नियम 'स्वर्यं शिञ्चक' के दूसरे भाग
में आजायगा ।

यज्ञदत्तः ईश्वर, गणेश, पुरुष, मनुष्य, अश्व, गवः, पाठ, दीप, उदय, गण, समूह, दिवस, मास, वर्ष । ये शब्द उक्त देव गम के समान ही चलते हैं । इनके स्वर बना कर थोड़े से वाक्य नीचे देते हैं—

१ यज्ञदत्तः गृहं गच्छति=यज्ञदत्त घा ५० जाता है ।

२ ईश्वरः सर्वत्र अस्ति=ईश्वर सब स्थान पर है ।

३ हे ईश्वर ! दयां कुरु=हे ईश्वर ! दया करो ।

४ हे पुत्र ! धर्मं कुरु=हे पुत्र ! धर्म कर ।

५ तत्र अश्वं पश्य=वहाँ घोड़े की देख ।

६ अत्र दीपं पश्य=वहाँ दीप की देख ।

७ सः रात्रौ दीपेन पुस्तकं पठति=वह रात्रि में दीप -
पुस्तक पढ़ता है ।

८ ईश्वरेण धनं दत्तं=ईश्वर ने धन दिया ।

९ मनुष्याय ज्ञानं देहि=मनुष्य के लिए ज्ञान दे ।

१० अथाय जलं देहि=पीने के लिये जल दे ।

११ दीपात् प्रकाशं भवति=दीप से प्रकाश होता है ।

१२ ईश्वरात् ज्ञानं भवति=ईश्वर से ज्ञान होता है ।

१३ सः गणस्य ईश्वर अस्ति=वह गण समूह का मालिक है ।

१४ सः समूहस्य ईश्वर अस्ति=वह समूह का मालिक है ।

१५ पुस्तके ज्ञानं अस्ति=पुस्तक में ज्ञान है ।

१६ मासे दिग्गाः सन्ति=महीने में दिन होते हैं ।

१७ समूहे मनुष्याः सन्ति=समूह में मनुष्य होते हैं ।

१८ आकाशे खगाः सन्ति=आकाश में पक्षी हैं ।

इनके निषेध के वाक्य पाठक स्वीकृत बना सकते हैं। तथा पाठकों को चाहिए वे उक्त शब्दों की अन्य निमित्तियों के रूप बना कर उनसे वाक्य बनवें और अपना अभ्यास करें।

वाक्य

१ तत्र आकाशे खगं पश्य । २ हे देवदत्त ! यज्ञदत्तः
कुत्र गच्छति ? ३. इदानीं यज्ञदत्तः गृहं गच्छति ।
४ श्रीकृष्णस्य उत्तरीयं अत्र आनय । ५ स तत्र व्यर्थं
गच्छति । ६ स पुरुषः रिपुं पुष्पं आनयति ?

पाठ ६

लेखकः=लिखने वाला ।	कृष्णचन्द्रः=कृष्णचन्द्र ।
करोति=बढ़ करता है ।	करोपि=तू करता है ।
करोमि=करता हूँ ।	चित्रं=चित्र, तस्वीर ।
पटं=बख, फणड़ा ।	पुष्पमालां=फूलों की माला ।
लवणं=नमक ।	

रामचन्द्रः पाठशालां गमिष्यति लेखं च
लेखयिष्यति । उपदेशकः=अपदेशक । देवदत्तः=देवदत्तः ।
२ सत्पत्नीः गृहं गमिष्यति मधुरं च फलं भक्षयिष्यति=
सत्यकाम घर जावेगा और मधुर फल खावेगा ।
३ अहं वनं गमिष्यामि पुष्पमालां च करिष्यामि=मैं वन में
जऊँगा और फूलों की माला बनाऊँगा ।
४ हरिश्चन्द्रः कदा उद्यानं गमिष्यति=हरिश्चन्द्र कब बाग को
जावेगा ।

५ स श्वः तत्र गमिष्यति=वह कल वहाँ जावेगा ।

६ देवदत्तः सर्वदा उद्यानं गच्छति पुष्पमालां च करोति किं=
देवदत्तः हमेशा बाग में जाता है और पुष्पमाला
बनाता है क्या ?

७ यदि हरिश्चन्द्रः उद्यानं न गमिष्यति=अगर हरिश्चन्द्र बाग
को न जायगा ।

८ तर्हि देवदत्तः अत्र न गमिष्यति=तब देवदत्त भी न
जायगा ।

शब्द

गच्छ=जा ।

नय=ले जा ।

धन=पैसा ।

आणकं=पान ।

घृहं=घर को ।

फुरु=फा ।

स्त्रीकुरु=श्रीका का ।

एकं=एक ।

घौतं=धुआ दूध ।

आगच्छ=आ ।

आनय=ले जा ।

रुप्यकं=रुपया ।

द्रव्य=धन ।

मलय=खा ।

देहि=दे ।

गृहाण=ले ।

अन्य=दूसरा ।

सूत्र=सूत ।

१ त्वं गृहं गच्छ, घौतं वस्त्रं च आनय=तू पर जा भी
धोया दूध वस्त्र ले जा ।

२, त्वं अत्र आगच्छ मधुरं च फलं मलय=तू यहाँ आ भी
मीठा फल खा ।

३. स वनं गच्छति अन्य पुष्प च आनयति=वह वन में जाता है और दूसरा फूल लाता है ।
४. एकं रूप्यकं देहि=एक रुपया दे ।
५. अत्र आगच्छ च मयुरं दुग्धं गृहाण=यहाँ आ और मीठा दूध ले ।
६. उद्यान गच्छ फल च भक्ष्य-भाग को जा और फल खा ।
७. अन्य वस्त्रं देहि=दूसरा वस्त्र दे ।
८. अन्यं पुस्तकं आनय=दूसरा पुस्तक ले आ ।
९. अपूप देहि स्रवं च स्त्रीमुखे=रूझ दे और दाल ले ।
१०. सुद्रौदन देहि दुग्ध च तत्र नय=खिचड़ी दे और दूध बहा ले जा ।
११. अत्र त्वं आगच्छ स्नादु फल च देहि=यहाँ तू आ और मीठा फल दे ।
१२. आदत्तं भक्षय, यत्र कुत्रापि च गच्छ=चावल खा और जहाँ कहीं भी जा ।

पूर्व को पाठों में 'द्वय तथा राम' इन दो शब्दों की सातों विभक्तियों के एक वचन के रूप दिये हैं । एक वचन यह होता है कि जो एक सख्या का बोधक हो, जैसे — छात्र (एक छात्र) । 'छात्र' शब्द से ही एक छात्र का बोध होता है । बहुत हुए तो उनको 'छात्र' कहेंगे ।

अपरा में एक सख्या के दर्शाते वचन को 'एकवचन' कहते हैं । तथा एक से अधिक सख्या का बोधक जो वचन होता है उसको अनक वचन कहते हैं । जैसे — छात्रा (एकवचन) । छात्रे (अनेक वचन) ।

संस्कृत में तीन वचन हैं। एक संख्या बताने वाला 'एकवचन' होता है। दो संख्या बताने वाला 'द्विवचन' कहलाता है। तथा तीन अथवा तीन से अधिक संख्या बताने वाले को 'बहुवचन' कहते हैं।

द्विवचन तथा बहुवचन के रूप संस्कृत स्वयं शिक्षक के दूसरे भाग में दिये जायेंगे। इस प्रथम भाग में केवल एकवचन के ही रूप दिये जाने हैं। अगर पाठक एकवचन के ही रूप ध्यान में रखेंगे तो वे बहुत से उपयोगी वाक्य बना सकेंगे। इस लिये पाठकों को चा'हिये कि वे इन रूपों की ओर विशेष ध्यान दें। अब कुछ वाक्य देते हैं:—

१. विष्णुमित्रस्य गृहं कुत्र अस्ति ? = विष्णुमित्र का घर कहाँ है।
२. तस्य गृहं तत्र न अस्ति = उसका घर वहाँ नहीं है।
३. ह्रुसेनेन द्रव्यं दत्तम् = ह्रुसेन ने धन दिया।
४. यज्ञदत्तः कदा अत्र आगमिष्यति = यज्ञदत्त कब यहाँ आवेगा।
५. फलस्य बीजं कुत्र अस्ति ? = फल का बीज कहाँ है।
६. पश्य स तत्र न अस्ति = देख वह वहाँ नहीं है।
७. दीपस्य प्रकाशः नास्ति = दीये का उजाला नहीं है।
८. पर्वतस्य शिखरं रमणीयं अस्ति = पर्वत का शिखर रमणीय है।
९. पाठे शब्दाः सन्ति = पाठ के अन्दर शब्द हैं।
१०. शब्दे अक्षराणि सन्ति = शब्द के अन्दर अक्षर हैं।
११. पुस्तकं त्यक्त्वा गच्छ = किताब को छोड़कर जा।
१२. एतस्य पुस्तकं अन्यः कथं नेष्यति = एक की पुस्तक दूसरा कैसे ले जावेगा।
१३. मनुष्यस्य बलं नास्ति = मनुष्य का बल नहीं है।

१४. बालकस्य मुखं मलिनं अस्ति=लडके का मुख मलिन है ।
 १५. तस्य मुखं मलिनं न अस्ति=उसका मुँह मलिन नहीं है ।
 १५. राजपुरुषस्य आज्ञा अस्ति=राजा के मनुष्य की आज्ञा है ।

पाठ ७

पाठकों को उचित है कि वे प्रतिदिन पूर्व पठों में से भी शब्द कण्ठ किया करें तथा वाक्यों की ओर बारंबार ध्यान दिया करें तथा आये हुए शब्दों से अन्यान्य नये नये वाक्य घडते रहें, ऐसा प्रयत्न करने से ही उनकी इस देव भाषा में शीघ्र गति हो जावेगी, अन्यथा नहीं, अब नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये:—

कथय=बतल ।

अस्ति=बतल है ।

अस्मि=ह ।

दया=दया को ।

आगच्छ=आ ।

ब्रूहि=बोल ।

पश्य=देख ।

पाठं=पाठ को ।

दर्शय=बतल ।

असि=तू है ।

सत्यं=सचाई ।

संध्या=संध्या को ।

शृणु=सुन ।

वद=कह ।

पाकं=शक ।

कर्म=काम कार्य ।

वाक्य

१. सत्यं ब्रूहि=सत्य बोल ।

२. उद्यानं पश्य=बाग को देख ।

३. दया कुरु=दया कर ।

४. संध्यां कुरु=संध्या कर ।

५. सत्यकामः तत्र अस्ति=सत्यकाम वहां है ।

६. हरिश्चन्द्र अत्र अस्ति=हरिश्चन्द्र वहां है ।

७. अहं अस्मि=मैं हूं ।

८. त्वं असि=तू है ।

९. सः अस्ति=वह है ।

१०. विष्णुमित्रः कुत्र अस्ति=विष्णुमित्र कहां है ?

११. परप, स तत्र अस्ति=देख वह वहां है ।

१२. नहि नहि, स तत्र नास्ति=नहीं, नहीं, वह वहां नहीं है ।

शब्द

द्वारं=द्वार, दरवाजा ।

रथं=गाड़ी, राथी ।

पातायनं=खिड़की ।

पार्श्वं=बरतन ।

मुखं=मुँह ।

उद्घाटय=खोल ।

पिपेहि=बंद कर ।

कपाटं=दरवाजे के फट्टे, बिचाड़े ।

पिप्=गे ।

नेत्र=आँख ।

१. द्वारं उद्घाटय पार्श्वं च अत्र आनय=दरवाजा खोल और बरतन वहां ले आ ।

२. पातायनं पिपेहि जलं च पिब=खिड़की बंद कर और जल पी ।

३. रथं अत्र आनय फलं च तत्र नय=रथ वहां ले आ और फल वहां ले जा ।

४ पात्रं अत्र न आनय = चरतन यहां न ला ।

५ कथं त्वं अन्यं पात्रं आनयसि = कैसे तू दूसरा घरतन
लाता है ।

६ अहं अन्यं पात्रे न आनयामि = मैं दूसरा घरतन नही
लाता ।

७ रथं आनय धनं च श्वः प्रभाते गच्छ = रथ ले आ और धन
को कल मधेरे जा ।

८ जलं देहि मोदकं दुग्धं च स्त्री गुरु = जल दे और लड्डू
और दूध ले ।

९ त्वं कुत्र असि = तू कहाँ है ।

१० अहं अत्र अस्मि = मैं यहां हूँ ।

११ धनं देहि स्वादु दुग्धं च अत्र आनय = धन दे और मोठा
दूध यहां ले आ ।

१२ कपाटं उद्घाटय पुष्पमालां च तत्र नय = किवाड़ खोल
और फूलों की माला वहां लेजा ।

१३ त्वं फलं भक्षयसि किं = तू फल खाता है क्या ?

१४ नहि, अहं मोदकं आम्नं च भक्षयामि = नही मैं लड्डू
और आम खाता हूँ ।

१५ यदि त्वं रथ आनेष्यसि तर्हि अहं हरिद्वारं गमिष्यामि
अगर तू रथ ले आवगा तो मैं
हरिद्वार को जाऊंगा ।

अब 'रथ' और 'मार्ग' शब्द के सातों विभक्तियों के एक-एक-एक के रूप देते हैं—

रथ शब्द के रूप

१. रथः=रथ ।
२. रथं=रथ को ।
३. रथेन=रथ ने ।
४. रथाय=रथ के लिये ।
५. रथात्=रथ से ।
६. रथस्य=रथ का ।
७. रथे=रथ में ।

(हे) रथ=हे रथ ।

मार्ग शब्द के रूप

- मार्गः=मार्ग ।
- मार्गं=मार्ग को ।
- मार्गेण=मार्ग ने ।
- मार्गाय=मार्ग के लिये ।
- मार्गात्=मार्ग से ।
- मार्गस्य=मार्ग का ।
- मार्गे=मार्ग में ।

(हे) मार्ग=हे मार्ग ।

शब्द

इसी प्रकार राम, बालक, मृग सर्प, सूर्य, आनन्द, आकाश कुमार, लेख, दण्ड, इत्यादि अकारान्त पुलिगी शब्द चलते हैं । जिन शब्दों के अंत में अकार का उच्चारण होता है इनको अकारान्त शब्द कहते हैं । अब कुछ अकारान्त शब्द देते हैं जिनके रूप 'देव' 'राम' शब्द के समान ही होते हैं ।

इन्द्रः=राजा, मुख्य ।

मामः=गांव ।

मृगः=राजा ।

मूपकः=चूड़ा ।

रसः=रस ।

वासः=रहना, कपड़ा ।

समुद्रः=समुद्र सागर ।

स्वरः=वाद्य ।

अभङ्कः=लड़का ।

चरणः=पांख ।

मसादः=मेहरबानी ।

रथकः=रहने वाला ।

वस्तः=लड़का ।

वृक्षः=इरस्त ।

सर्पः=सांप ।

आचार्यः=गुरु ।

चोरः=चोर ।

जनः=लोक ।

पुत्रः=लड़का ।

वेदः=वेद, ज्ञान ।

दण्डः=सोटी ।

मनुष्यः=मनुष्य ।

वाक्य

१. अर्मकः रथं पश्यति=लड़का गाड़ी देखता है ।

२. नृपः चोरं ताडयति=राजा चोर को पीटता है ।

३. स रथेन अन्य मामं शीघ्रं गच्छति=वह रथ से दूसरे
माम को जल्दी जाता है ।

४. वृक्षात् फलं पतति=दरखत से फल गिरता है ।

५. समुद्रात् जलं आनयति=समुद्र से पानी लाता है ।

६. आचार्यः धर्मस्य मार्गं शिष्याय दर्शयति=गुरु धर्म का मार्ग
शिष्य के लिये दर्शाता है ।

७. तस्य वासः तत्र भविष्यति=वस्ती रहना वहीं होगा ।

८. चोरः धनं चोरयति=चोर धन चुराता है ।

९. नृपः जनं रंजयति=राजा लोगों का रंजन (समाधान)
करता है ।

१०. इन्द्रः स्वर्गस्य राजा अस्ति=इन्द्र स्वर्ग का राजा है ।

अब कुछ वाक्य नीचे देते हैं जो पाठक स्वयं समझ सकेंगे ।

१. पुत्रः रसं पिबति । २. वत्सः रथं न पश्यति । ३. सः
मार्गेण न गच्छति । ४. किं स रथेन मामं न गमिष्यति । ५. यज्ञ-

॥ शीघ्र=जलदी ।

† शिष्य=शागिद ।

‡ पिबति=पीता है ।

मित्रः कदा तत्र गमिष्यति । ६ रथे नृपः छः उपविष्टः । ७ तेन
लेखः † लिखितः । ८ आचार्यः कदा आगमिष्यति । ९ मनुष्यः
दण्डेन मूषकं § ताडयति । १० मार्गे तस्य पुस्तकं ‡ पतितम् ॥
११ यथा त्वं गच्छसि तथा रामकृष्णः अपि गच्छति । १२ यथा
त्वं वदसि तथा सः न वदति । १३ त्वं किमर्थं फलं न भक्षयसि ।
१४ स इदानीं नैव ग्रामं गमिष्यति । १५ यथा नृपः अस्ति तथा
एव विप्रः अस्ति । १६ यदा आचार्यः तत्र गमिष्यति तदा एव
त्वं तत्र गच्छ । १७ तस्य पुत्रः पात्रेण जलं पिबति । १८ यः
पात्रेण जलं पिबति स तस्य पुत्रः नास्ति । १९ तर्हि कः सः । २०
स आचार्यस्य पुत्रः अस्ति ।

पाठ ८

अध्याय=सुनने के लिये ।	दर्शनाय=देखने के लिये ।
गमनाय=जाने के लिये ।	शयनाय=सोने के लिये ।
क्रोडनाय=देखने के लिये ।	पठति=वह पढ़ता है ।
पठसि=तू पढ़ता है ।	पठामि=पढ़ता हूँ ।
पठ=पढ़ो ।	ज्ञानाय=ज्ञान के लिये ।
पानाय=पीने के लिये ।	भोजनाय=भोजन के लिये ।
मृशणाय=खाने के लिये ।	पठनाय=पढ़ने के लिये ।
पठिष्यति=इह पढ़ेगा ।	पठिष्यसि=तू पढ़ेगा ।
पठिष्यामि=पढ़ूँगा ।	लिख=लिखो ।

• उपविष्टः=बैठा है ।

† लिखितः=लिखा है ।

§ ताडयति=पीटता है ।

‡ पतितं=गिरा है ।

अकारान्त पुलिग शब्द

लेखः=लेख ।

पाठः=पाठ ।

दैत्यः=राक्षस ।

पान्थः=मुसाफिर ।

अर्थः=पैसा, धन ।

धरः=हाथ ।

कणः=कान ।

चन्द्रः=चन्द्र ।

विमः=प्राद्वण ।

सूर्यः=सूरज ।

दीपः=दीप, दिया ।

जनः=मनुष्य ।

समाजः=समाज ।

मृगः=हिरण ।

बानरः=बंदर ।

अस्तावलाः=सूरज जहाँ

हूबरा है वह पश्चिम दिशा
का पहाड़ ।

दिवसः=दिन ।

यज्ञः=प्रयत्न, पुरुषार्थ ।

स्वर्गः=स्वर्ग ।

पादः=पाँव ।

कुमारः=लड़का ।

देवः=राजा, सिद्धान्त ।

पाठकों को चाहिये कि वे इनक सारों विभक्तियों के रूप
है, राम शब्दों के समान बनावें ।

१. स्नानाय जल देहि=स्नान के लिए जल दे ।

२. पठनाय पुस्तक अस्ति=पढ़ने के लिये पुस्तक है ।

३. भोजनाय अन्न भविष्यति किं ?=भोजन के लिये अन्न
होगा क्या ?

४. भक्षणाय फल देहि=खाने के लिये फल दे ।

५. तत्र सूर्य पश्य=वहाँ सूर्य को देख ।

६. विष्णुमित्र कुमारं अत्र किमर्थं आनयति=विष्णुमित्र
लड़के को यहाँ किस लिये लाता है ।

७. हरिश्चन्द्रः अग्निं तत्र नेष्यति किं=हरिश्चन्द्र आग को वहाँ
वहाँ ले जायगा क्या ?

८. पठनाय दीपं पुस्तकं च अत्र आनय=पढ़ने के लिये दीप
और पुस्तक यहाँ ले आ ।

९. प्रातः स्नानाय गच्छामि=सवेरे स्नान के लिये जाता हूँ ।

१०. पानाय मधुरंदुग्धं देहि=पीने के लिये मोठा दूध दे ।

११. अत्र स्वादुदुग्धं अस्ति=यहाँ मोठा दूध है ।

१२. स्वादु दुग्धं अत्र नास्ति=क्या दूध मोठा यहाँ नहीं है ?

१३. स्नानाय जलं नय=स्नान के लिये जल ले जा ।

शब्द

विमर्श=तुलना के लिये ।

पश्चात्=पीछे से ।

शीघ्र=जल्दी ।

गत्वा=जाके ।

भक्षयित्वा=खाके ।

किं अर्थ=किस लिये ।

सत्वर=शीघ्र, जल्दी ।

परन्तु=परन्तु, लेकिन ।

पठित्वा=पढ़ के ।

दृष्ट्वा=देख कर ।

अधुना=अब ।

पूर्वं=पहिले ।

कृत्वा=करके ।

दृष्ट्वा=देके ।

विचार्य=सोच कर ।

इदानीं=अब ।

यद्य=हि ।

स्नात्वा=स्नान करके ।

नीत्वा=लेके ।

विलोक्य=देख कर ।

वाक्य

१. तत्र जलं पीरवा शीघ्रं अत्र आगच्छ=वहाँ जल पीकर यहाँ आ ।

२. स्नानाय जलं दृष्ट्वा सत्वरं स्नानं गच्छ=स्नान के लिये पानी
देकर शीघ्र जाग को आ ।

३. एवं इदानीं पठसि परन्तु अहं न पठामि=तू अब पढ़ता है परन्तु मैं नहीं पढ़ता

४. विष्णुमित्रः धर्मं कृत्वा स्नानं करिष्यति=विष्णुमित्र . काम करके स्नान करेगा ।

५. त्वं पूर्वं गृहं गत्वा पश्चात् स्नानं कुरु=तू पहिले घर जाकर पीछे से स्नान कर ।

६. तत्र स्नानाय जलं अस्ति नि=यहां स्नान के लिये जल है क्या ?

७. तत्र स्नानाय जलं नास्ति परन्तु अत्र अस्ति=यहां स्नान के जल नहीं है. परन्तु यहां है ।

८. देवदत्तः अन्नं भक्षयित्वा पाठशाळां गमिष्यति=देवदत्त भोजन खाकर पाठशाळा को जायगा ।

९. त्वं पठित्वा शीघ्रं आगच्छ ममीपात्र च देहि=तू पढ़ कर जल्दी आ और दवात दे ।

१०. मोदकं भक्षयिष्या त्वं कुत्र गमिष्यसि=जड़ूहू खाकर तू कहां जायगा ।

११. मोदकं शीघ्रं भक्षय पश्चाद् जलं पिब=जड़ूहू जल्दी खा और पीछे से पानी पी ।

१२. प्रातः वनं गत्वा सायं आगमिष्यामि=सवेरे वन को जाकर शाम को आऊंगा ।

अकागन्त पुलिग शब्द

अपराधः=कसूर ।

उपायः=उपाय ।

कुमारः=लड़का ।

उत्तरः=जुवाब ।

पर्वतः=पहाड़ ।

विनयः=नम्रता ।

कामः=इच्छा, कामवासना ।

गुणः=गुण ।

भृत्यः=नौकर ।

विहगः=पत्नी ।

मोहः=संराव, मूल ।

धूमः=धूँयों ! Smoke

संमानः=मान, आदर ।

बुधः=ज्ञानी ।

संगः=सोवत, साथ ।

मनोरंथः=इच्छा ।

समागमः=सहवास, मुलाकात ।

लोमः=लालच ।

कासारः=तालाव ।

योधः=लड़ने वाला, शूर ।

सैनिकः=फौजी आदमी ।

इस समय शब्दों के रूप देव-राम के समान बनते हैं । पाठकों की उचित है कि, वे इनके सानों विमर्शियों के एक वचन के रूप बनायें । अब इनके रूप बनाकर कुछ वाक्य देते हैं—

१. तेन अपराधः कृतः=उसने अपराध किया ।

२. स पर्वतस्य उपरि गतः=वह पहाड़ के ऊपर गया ।

३. म बुधः सायं अत्र आगमिष्यति=वह ज्ञानी शाम को यहाँ आवेगा ।

४. एकः विहगः वृत्ते अस्ति तं पर्य=एक पक्षी दरखत-पर है उसकी देख ।

५. शृत्यः तत्र गतः=नीकर वहाँ गया ।

६. मम पुमागः अधुना पुस्तकं पठति=मेरा लड़का अब किताब पढ़ता है ।

७. योधः युद्धं करोति=लड़ने वाला लड़ाई करता है ।

८. सैनिकः तत्र न अस्ति=फौजी आदमी वहाँ नहीं है ।

९. स उदरेण पीडितः अस्ति=वह सुगार से पीड़ित हुआ है ।

१०. गुणः संमानाय भवति=गुण आदर के लिये होता है ।

११. कुमारस्य पुस्तकं कुत्र अस्ति, दशाय=लड़के की किताब कहाँ है, बता ।

१२. युधस्य सभागमेन तेन ज्ञानं प्राप्तम्=ज्ञानी के सहवास से उसने ज्ञान प्राप्त किया !

अब नीचे ऐसे वाक्य देते हैं जो कि भाषान्तर बिना ही पाठक समझ जायेंगे:—

(१) त्वं इदानीं किं तत् पुस्तकं पठसि ? (२) तत्र खानाय शुद्धं जलं अस्ति । (३) तव भृत्यः कुत्र गतः ? (४) मम भृत्यः आपणो गतः । (५) किमर्थं स आपणो गतः ? (६) स फलं अन्नं च आप्नेष्यति । (७) अहं फलं अन्नं च भक्षयितुं इच्छामि । (८) स भीदकं भक्षयित्वा पाठशालां पठितुं गतः । (९) स दिने दिने प्रातः ज्ञानं कृत्वा वनं गच्छति । (१०) स तत्र किं करोति ? (११) वनं गत्वा संघ्यां करोति ? (१२) नृपः अत्र आगतः (१३) युधः इदानीं एव तत्र गतः । (१४) नस्य मनोरथः उत्तमः अस्ति । (१५) स कासारं स्नानाय गच्छति । (१६) तत्र कासारस्य जलं स्वादु अस्ति । (१७) तत्र फूपस्य जलं स्वादु नास्ति ।

अब निम्नलिखित भाषा के वाक्यों का संस्कृत में भाषान्तर कीजिये:—

(१) ज्ञान के लिये जल दे । (२) खाने के लिये अन्न दे । (३) ज्ञान के लिये पानी दे । (४) हरिश्चन्द्र कहां जाता है ? (५) हरिश्चन्द्र गांव को जाता है । (६) पीने के लिये भीठा दूध दो । (७) तू अन्न पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता । (८) वहां ज्ञान के लिये जल है क्या ? (९) उसका मनोरथ उत्तम है । (१०) वह खाना के पास ज्ञान के लिये जाता है । (११) तेरे फूप का जल भीठा है ।

पाठ ६

शिष्यः=शिष्य, पढ़ने वाला ।	कृपा=दया, मेहरबानी ।
दासः=नौकर ।	स्वसा=बहिन ।
भानुः=सूर्य ।	माता=माँ ।
गुरुः=पढ़ाने वाला ।	पिता=पिता, बाप ।
अधु=माई ।	भतिनी=बहिन ।
पुत्रः=पुत्र, लड़का ।	सुध्यं=तेरे लिये ।
तव=तेरा ।	मह्य=मेरे लिये ।
मम=मेरा ।	तस्मै=उसके लिये ।
तस्य=उसका ।	अस्मै=हमके लिये ।

वाक्य

१. तव गुरुः कुत्र अस्ति=तेरा गुरु कहाँ है ?
२. इदानीं मम गुरुः तत्र अस्ति=मैं मेरा गुरु कहाँ है ।
३. मम माता अथ सार्यं वनं गमिष्यति=मेरी माता आज शाम को वन की ओर जावेगी ।
४. अधुना मह्यं पठनाय पुस्तकं देहि=मैं तुम्हें पढ़ने के लिए पुस्तक दे ।
५. तस्य गृहं कुत्र अस्ति=उसका घर कहाँ है ?
६. तव दासः माम् गमिष्यति किं ?=तेरा नौकर मेरे को लायगा क्या ?
७. तव पुत्रः कदा वनं गमिष्यति=तेरा पुत्र कब वन की ओर जावेगा ?
८. मम अग्न्युः इदानीं पुस्तकं पठति=मेरी माई अब पुस्तक पढ़ना है ।
९. मम माता पुत्रमात्रां करोति=मेरी माता पुत्रमात्रा करती है ।
१०. तव पिता तव च माता=तेरा पिता और तेरी माता ।

११. पानाय मद्यं जलं देहि = पीने के लिये, मुझे पानी दे ।
 १२. स्नात्वा सायं आगमिष्यति = वह स्नान करके शाम को आवेगा ।
 १३. नहि नहि स ग्राम गत्वा रात्रौ आगमिष्यति = नहीं नहीं वह गांव को जाकर रात्रि को आवेगा ।

शब्द

- | | |
|----------------------------------|-------------------------------------|
| इच्छति = वह चाहता है । | लिखति = वह लिखता है । |
| इच्छसि = तू चाहता है । | लिखसि = तू लिखता है । |
| इच्छामि = चाहता हूँ । | लिखामि = लिखता हूँ । |
| पत्रं = पत्र । | कूर्पं = कूर्प पर । |
| शुद्धं = शुद्ध, पाक. साफ़ । | औषधं = औषध, दवा । |
| मार्गं = मार्ग, रास्ता । | पत्तरीयं = दुपट्टा । |
| कर्तुं = करने के लिये । | लेखितुं = लिखने के लिये । |
| भोक्तुं = खाने के लिये । | स्वीकर्तुं = स्वीकार करने के लिये । |
| दातुं = देने के लिये । | |
| भक्षयितुं = भक्षण करने के लिये । | गन्तुं = जाने के लिये । |
| पातुं = पीने के लिये । | आगन्तुं = आने के लिये । |
| पठितुं = पढ़ने के लिये । | नेतुं = ले जाने के लिये । |
| | आनेतुं = लाने के लिये । |

वाक्य

१. रामचन्द्रः पुस्तकं पठितुं इच्छति = रामचन्द्र पुस्तक पढ़ने की इच्छा करता है ।
२. हरिश्चन्द्रः शुद्धं जलं पातुं इच्छति = हरिश्चन्द्र शुद्ध जल पीने की इच्छा करता है ।
३. अहं कूर्पं गत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि = मैं कूर्प पर जाकर स्नान करना चाहता हूँ ।

४. त्वं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यसि किं=तू कल प्रातः स्नान करेगा क्या ?
५. नहि अहं श्वः प्रातः स्नानं कर्तुं न इच्छामि=नहीं, मैं कल सवेरे स्नान करना नहीं चाहता ।
६. यदि प्रातः न करिष्यसि तर्हि कदा करिष्यसि=अगर सवेरे नहीं करेगा तो कब करेगा ।
७. सायं करिष्यामि=शाम को करूँगा ।
८. त्वं इदानीं पठितुं इच्छसि किं ?=तू अब पढ़ना चाहता है क्या ?
९. नहि इदानीं अहं फलं भक्षयितु इच्छामि=नहीं, अब मैं फल खाना चाहता हूँ ।

अकारान्त पुलिग शब्द

अलंकारः=जेवर ।	दण्डः=सोटी ।
छात्रः=शिष्य, शगिर्द ।	माद्यणः=पेटित ।
व्याधः=शिकारी ।	स्तेनः=चोर ।
स्नेही=दोस्त ।	वर्णः=रङ्ग ।
कपीशः=गान्ध ।	घातकः=एक पत्नी ।
तरंगः=नहर (पानी) ।	द्विरेफः=धमर ।
नयनः=आँख ।	नेत्रः=आँख ।
प्रवाहः=पेग ।	शकः=हट्टः ।
आतपः=सूर्य की धूप ।	अद्यमः=अयोग ।
पुरुषार्थः=अयल ।	अपदेशः=अपदेश ।
ओष्ठः=होठ ।	बुधधुरः=बुद्धा ।

इन सप्त शब्दों के रूप गम, देव शब्दों के समान ही होते हैं । पाठकों को चाहिये कि ये इनके मातृ विभक्तियों के रूप बनायें, और इनका वाक्यों में प्रयोग करें ।

२. उत्तिष्ठ । शौच कृत्वा शीघ्रं स्नानं कुरु=उठ शौच करके जल्दी स्नान कर ।
३. अहं शौचं कृत्वा मुखप्रक्षालनं करिष्यामि=मैं शौच करके मुँह धोऊँगा ।
४. पश्चात् स्नानं कृत्वा सभ्यां करिष्यसि किं=पीछे स्नान करके सभ्या करेगा क्या ?
५. नहि, अहं पश्चद् व्यायामं कृत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि=नहीं, मैं पीछे से व्यायाम करके स्नान करना चाहता हूँ ।
६. तथा कुरु=वैसा कर ।
७. स्नानं सभ्या च कृत्वा पुस्तकं पठिष्यामि=स्नान और सभ्या करके पुस्तक पढ़ूँगा ।
८. ओ मित्र । किं एव प्रातः अग्निहोत्रं न करोषि=हे मित्र । क्या तू तबेरे अग्निहोत्र नहीं करता है ?
९. कुतः न करोमि, सर्वैव करोमि एव=क्यों नहीं करता ? हमेशा करता ही हूँ ।
१०. पश्चात् सभ्याहे किं किं करिष्यसि=पीछे दोपहर को क्या करेगा ।
११. भोजनं कृत्वा पठनाय पाठशालां गच्छामि=भोजन करके पढ़ने के लिये पाठशाला को जाता हूँ ।
१२. अहं सर्वदा पुस्तकं पठितुं इच्छामि=मैं हमेशा पुस्तक पढ़ना चाहता हूँ ।

शब्द

भ्रमणाय=घूमने के लिये । दानाय=देने के लिये ।

किमर्थं=किस के लिये । तिष्ठति=ठहरता है, बैठता है ।

११. पीतं पुष्पं न आनय=पीला फूल न ला ।

१२. अत्र शुद्धं जलं अस्ति=यहां शुद्ध जल है ।

१३. किमर्थं स्नानं इदानीं एव न करोषि=क्यों स्नान अभी नहीं करता ।

१४. इदानीं एव स्नानं कर्तुं न इच्छामि=अभी स्नान करने की इच्छा नहीं ।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

अश्वः=भौल, जूषा ।

अनर्थः=छष्ट, दुःख ।

ग्रन्थः=पुस्तक ।

प्रभवः=उत्पत्ति ।

परिवः=राजा ।

विम्बः=एक पर्वत ।

शृगालः=भीड़ ।

कपोतः=कबूतर ।

मेघः=बादल ।

सिंहः=शेर, शेर ।

आश्रमः=माश्रम, रहने का स्थान कोपः=क्रोध, गुस्सा ।

तापः=गरमी ।

दुर्गः=किला ।

वरः=वर, इष्ट ।

वायसः=सीढ़ी ।

शुक्रः=बोता ।

देहः=शरीर, जिह्म ।

नगरः=पौर ।

पाचकः=मांगने वाला ।

जनकः=पिता ।

सैनिकः=सिपाही ।

इन शब्दों के रूप भी देव-राम शब्द के समान ही होते हैं । पाठक इनके रूप सब विभक्तियों में बना सकते हैं ।

वाक्य

* पाठक इन वाक्यों को पढ़ते ही समझ जायेंगे, इसलिये इनके अर्थ नहीं दिये हैं ।

१ तेन, युधेन ग्रन्थः लिखितः । २ पर्यन्ते सिंहः अस्ति ३ नगरे अथ चरः आगतः । ४ अः स सैनिकः दुर्गं गमिष्यति ।

५ याचकः मार्गे तिष्ठति । ६ तस्य जनकः गृहे तिष्ठति । ७ तस्य पुत्रः पाठशालां गतः । ८ आकाशे मेघः अस्ति । ९ पार्थिवः युद्धं करोति । १० नृपस्य प्रसादेन तेन धनं प्राप्तम् । ११ तेन मित्रस्य गृहान् पुस्तकं आनीतम् । १२ स धनस्य मार्गं पश्यति । १३ आकाशे सूर्यः अस्ति । १४ घने वृक्षः अस्ति । १५ वृक्षे रजः अस्ति ।

परीक्षा

पाठकों को उचित है कि वे इन प्रश्नों के ठीक उत्तर देकर ही आगे बढ़ें । अगर इनका ठीक उत्तर वे न दे सकें तो यहिले इस पाठ दुभाग पढ़ें :—

(१) निम्न शब्दों के सार्थ विभक्तियों के एकवचन के रूप लिखिये—

प्राप्त । चरण । देव । नृप । मार्ग । रक्त । राम । वृक्ष । दुर्ग । ग्रन्थ । आश्रम । अनर्थ ।

(१) निम्नलिखित शब्दों का पञ्चमी तथा पष्ठी का एकवचन लिखिये । इस प्रश्न का उत्तर अतिशीघ्र लिखना चाहिये ।

नाग । पर्वत । वेद । दिन । कपोत । कृष्ण । सिंह । लोभ । विनय । धर्मिक । छल । समागम ।

(२) निम्न वाक्यों का अर्थ भीजिये :—

(१) एवं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यासि किम् । (२) एवं इदानीं पठितुं इच्छसि किम् । (३) अहं कासारं गत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि । (४) एवं तं रयम् अत्र आनय । (५) अन्य पुस्तकं आनय । (६) मुद्गोदनं याचकाय देहि । याचकः तत्र मार्गे तिष्ठति । तं पश्य । (७) अत्र स्य आगच्छ । शीघ्रं आगच्छ । (८) स सायं तत्र पुस्तकं नेष्यति । (९) कदा स आगमिष्यति । (१०) स श्वः पशान् आगमिष्यति ।

(४) भाषा के निम्न वाक्यों के सस्कृत वाक्य बनाइये—

(१) वह दुपट्टा ले जाता है। (२) मैं कल दोपहर को जाऊँगा। (३) लड्डू जलदी खा और पीछे से पानी पी ले। (४) देवदत्त भोजन खाकर पाठशाला को जायगा। (५) तू अब पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता। (६) बाग को जा और फल खा (७) तू घर जा और धोया हुआ वस्त्र ले आ।

पाठ ११

अब इस पाठ हो चुके हैं, इतने थोड़े समय में पाठक बहुत से वाक्य बनाने में समर्थ हो रहे होंगे, वे अगर धैर्य से और और बाध्य चढ़ते जावेंगे, तो उनकी सस्कृत में बात चीत करने की शक्ति स्वयं बढ़ती जावेगी, सस्कृत भाषा की वाक्य रचना अत्युत्तम है, अपेक्षी तथा उर्दू के समान निश्चित स्थान पर शब्द रखने की आवश्यकता नहीं, देखिये —

अह मोदक भक्षयामि
अह भक्षयामि मोदक
मोदक भक्षयामि अह
मोदक अह भक्षयामि
भक्षयामि अह मोदक
भक्षयामि मोदक अह

ये सब वाक्य सृष्ट हैं और
इन सब का अर्थ
‘मैं लड्डू खाता हूँ’
इतना ही है इसलिये पाठकों
को चिन्त है कि वे प्रत्येक
प्रत्येक शब्दों को यथा सभ्य
उपयोग में लाकर नये नये
वाक्य बनायें।

अब इस पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, पाठक आज के दिन कोई नया शब्द याद न करें और पिछले पाठों में से कोई वाक्य या शब्द भूला हो तो उसको ठीक ठीक स्मरण करें।

अब इस पाठ में पाठकों को ऐसे वाक्य दिये जावेंगे कि जिनके शब्दों का प्रयोग पहिले आ चुका है. यहाँ एक बात पाठकों को स्मरण रखनी चाहिए कि मनुष्यों के नाम वाक्य में आने से कोई नई रचना संस्कृत में नहीं होती, देखिये :—

रामचन्द्रः वनं गच्छति=रामचन्द्र वन को जाता है ।

विक्रियमः वनं गच्छति=विक्रियम वन को जाता है ।

महम्मदः वनं गच्छति=महम्मद (खान) वन को जाता है ।

अर्थात् बोलने के समय पाठक जिस किसी का नाम वाक्य में रखकर अपना आशय प्रकट कर सकते हैं ।

संस्कृत भाषा में दूसरी आसानी (सुभीता) यह है, कि लिंग के अनुसार शब्दों की विभक्तियाँ नहीं बदलती जिस अवस्था में बदलती हैं उस अवस्था का ध्यान हम आगे करेंगे, इस समय पाठक ऐसा समझें कि नहीं बदलती, देखिये :—

तस्य लेखनी=उसकी लेखनी ।

तस्य पुस्तकं=उसकी किताब ।

तस्य फलं=उसका फल ।

तस्य पुत्रः=उसका लड़का ।

पाठक यहां देखेंगे कि भाषा में “उसकी उसका” शब्दों में जिस कारण “का, का” यह भेद हुआ है वैसे कोई भेद संस्कृत में नहीं है, इस कारण संस्कृत के वाक्य बनाना भाषा के वाक्य बनाने से सुगम अर्थात् आसान है ।

वाक्य

१. त्वं अथ गृहं गन्तुं किमर्थं इच्छसि=तु आज घर जाने को क्यों इच्छा करता है ?

२. अथ मम पिता गृहं आगमिष्यति=आज मेरा पिता घर आवेगा ।

३. स कदा आगमिष्यति त्वं जानासि किं=वह कब आवेगा तू जानता है क्या ?
४. नहि अहं न जानामि परन्तु स रात्रौ आगमिष्यति=नहीं, मैं नहीं जानता, परन्तु वह रात्रि में आवेगा।
५. जानसन इदानीं किं करोति=जानसन (साहिव) अब क्या करता है ?
६. स पत्रं लिखति=वह पत्र लिखता है ?
७. दिवानचन्द्रः धौवं वस्त्रं नयति=दिवानचन्द्र धोया हुआ कपड़ा लाता है।
८. रामकृष्णः इदानीं दीपं कुत्र नयति=रामकृष्ण अब दीवा कहाँ ले जाता है ?
९. स पठनाय दीपं पुस्तकं च नयति=वह पढ़ने के लिये दीवा और पुस्तक ले जाता है।
१०. कस्य पुस्तक अस्ति=किसकी पुस्तक है ?
११. मम पुस्तक अस्ति=मेरी पुस्तक है।
१२. तव वस्त्रं नास्ति किं=तेरा कपड़ा नहीं है क्या ?
१३. सहस्रं अत्र आगच्छ पीत पुष्पं च पश्य=शीघ्र यहाँ आ और पीला फूल देख।

पूर्व-पाठों में आकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताया है। अब इकारान्त पुल्लिङ्गी शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताते हैं:—

इकारान्त, पुल्लिङ्ग 'रभिः' शब्दः

१ प्रथमा	रवि	रवि (सूर्य)
२ द्वितीया	रवि—म्	रवि=को।
३ तृतीया	रवि—या	रवि=ने

४. चतुर्थी	रवये	रवि के लिये ।
५. पञ्चमी	रवेः	रवि से ।
६. षष्ठी	रवेः	रवि का
७. सप्तमी	रवी	रवि में
संयोजन	(हे) रवे	हे रवे,

इस प्रकार अग्नि, अरि, अहि, उदधि, कवि, इत्यादि इकारान्त पुलिगी शब्द भी इसी प्रकार से चलते हैं ।

अग्निः=आग ।	अहिः=साँप ।
अरिः=शत्रु ।	उदधिः=समुद्र ।
कविः=काव्य रचयिता ।	बृहस्पतिः=गुरु ।
पतत्रिः=पक्षी ।	कपिः=बन्दर ।
शनिः=शनि तारा ।	नृपतिः=राजा ।
पाणिनिः=व्याकरणाचार्य ।	गिरि =पहाड़ ।

एक रविशब्द के अनुकूल ही इनके एक वचन के रूप होते हैं ।

वाक्य

१. रविः आकाशे आगतः=सूर्य आकाश में आगया ।
२. बालकः रविं पश्यति=बालका सूर्य को देखता है ।
३. रविणा प्रकाशः कृतः=सूर्य ने रोशनी की ।
४. रवये नमः कुरु=सूर्य के लिये नमस्कार कर ।
५. रवेः प्रकाशः भवति=सूर्य से प्रकाश होता है ।
६. रवेः प्रकाशं पश्य=सूर्य का प्रकाश देख ।
७. रवी प्रकाशं अस्ति=सूर्य में प्रकाश है ।
- १ तत्र अग्निः अस्ति, २ नरेन्द्रः अग्निं अत्र आनयति, ३

विष्णुमिश्रः अग्निना जलं वृष्ये करोति । ४ नृपतिः अरिणा सह
युद्धं करोति । ५ कवेः काव्यं पठामि । ६ तं हिमालयं पश्य । ७
हिमनिरेः गङ्गा प्रभवति । ८ कविः वृत्ते अस्ति, तं पश्य, कथं
स मुरं करोति । ९ तस्य मुरं वृष्य अस्ति । १० वृद्धरतिः आकाशे
रचितः । ११ हिमनिगे मेघः आगतः १२ उदधी जलं अस्ति । १३
तत्र अहिः अस्ति, अतः तत्र न गच्छ । १४ पाणिनिना व्याकरणं
रचितम् । १५ पतत्रिः आकाशे गच्छति । १६ पश्य कथं स पतत्रः
आकाशे गच्छति । १७ यथा पतत्रिः आकाशे गच्छति, न तथा
कविः गच्छति ।

• निम्न भाषा वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये :—

१ तू अब क्या पढ़ता है ? २ तेरा नौकर कहाँ गया ? ३ मैं
बाजार में जाता हूँ । ४ मैं फल और अन्न खाना चाहता हूँ । ५
राजा आ गया । ६ जानी अभी बर्ही गया । ७ मेरे पुत्र का पानी
मीठा है । ८ वह बाग में जाकर सन्ध्या करता है । ९ मोदक खा
और पानी पी । १० देख ? लड़का कैसा बीडता है ।

पाठ ११

धावन=दौड़ना ।	स्वीकरण=स्वीकार करना ।
धावति=वह दौड़ता है ।	धावति=तू दौड़ता है ।
धावामि=दौड़ता हूँ ।	इच्छया=इच्छा से ।

१ वृष्यं=गरम । २ सह=साथ । ३ काव्य=कवितामय
पुस्तक । ४ हिमनिरे=हिमालय । ५ प्रभवति=उत्पन्न होती है ।
६ वृष्यं=काला ७ रचितः=उद्य हृत्वा । ८ व्याकरणं=व्याकरण
(ग्रामर) । ९ रचितं=रचा ।

अंतरिक्षे = आकाश में । लगरे = शहर में ।
 शीतं = ठण्डा । रत्नं = रत्न ।
 भ्रमणं = घूमना । पश्यति = देखता है ।
 पश्यसि = देखता है । पश्यामि = देखता हूँ ।
 धूम्रयानेन = रेल गाड़ी से । पिपासा = प्यास ।
 शुमुता = मूख । वण्यं = गरम ।

वाक्य

१. स इच्छया स्वीकरोष्यति = वह इच्छा से स्वीकार करेगा ।
२. प्रकाशदेवः दद्याने व्यर्थं प्रावति = प्रकाशदेव याग में व्यर्थ दीदता है ।
३. एवं इदानीं किमर्थं धावसि = तू अब क्यों दौड़ता है ?
४. अहं अधुना धावामि = मैं अब दौड़ता हूँ ।
५. अंतरिक्षे सूर्यं पश्यति किं = आकाश में सूर्य को देखना है क्या ?
६. रात्रौ सूर्यं न पश्यामि = रात्रि में सूर्य को नहीं देखता हूँ ।
७. विश्वामित्रः भ्रमणाय सायं गमिष्यति किं = विश्वामित्र घूमने के लिये शाम को जायगा क्या ?
८. स तत्र स्थातुं इच्छति = वह वहाँ ठहरना चाहता है ।
९. जालंधरनगरे मम गृहं अस्ति = जालंधर शहर में मेरा घर है ।
१०. ओ मित्र ! तव गृहं कुत्र अस्ति = हे मित्र ! तेरा घर कहाँ है ?
११. मम गृहं पेशावरनगरे अस्ति = मेरा घर पेशावर शहर में है ।
१२. धूम्रयानेन एवं तत्र गमिष्यसि किं = रेल गाड़ी से वहाँ जायगा क्या ।
१३. अथ किं, धूम्रयानेन अहं तत्र परभ्यः गमिष्यामि = और क्या ? रेलगाड़ी से मैं वहाँ परसों जाऊँगा ।

१४. इदानीं पिपासा अस्ति मह्यं शीतं जलं देहि=अब प्यास है,
मुझे ठण्डा जल दे ।

१५. अधुना युमुक्ता न अस्ति, अन्नं न देहि=अब भूख नहीं है,
अन्न न दे ।

शब्द

कन्या=पुत्री, लड़की ।

कुराः=बुद्धता ।

मित्रं=मित्र, दोस्त ।

पितृव्यः=बच्चा ।

पिबसि=तू पीता है ।

पिबति=वह पीता है ।

पिबामि=पीता हूँ ।

संघातः=समूह ।

पास्यामि=पीऊँगा ।

पास्यति=वह पीयेगा ।

नास्ति=नहीं है ।

भ्राता=भाई ।

सयोगः=मिलाप ।

स्वसा=भैन, बहिन ।

आमाता=दामाद ।

अवरयं=अवरय ।

नोचेत्=नहीं तो ।

सधिः=सुलह, मित्रता ।

नैव=नहीं ।

पास्यासि=तू पीयेगा ।

न एव=नहीं ।

स्पष्ट=निश्चय से ।

१. तब आमाता मेधुरं दुग्धं रात्री पास्यति=तेरा दामाद सीठा दूध
रात्रि में पीयेगा ।

२. अहं रात्री दुग्धं नैव पिबामि=मैं रात्रि में दूध नहीं पीता ।

३. मम स्वसा उष्यं जलं पिबति=मेरी बहिन गरम पानी पीती है ।

४. अहं कदाचपि, उष्यं जलं पातुं न इच्छामि=मैं कभी भी गरम
जल पीता नहीं चाहता ।

५. तब भ्राता मद्रासनगरं कदा गमिष्यति=तेरा भाई मद्रास शहर
कब आवेगा ।

६. यदि तव पिता गमिष्यति तर्हि सोऽपि गमिष्यति= अगर तेरा पिता जावेगा तो वह भी जायगा ।

७. नोचेत् नैव गमिष्यति=नहीं तो नहीं जायगा ।

८. स पीतं उत्तरीयं कदा आनयति=वह पीला डुपट्टा कब लाता है ।

९. भो मित्र ! इदानीं पीतं वस्त्रं न आनय=हे मित्र ! इस समय पीला वस्त्र न ला ।

१०. मम रक्तं वस्त्रं कुत्र अस्ति जानामि हि=मेरा लाल कपड़ा कहाँ है जानते हो क्या ?

११. अत्र दीपः नास्ति, न जानामि तव रक्तं वस्त्रं=यहाँ दीप नहीं है (मैं) नहीं जानता तेरा लाल कपड़ा ।

१२. इदानीं सायंकालः जातः, भ्रमणाय गच्छ=अब शाम हो गई । घूमने के लिये जा ।

१३. एवं कदा भ्रमणं कतिष्यसि=तू कब भ्रमण करेगा ।

१४. अहं प्रातः भ्रमणाय गच्छामि न सायं=मैं सवेरे घूमने जाता हूँ शाम को नहीं ।

१५. एवं कदा अपि न आगच्छसि=तू कभी भी नहीं आता है ।

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भूपतिः=राजा ।

नृपतिः=राजा ।

क्षेत्रपतिः=स्थान का मालिक । प्रजापतिः=ईश्वर राजा ।

प्राणपतिः=प्राणों का स्वामी । सुमतिः=उत्तम बुद्धि वाला ।

मातृतिः=इन्तुमान् ।

मुरारिः=विष्णु ।

पतिः=तापसी ।

वह्निः=भाग ।

सेनापतिः=फौज का बड़ा अधिकार ।

दुर्मतिः=बुरी बुद्धि वाला ।

मुनिः=तपस्वी ।

प्यति । १५) यत्र जगद्दीशचन्द्रः गमिष्यति तत्र विष्णुदत्त
 अपि गमिष्यति एव । (१६) अहं ओदनं नैव भक्षयिष्यामि
 (१७) स दुग्धं एव पिबति कदापि अन्नं नैव भक्षयति । (१८)
 स इत्यर्थं तत्र गतः, तस्य पुस्तकं तत्र नास्ति ।

पाठ १३

मंद = सुस्त ।	मूकः = मूंगा ।
उपरि = ऊपर ।	अधः = नीचे ।
मध्ये = बीच में ।	शवैः = आहिस्ता, धीरे २
वदामि = बोलता हूँ ।	वदमि = (तू) बोलता है ।
वदति = (वह) बोलता है	दिग्दमः = ढोल ।
अगदः = दवाई ।	उचैः = उंचे से ।
नीचैः = नीचे से ।	वदतुं = बोलने के लिये ।
उक्त्वा = बोल कर ।	वदिष्यामि = बोलूंगा ।
वदिष्यामि = तू बोलोगा ।	वदिष्यति = वह बोलेंगा ।

वाक्य

१. एवं उपरि गच्छ अहं अधः गमिष्यामि = तू ऊपर जा मैं नीचे जाऊंगा ।
२. न, अहं उपरि तिष्ठामि, एवं अधः गच्छ = नहीं, मैं ऊपर ठहरता हूँ तू नीचे जा ।
३. ओ मित्र ! इदानीं शनैः शनैः अधः गच्छ = हे मित्र ! अब धीरे धीरे नीचे जा ।
४. स सदा तत्र तिष्ठति उचैः वदति च = वह हमेशा वहां बैठता और उंचे से बोलता है ।

५. त्वं किं सर्वथा नीचैः एव वदसि=तू कया ममेशा धीमे हो बोलता है ?

अहं सदा नीचैः एव वक्तुं इच्छामि=मैं हमेशा धीमे हो बोलना चाहता हूँ ।

७. भो मित्र ! त्वं मध्ये किमर्थं तिष्ठसि=हे मित्र ! तू बीच में किसलिये ठहरता है ।

८. अहं जलं पीत्वा रात्रौ उपरि गमिष्यामि=मैं जल पीकर रात्रि में ऊपर जाऊँगा ।

९. अहं रात्रौ नैव जलं पिबामि=मैं रात्रि में जल नहीं पीता

०. किं त्वं रात्रौ उष्णं मिष्टं च दुग्धं न पास्यसि=क्या तू रात्रि में गरम और मीठा दूध नहीं पीयेगा ।

१. कुनः न ? पास्यामि एव=क्यों नहीं, पीऊँगा ही ।

२. उत्तिष्ठ, इदानीं तस्मै फलं देहि=उठ अब उसके लिये फल दे ।

३. फलं स्वादु नास्ति. कथं दास्यामि=फल मीठा नहीं है कैसे दूँगा ?

४. यथा अस्ति तथा एव देहि=जैसा है वैसा ही दे ।

शब्द

इति=ऐसा ।	पर्यन्तं=तक ।
वा=अथवा; या ।	क्रीडामि=खेलता हूँ ।
अथवा	क्रीडसि=तू खेलता है ।
किंवा= „	क्रीडति=वह खेलता है ।
अवरयं=अवरय ऊपर ।	मुष्टु=ठोक अच्छा ।
वरं=प्रेम, अच्छा ।	कंदुकः=गेंद ।
क्रीडयिष्यति=खेलेगा ।	क्रीडयिष्यामि=तू खेलेगा ।
क्रीडयिष्यामि=मैं खेलूँगा ।	मदीयः=मेरा ।

वाक्य

१. देवदत्तः तत्र क्रीडति=देवदत्त वहाँ खेलता है ।
२. स तत्र सायं काले गत्वा क्रीडयिष्यति=वह वहाँ शाम के जाकर खेलेंगा ।
३. स तत्र प्रातः गमिष्यति न वा=वह वहाँ सवेरे जायगा वा नहीं ?
४. अहं तत्र सायंकाल पर्यंतं द्यास्यामि=मैं वहाँ शाम तक ठहरूँगा ।
५. एवं अवश्यं आगच्छ=तू अवश्य आ ।
६. स कंदुरेन सुष्ठु क्रीडति=वह गेंद से अच्छा खेलता है ।
७. स न तथा सुष्ठु क्रीडति यथा विष्णुमित्रः=वह वैसा अच्छा नहीं खेलता जैसा विष्णुमित्र ।
८. सत्यं अस्ति=सत्य है ।
९. यथा वदसि तथा पथ अस्ति=जैसा तू बोलता है वैसा ही है ।
१०. रात्रौ जल उपरि नयसि न वा=रात्रि में जल ऊपर ले जाते थे या नहीं ?
११. अवश्यं नेष्यामि सत्यं वदामि=अवश्य ले जाऊँगा सत्य बोलता हूँ ।
१२. यदि एवं सत्यं वदसि नेष्यसि पथ=अगर तू सच बोलता तो ले जायगा ही ।
१३. वरं यथा वदसि तथा कुरु=अच्छा, जैसा बोलता वैसा कर ।
१४. इदानीं भोजनं कर्तुं इच्छामि, अन्नं आनय=अब भोजन कर चाहता हूँ, अन्न ले आ ।

१५ अन्न नास्ति, मोदक अस्ति—अन्न नहीं है, लड्डू है ।

यहाँ तक पाठक जान चुके हैं कि अकारान्त तथा इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द कैसे चलते हैं । अब उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप बनाना पाठकों ने सीखना है आशा है कि पूर्व का ज्ञान न भूल कर शठक आगे पढ़ेंगे —

उकारान्त पुल्लिङ्ग 'भानु' शब्द के रूप

१ प्रथमा	भानु	भानु (सूर्य)
२ द्वितीया	भानुम्	भानु को
३ तृतीया	भानुना	भानु ने
४ चतुर्थी	भानवे	भानु के लिये
५ पचमी	भानो	भानु से
६ षष्ठी	,	भानु का
७ सप्तमी	भानौ	भानु में
सम्बोधन	हे भानो	हे भानु

इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिङ्गी शब्दों के पचमी तथा षष्ठी के कवचन के रूप एक जैसे होते हैं । पाठकों ने यह बात रवि, पति, मुनि इन शब्दों में पृ० ५२ पर देखी होगी तथा भानु शब्द श्रुति में इस पाठ में स्पष्ट हो गई होगी । पचमी षष्ठी के ७ समान होते हैं इस कारण षष्ठी के स्थान (,) ऐसा चिह्न दिया है जिसका मतलब यह है कि यहाँ का रूप पूर्व की विभक्ति समान ही है । आशा है कि पाठक इस विशेषण को ध्यान रखेंगे ।

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भानु = सूर्य ।

गुरु = अध्यापक ।

कारुः=कारीगर ।

अयुः=किरण ।

सिंधुः=वसुध, दर्या ।

यसुः=घन ।

शमुः=शिवजी ।

त्रिपुः=विजय शील ।

क्रतुः=पक्ष ।

साधुः=सन, महात्मा ।

शंकुः=छोने वाला पदार्थ ।

स्तायुः=पुष्ट, रंग ।

ये सब शब्द पूर्वोक्त भानु शब्द के समान ही चलते हैं ।

वाच्य

१. गुरुः पाठशालां गच्छति=गुरु एक पाठशाला को जाता है ।

२. भानोः अंशुं पश्य=सूर्य का किरण देख ।

३. सिंधोः जलं अ नयति=दर्या से जल लाता है ।

४. मरौ देशे जलं नास्ति=रेत के देश में जल नहीं है ।

५. मृदुवे हि दास्यसि=मौन क लिये क्या देओगे ।

६. शत्रुं पश्यसि क्रिम्=दुश्मन को देखते हो क्या ?

७. शत्रुः राजा आसीत्=शत्रु राजा था ।

■ शत्रुना क्रतुः समाप्तः=शत्रु ने यह समाप्त किया ।

८. शमुना राक्षसी हतः=शिवजी ने राक्षस मारा ।

९. साधुना नवदेशः कृतः=साधु ने नवदेश किया ।

१०. तरोः फलं पतितं=दरयत से फल गिरा ।

अब थोड़े से ऐसे वाक्य देते हैं कि जो पाठक स्वयं जान सकते हैं :—

स तं मार्गं पृच्छति । मृगः मृगेण सह गच्छति मनुष्यः
 मनुष्येण सह न गच्छति । सदा मूर्खः मूर्खेण सह वदति । वानरः
 वने धावति । विष्णुः सर्वत्र अस्ति । ईश्वर सदा सर्वं पश्यति ।
 नृपः रत्नाक वदति । स नगरात् धन आनयति । वसिष्ठस्य चरणं
 पश्य । बालकाय मोदकं देहि । ब्राह्मणाय धनं देहि । तस्मै जलं देहि
 शत्रुः राक्षसं हन्ति । वद्याने वरुः अस्ति । शत्रुः ग्रामे नास्ति । कारु
 गृहं करोति । भानु प्रकाश ददाति । स कदापि न तुष्यति । पुष्प
 आनयति । पुष्प जले पतितम्, तस्य पुत्रं कूपे पतितः । तस्य
 बाहुः शोभनः अस्ति । ह्य कंदुकेन क्रीडति । तत्र गत्वा तं पश्य ।
 बालकः आधुना न आगतः । त्वं गच्छ भोजनं च कुरु ।

भाषा क निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य कीजिए :—

१ वह आस से देखता है । २ कैसे वह बालक गया । ३ बालक
 धूप में गया । उसकी यहा लेआ । ४ अब राजा कहा । ५ नौकर ने
 हाथ में सोटी ली । ६ गांव में शत्रु है । ७ वह फूट जाता है । ८
 वहां जाकर देख । ९ वह दुर्मति के साथ मित्रता करता है । १०
 जहां राम जायगा वहां कृष्ण जायगा । ११ जहां मैं जाऊंगा वहां
 तू जा ।

पाठ १४

भ्रमः=भट्ट

अतः=इसलिये ।

कुत=किसलिये ।

यतः=जिसलिये ।

ताडयति=वह पीटता है । ताडयति=तू पीटता है ।

ताडयामि=पीटता हूँ । उन्नतः=उन्नत से पीडित ।

१ ददाति देता है । २ तुष्यति=खुश होता है । ३ शोभनः=उत्तम ।

दुर्बलः=बलहीन ।	अतीव=बहुत ।
परिश्रमः=मेहनत ।	एतत्=यह ।
यद्=ओ कि ।	तत्=वह ।
तादयिष्यति=पीटेगा ।	तादयिष्यसि=पीटेगा ।
तादयिष्यामि=पीटूँगा ।	केवलं=केवल, सिर्फ ।
अल्पं=थोड़ा ।	नीरोगः=स्वस्थ, समुत्तम ।

वाक्य

१. यज्ञदत्तः किमर्थं न पठति=यज्ञदत्त क्यों नहीं पढ़ता ।
२. स एवरेण पीडितः अस्ति, अतः न पठति=वह एवर से पीड़ित है, इस कारण नहीं पढ़ता ।
३. किम् एतत् सत्त्वमस्ति यत् स एवरेण पीडितः अस्ति=क्या यह सत्य है कि वह एवर से पीड़ित है ।
४. अथ किं, स न केवलं एवरितः अस्ति, परन्तु स अतीव दुर्बलः अपि अस्ति=और क्या ? वह न केवल एवरित है, परन्तु वह बहुत दुर्बल भी है ।
५. किं स अन्नं भक्षयति न वा । कथय=क्या वह अन्न खाता है वा नहीं । कह ।
६. न भक्षयति परन्तु अल्पं अल्पं दुग्धं विवति=नहीं खाता परन्तु थोड़ा थोड़ा दूध पीता है ।
७. कदा स पुनः नीरोगः भविष्यति=कब वह फिर स्वस्थ होगा ?
८. एतद् अहं न जानामि=यह मैं नहीं जानता ।
९. स किं किं वदति=वह क्या, २ बोलता है ?
१०. स किमपि न वदति=वह कुछ भी नहीं बोलता ?
११. यदा स पुनः नीरोगः भविष्यति=जब वह फिर नीरोग होगा ।
१२. तदा स अन्नं भक्षयति एव=तब वह यहाँ आयेगा ही

१३. पाठं च पठिष्यति=और पाठ पढ़ेगा !

वाक्य

- | | |
|----------------------|----------------------|
| स्वपिति=वह सोता है । | स्वपिपि=नू सोता है । |
| स्वपिमि=सोता हूँ । | दश-वादने=दस बजे । |
| दशघण्टासमये=दस बजे । | तदानीं=उस समय । |
| यय.=यह । | शोभने=उत्तम । |
| इतिहासः=इतिहास । | खादति=वह खाता है । |
| खादसि=तू खाता है । | खादामि=खाता हूँ । |
| भवति=वह होता है । | भवसि=तू होता है । |
| भवामि=होता हूँ । | एरिद्रः=निधन । |
| भृत्यः=सेवक । | मेरुः=मेरुपर्वत । |

वाक्य

१. एवं रात्रौ कदा स्वपिपि=तू रात्री कब सोता है ।
२. अहं दशघण्टासमये स्वपिमि=मैं दस बजे सोता हूँ ।
३. परन्तु विश्वनाथः तदानीं न स्वपिति=परन्तु विश्वनाथ उस समय नहीं सोता ।
४. यदि स न स्वपिति तर्हि तदा स किं करोति=अगर वह नहीं सोता तो वह तब क्या करता है ।
५. स तदानीं पुस्तकं पठति अतोव कोलाहलं च करोति=तब वह पुस्तक पढ़ता है और बहुत शोर मचाता है ।
६. स किमर्थं कोलाहलं करोति=वह क्यों कोलाहल करता है ।
७. स उच्यैः पठति अतः कोलाहलः भवति=वह उंचे से पढ़ता है इसलिये शोर होता है ।
८. कोलाहलं न कुरु इति स्व तं यद्=गड़ गड़ न कर, ऐसा तू ऊँको रुह ।

६. स मध्याह्ने किं किं मत्स्यति किं किं पिबति च=वह मध्याह्न में क्या २ खाता है और क्या २ पीता है ।

१०. स प्रातः काले दुग्धं पिबति मध्याह्ने च स्वादु भोजनं खादति=वह सुबह दूध पीता है और दुपहर को उत्तम भोजन खाता है ।

११. स इदानीं सं किमर्थं ताडयति=वह अब उस को क्यों पीटता है ।

१२. यतः स न लिखति=किस कारण वह नहीं लिखता ।

१३. एष शोभनः समयः भ्रमणाय गच्छामि=यह उत्तम समय है घूमने के लिये जाता हूँ ।

१४. स दरिद्रः अस्ति अतः द्रव्यं न ददाति=वह निर्धन है इसलिये पैसा नहीं देता है ।

चकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार पिछले पाठ में आ चुका है । अब ऋकारान्त शब्दों के रूप इस पाठ में बनायेंगे:—

ऋकारान्त पुलिग 'धातु' शब्द

१ धाता	महा
२ धातारं	महा को
३ धात्रा	महा ने
४ धात्रे	महा के लिये
५ धातुः	महा से
६ धातुः	महा का
७ धातदि	महा से
सं० (हे) धातः	हे महा

ऋकारान्त पुलिग शब्द

धातृ=महा, विश्वकर्ता, उत्पन्न कर्ता ।

महं=बनाने वाला । नेतृ=ले जाने वाला ।

शास्त्वृ=शासन करने वाला । उद्गात्वृ=गाने वाला ।
 गात्वृ=गाने वाला । नष्टृ=पोता ।
 गंतृ=जाने वाला । दात्वृ=देने वाला ।
 षक्त्वृ=बोलने वाला । द्रष्टृ=देखने वाला ।
 श्रोत्वृ=सुनने वाला । भोक्त्वृ=खाने वाला ।
 छष्टृ=छत्पन्न करने वाला । पात्वृ=रक्षा करने वाला ।
 द्वेष्टृ=द्वेष करने वाला । ध्यात्वृ=ध्यान करने वाला ।

वाक्य

१. धाता सकलं विश्वं रचयति=मझा सब विश्व को रचता है ।
२. दातुः इच्छा कीदृशी अस्ति=दाता की इच्छा कैसी है ।
३. भोक्त्रे मोदकं देहि=खाने वाले को लड्डू दे ।
४. नष्ट्रा भोजनं न कृतं=पोते ने भोजन नहीं किया ।
५. मम द्वेषारं पश्य=मेरे द्वेष करने वाले को देख ।
६. ध्याता ईश्वरं ध्यायति=ध्यान करने वाला ईश्वर का ध्यान करता है ।
७. मूपकः धान्यं खादति=चूहा धान खाता है ।
८. वक्ता सत्यं वदति=बोलने वाला सब बोलता है ।
९. भुवनस्य कर्तारं ईश्वरं कुत्र पश्यसि=जगत् के कर्ता ईश्वर को कहाँ देखता है ।
१०. अहं भुवनस्य कर्तारं ईश्वरं वन्दे=मैं जगत्कर्ता ईश्वर को नमस्कार करता हूँ ।

(१) एवं तं प्रथमं गच्छसि । (१२) एवं तं प्रथमं कदा गमिष्यसि
 (३) एवं तं प्रथमं किमर्थं न गच्छसि । (४) एवं तं प्रथमं गत्वा किं
 जानेष्यसि । (५) एवं तं बहुशीघ्रं प्रथमं गत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ ।
 (६) एवं तं शीघ्रं नन्द्यपुर नामकं नगरं गत्वा तब मित्रं दृष्ट्वा शीघ्रं

एव अत्र आगच्छ । (७) हे घातः ! त्वं भुवनस्य कर्ता असि त्वया
एव सर्वं पतत् निर्मितम् । (८) माहात्म्याय घन, दुग्धं च देहि ।
(९) माहात्म्यं अत्र एव अस्ति । १० तं अत्र जानय ।

पाठ १५

साधु = साधु, फकीर ।	वेतन = तनखाह ।
धावति = वह दौड़ता है ।	धावसि = तू दौड़ता है ।
धावामि = दौड़ता हूँ ।	पतित = गिर गया ।
कदमे = कीचड़ में ।	स्खलित = फिसल गया ।
दुकूल = रेशमी वस्त्र ।	अजन = सुरमा, अंजन ।
यज्ञ = यज्ञ ।	हसति = रह हँसता है ।
हससि = तू हँसता है ।	हसामि = हँसता हूँ ।
घृष्टः = घृष्टा ।	मुवा = जवान ।
माल = लटका ।	पट्टा = वस्त्र ।

वाक्य

१. स किमर्थं हसति = वह क्यों हँसता है ।
२. पतः विष्णुदत्तः तत्र कदमे पतितः = क्योंकि विष्णुदत्त वहाँ कीचड़ में गिर गया है ।
३. कथं ॥ कदमे पतितः = कैसे वह कीचड़ में गिर पड़ा ।
४. स पूर्वं स्खलितः पश्चात् पतितः = वह पहिले फिसला और पीछे गिर गया ।
५. त्वं तथा धावसि किं यथा अहं धावामि = तू जैसा दौड़ता है जैसे मैं दौड़ता हूँ ।

६ अथ अपि तथा न लिखति येथा विष्णुशर्मा लिखति=तू भी
वैसा नहीं लिखता जैसा विष्णुशर्मा
लिखता है ।

७. यदा त्वं पठसि तदा अहं क्रीडामि=जब तू पढ़ता है तब मैं
खेलता हूँ ।

८ स कन्दुकेन वरं क्रीडति=वह गेंदे से अच्छा खेलता है ।

९. यदा स कन्दुकेन क्रीडति तदा स धावति=जब वह गेंद से
खेलता है तब वह खेळता है ।

१० यदा स धावति तदा अहं हसामि=जब वह दौड़ता है तब मैं
हँसता हूँ ।

११. मद्यां आस्र देहि=मुझे आम दे ।

१२. किम् अद्य त्वम् आस्र भक्षयिष्यसि=क्या तू आज आम खावगा ?

१३ किम् अद्य अस्ति=आज क्या है ?

१४. अद्य उष्यं दिनं अस्ति अत आस्र न भक्षय=आज गर्म दिन
है इसलिये आम न खा ।

१५. तर्हि शीतं दुग्धम् देहि=तो ठण्डा दूध दे ।

१६. स्वीकुरु, अत्र शीतं मिष्टं च दुग्धं अस्ति=ले, यहाँ ठण्डा और
मीठा दूध है ।

शब्द

खनति=(वह) खोदता है ।

खनसि=(तू) खोदता है ।

खनामि=खोदता हूँ ।

रक्षसि=वह रक्षा करता है ।

रक्षसि=तू रक्षा करता है ।

रक्षामि=मैं रक्षा करता हूँ ।

भूमि=भूमि को ।

व्यर्थ=व्यर्थ ।

गां=गाय को ।

गायनं=गाना ।

स्वकीय=अपनी ।

परकीय=दूसरे की ।

कूपं=कुएँ की ।

नर्तन=नाचना ।

वाक्य

१. तस्य पिता अतीव वृद्धः अस्ति=उसका पिता बहुत ही वृद्ध है।

२. परन्तु तस्य भ्राता युवा अस्ति=परन्तु उसका भाई जवान है ।

३. स भूमिं किमर्थं अथ खनति=वह भूमि को आज किस लिये खोदता है ।

४. स अथ क्वर्थं खनति=वह आज क्वर्थं खोदता है ।

५. स स्वकीयां भूमिं रक्षति न वा=वह अपनी भूमि की रक्षा करता है वा नहीं ।

६. स स्वकीयां वा आनयति=वह अपनी गाव को लाता है ।

७. स गृहं रक्षति किं=वह घर की रक्षा करता है क्या ?

८. अथ किं, स न केवलं गृहं रक्षति=और क्या ? वह न केवल घर की रक्षा करता है ?

९. परन्तु उद्यान अपि घर रक्षति=परन्तु बाग की भी अच्छी तरह रक्षा करता है ।

१०. स न तथा रक्षति यथा देवप्रियः=वह नहीं वैसी रक्षा करता जैसी देवप्रिय ।

११. देवप्रियः अतीव बालः अस्ति=देवप्रियः अत्यन्त बालक (छोटा) है ।

१२. परन्तु भद्रसेनः युवा अस्ति=परन्तु भद्रसेन जवान है ।

१३. अतः स प्रातः काले मुष्टु घावति=इस कारण वह प्रातः मथ्या पीता है ।

यामि=(तू) जाता है । याति=(वह) जाता है ।
 उदयं=जल । : ~ गुणः=गुण ।

संस्कृत वाक्य

यत्र धूमः तत्र अग्निः अस्ति । अहं तं ग्रामं गच्छामि, यत्र
 वेदस्य ज्ञाता वसति । तस्मै गुगुवे नमः । नृपतिः शास्त्रस्य ह्यत्रे द्रव्यं
 ददाति । यस्य बुद्धिः बलं अपि तस्य पब । शत्रुं भूयतिः जयति
 अहं मायं नगराद् बहिः गच्छामि । तस्य हस्तात् माला पतिता ।
 स एव पर्यतः यत्र वसिष्ठः मुनिः वसति । 'व्याघ्रात् भयं भवति ।
 गुरोः ज्ञानं भवति । मृगः वनात् वनं गच्छति । ।

भाषा के निम्न वाक्यों को संस्कृत कीजिये:—

(१) ऊचे से न बोल । (२) तू जम गांव को जा । (३) उसका
 धन दे । (४) मुझे धन दे । (५) मैं ऊपर ठहरता हूँ । (६) मैं गर्म
 जल कभी नहीं पीता । (७) वठ तेरे गुरु के लिये फल दे । (८)
 अब तू खेल । (९) आज मैं नहीं खेलूँगा । (१०) तू सब
 बोलता है ।

पाठ १६

शब्द

यस्य=जिसका ।

अस्य=इसका ।

दूरं=दूर ।

सर्वस्य=सब का ।

देवस्य=ईश्वर का ।

पादत्राणं=जूता, बूट ।

वैद्यः=वैद, डाक्टर ।

कस्य=किसका ।

क=कहां ।

नियमः=नियम ।

मित्रस्य=मित्र का ।

नितान्तं=बिलकुल ।

मिष्टं=मिठाई ।

१. यस्य पुस्तकं अस्ति तस्मै देहि=जिसकी पुस्तक है उसी को दे ।
२. एतत् कस्य गृहं अस्ति=यह किसका घर है ।
३. एतत् मम मित्रस्य गृहं अस्ति=यह मेरे मित्र का घर है ।
४. त्वं यथं जानासि=तू कैसे जानता है ।
५. यद् अहं यदाभि तत् सत्यं अस्ति=जो मैं बोलता हूँ वह सच है ।
६. तस्य माता किं वदति=उसकी माता क्या बोलती है ।
७. मम पादश्रावणं आनय=मेरा जूता ले आ ।
८. कुत्र अस्ति तव पादश्रावणं=वहाँ है तेरा जूता ?
९. तत्र अस्ति तत् परम=वहाँ है वह देव ।
१०. स दूरं गच्छति हि=वह दूर जाता है क्या ।
११. स मिष्टं मनुयति=वह मिठाई खाता है ।
१२. अद्य लेखनी कुत्र अस्ति=इसकी कलम कहाँ है ?
१३. त्वं इदानीं किं लिखसि=तू अब क्या लिखता है ?
१४. स एकं पुत्रं परयति=वह लाल कुत्ता देवता है ।

शब्द

करपट्टिकां=रोटी, फुलका ।	तत्र=उपरा, उसी दही की
मुञ्चति=उल्लेखियां ।	दधि=दही ।
कथिका=कड़ी ।	व्यंजनं=पटनी ।
गृह्णामि=लेता हूँ ।	गृह्णामि=तू लेता है ।
गृह्णाति=वह लेता है ।	वैधं=नसीब ।
नवनोद=मकखन ।	भृतं=घा ।
दुग्ध=दूध ।	सुप्तं=दाल ।
गृहाण=ले ।	वद=लिख ।
लिख=लिख ।	दुर्दैवं=दुर्भाग आप्त ।

१. मह्यं इदानीं एव करपट्टिकां देहि=मुझे अभी-रोटी दे ।
२. त्वं प्रातः तक्रं पिबसि किं=तू सवेरे खससी पीता है क्या ।
३. स प्रातः कुंडलिनोः भक्षयति=वह प्रातः जलेबियां खाता है ।
४. मह्यं कथिकां ददासि किं=मुझे कढ़ी देगा क्या ?
५. स व्यंजनं भक्षयार्थं इच्छति=वह चटनी भक्षण करना चाहता है ।
६. एतत् नवनीतं गृहाण=यह मन्खन ले ।
७. घृतं तत्र किमर्थं नयसि वद=घी वहां किस लिये ले जाता है, कह ।
८. अहं भक्षयार्थं घृतं दधि च नयामि=मैं खाने के लिये घी और दही ले जाता हूँ ।
९. यदि त्वं सूपं इच्छसि तर्हि गृहाण=अगर तू दाल चाहता है तो ले ।
१०. स बहु व्यंजनं भक्षयति तत् न वरं=वह बहुत चटनी खाता है, यह अच्छा नहीं ।
११. वद त्वं कुत्र गच्छसि=बोल तू कहाँ जाता है ।

पुर्ब पाठों में ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप बनाने का प्रकार दिया है । कई ऋकारान्त शब्दों के रूप भिन्न २ प्रकार से भी होते हैं । विशेष भिन्नता नहीं होती है केवल एक रूप में भेद होता है :—

ऋकारान्तः पुल्लिङ्गः 'पितृ' शब्दः ।

१ प्रथमा	पिता	पिता
२ द्वितीया	पितर	पिता को
३ तृतीया	पित्रा	पिता ने

४ चतुर्थी	पित्रे	पिता के लिये
५ पंचमी	पितुः	पिता से
६ षष्ठी	,	पिता का
७ सप्तमी	पितरि	पिता में
सम्बोधन	(हे) पितः	हे पिता

पिता शब्द में और धाता शब्द में इतना ही फरक है कि धाता शब्द का द्वितीया का एकवचन 'धातार' हुआ है और पिता शब्द का 'पितर' हुआ है। शब्द 'पितार' नहीं हुआ। यही विशेषता निम्न शब्दों में हुआ करती है। पाठकों को उचित है कि वे इस बात को स्मरण रखें।

पितृ शब्द के समान चलने वाले ऋकारान्त पुलिङ्ग शब्द

भ्रातृ=भाई	जामातृ=दामाद।
नृ=नर, पुरुष।	देवृ=देवर।
सत्तृ=स्तुति करने हारा।	सन्त्येष्टृ=गाढ़ीघान।

वाक्य

- १ पिता पुत्रं पश्यति=पिता लड़के को देखता है।
- २ पुत्र पितरं पश्यति=लड़का पिता को देखता है।
- ३ पित्रा पुत्राय वस्त्रं दत्त=पिता ने पुत्र के लिये वस्त्र दिया।
- ४ भ्राता भ्रातरं द्वेष्टि=भाई भाई से द्वेष करता है।
- ५ भ्रात्रा धनं दत्त=भाई ने धन दिया।
- ६ जामात्रे वस्त्रं देहि=दामाद के लिये वस्त्र दे।
- ७ पित्रे नमः कुरु=पिता को नमस्कार कर।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकते हैं। उक्त वाक्यों के निषेध अर्थ के वाक्य—

१ पिता पुत्रं न पश्यति । २ पुत्रः पितरं न पश्यति । ३ पित्रा पुत्राय वस्त्रं न दत्तम् । भ्राता भ्रातरं न द्वेष्टि । ४ भ्रात्रा धनं न दत्तम् । ५ जामात्रे वस्त्रं न देहि ।

निम्न वाक्यों का संस्कृत कोजिए:—

वह गांव को जाता है । २ अहां तू जाता है, वहां मैं जाता हूं । ३ क्या तू सदा याग में जात है । ४ तू कहां जाता है । ५ वह दिन मैं नगर को जाता है और रात में घर को जाता है । ६ हरिश्चन्द्र फल खाता है ।

निम्न वाक्यों के भाषा के वाक्य बनाइए:—

१ अहं इदानीं फलं नैव भक्षयामि । २ हरिश्चन्द्रः पुस्तकं तत्र नयति । ३ किमर्थं त्वं अपूर्णं तत्र नयामि । ४ अहं गृहं गत्वा मम धौतं वस्त्रं आनयिष्यामि । ५ गृहि, यज्ञ प्रयः कुत्र अस्ति ।

पाठ १७

शक्तिः=सामर्थ्य ।

शक्यः=सुमकिन ।

शक्नोमि=सकता हूँ ।

शक्नोषि=(तू) सकता है ।

शक्नोति=(वह) सकता है ।

वक्तुं=बोलने के लिये ।

स्वभाषा=अपनी भाषा ।

नारंगः=संगतरह का वृक्ष ।

चन्द्रः=चांद ।

संस्कृतं=संस्कृत भाषा ।

आंग्लभाषा=अंग्रेजी भाषा ।

देश भाषा=देशी भाषा ।

नवीनं=नवीन, नई ।

पुराणं=पुराना ।

मातृभाषा=मातृभाषा (माद्री) जपन ।

आसनं=आसन ।

नारंगं=संगतरह (फल)

वाक्य

१. त्वं संस्कृतं वक्तुं शक्नोषि किं ?=क्या तू संस्कृत भाषा बोल सकता है ?
२. नहि नहि, अहं आर्य भाषा वक्तुं शक्नोमि=नहीं नहीं, मैं आर्येजी बोल सकता हूँ ।
३. किं एतत्त्वं वरं अस्ति यत् त्वं स्वभाषां वक्तुं न शक्नोषि ?=क्या यह अच्छा है कि तू अपनी भाषा नहीं बोल सकता ?
४. कः पयं वदति ?=कौन ऐसा कहता है ?
५. तर्हि संस्कृतं किं न पठसि ?=तो संस्कृत क्यों नहीं पढ़ाते ?
६. अहं पठामि पय=मैं पढ़ता ही हूँ ।
७. त्वं एतत् वक्तुं शक्नोषि किं ?=क्या तू वहाँ जा सकता है ?
८. स क्व हितुं शक्नोति=वह खोज सकता है ।
९. अहं लेखितुं न शक्नोमि=मैं लिख नहीं सकता ।
१०. स वरं लेखितुं शक्नोति=वह अच्छा लिख सकता है ।
११. स नवीन पुस्तकं लिखति किम् ?=क्या वह नवीन पुस्तक लिखता है ।
१२. तस्य गृहं अनाथ पुत्राय अस्ति=उसका घर बहुत ही पुराना है ।
१३. ओ मित्र ! एतत् आसनं गृहाय=हे मित्र ! यह आसन ले ।

शब्द

अनृतं=असत्य ।

प्रियं=प्रिय ।

अलंकारः=भूषण, जेवर ।

अभ्यापनः=रुझाने वाला ।

यत्नः=बोलने द्वारा ।

स्त्रियः=छिरना ।

अप्रियं=अप्रिय ।

भव=हो ।

आ व र्यः=गुरु, शिक्षक ।

तूष्णीं=चुप चाप ।

प्रियावाद्=प्रिय बोलने वाला ।

धृया=व्यय ।

असत्यवादी=असत्य बोलने वाला ।

आमः=कृत्वा ।

१. किमर्थं अनृतं वदसि=क्यों असत्य बोलता है ।

२. अहं कदापि असत्य नैव वदामि=मैं कभी असत्य बोलता ही नहीं ।

३. स वक्ता सदा एव अप्रिय वदति=वह बोलने वाला सदा अप्रिय बोलता है ।

४. किं स्वम् अलंकारं गृह्णासि=क्या तू जेवर लेता है ।

५. आचार्यः सत्वरं आगमिष्यति=गुरु शीघ्र आवेगा ।

६. स अध्यापकः शीघ्रं न गमिष्यति=वह अध्यापक शीघ्र नहीं आवेगा ।

७. सत्यं प्रियं च वद=सत्य और प्रिय बोल ।

८. स तत्र तूष्णीं तिष्ठति=वह वहाँ चुप थाप रहा है ।

९. बालकः तूष्णीं नैव तिष्ठति=बालक चुप नहीं रहता है ।

१०. स आचार्यः सदा पुस्तकं पठति=वह शिक्षक सदा पुस्तक पढ़ता है ।

११. स एव वृथा वदति=वह ऐसा व्यर्थ बोलता है ।

१२. स प्रियवादी आचार्यः कुत्र गतः=वह प्रिय बोलने वाला आचार्य कहाँ गया ?

१३. स अन्यं नगरं गच्छति=वह दूसरे शहर को जाता है ।

इस समय तक पाठकों ने अ, इ, उ, ए ये स्वर जिनके अन्त में है, ऐसे पुलिङ्गो शब्द चलाने का प्रकार जान लिया है । अब कुछ पुलिङ्ग सर्वनामों के रूप देते हैं । जिनको जानने से पाठक संस्कृत में अनेक प्रकार के वाक्य बना सकते हैं ।

पाठक इनके रूप बना सकते हैं और वाक्यों में इनको प्रयुक्त कर सकते हैं। अब नीचे कुछ वाक्य देते हैं, जो पाठक पढ़ते ही समझ जायेंगे।

१ एकस्मिन् दिवसे अहं तस्य गृहं गतः। २ अन्यस्मिन् दिने जगदीशरायः अत्र आगतः। ३. अन्यस्य धनं न स्वीकुरु। ४ देवभक्तः सर्वं द्रव्यं तस्मै न ददाति किम्। ५ यदि एकस्मात् प्रामात् पुरुषः न आगतः। ६ तर्हि अन्यस्मात् प्रामात् स कथं आगमिष्यति? ७ एकस्मिन् मार्गे यथा दुःखम् अस्ति न तथा अन्यस्मिन् मार्गे अस्ति। ८ अतः अन्येन मार्गेण एव तं ग्रामं गच्छ। ९ एकेन गुरुणा एव सर्वं पुस्तकं पाठितम्। १० अन्यस्मिन् पुस्तके सा कथा नास्ति।

१ द्वारं विधेहि। २ पात्रं इदानीं कुत्र नयसि। ३ स मोदकं आम्रं च मध्याह्ने भक्षयति। ४ वृत्ते मूपकं पश्य। ५ नृपतिः चौरं लाञ्छयति। ६ यदा चौरः तत्र गमिष्यति तदा स्वम् अपि तत्र एव गच्छ। ७ यथा स्वम् दुग्धं विवसि तथा एव स पिबति। ८ स्वर्गस्य द्वारं तेन चद्रुपाटितम्। ९ हरद्वार नगरे यथा 'स्वादु दुग्धं' भवति न तथा अमृतसरे। १० यथा विहगः आकाशे गच्छति, तथा मनुष्यः अत्र गच्छति। ११ अथ कुमारः कुत्र वर्तते।

पाठ १८

मार्जनक्षेपः=सायून।

आलक्ष्यं=आलस।

इन्धने=अकड़ो, ईंधन।

पर्यंकः=पलंग।

आनन्दः=आनन्द।

शीघ्रं=शीघ्र।

१ दुःखं—नकली। २ पाठितं—पढ़ाया। ३ सा—वह।

उत्तिष्ठामि=उठता हूँ ।

उत्तिष्ठामि=(तू) उठता है ।

पंकः=कीचड़ ।

सूत्रं=घागा ।

हवनार्थं=हवन के लिये ।

इह=यहाँ ।

इति=ऐसा ।

उत्तिष्ठति=(वह) उठता है ।

हवनकुण्डं=हवनकुण्ड ।

यज्ञसामग्री=हवन सामग्री ।

१. ओ शिष्य ! उत्तिष्ठ आज्ञस्त्यं न कुर्व=हे शिष्य ! उठ आज्ञा
न कर ।

२. अहं उत्तिष्ठामि, शौचं ज्ञानं च कृत्वा हवनार्थं आगच्छामि=
मैं उठता हूँ, शौच और ज्ञान करके हवन के लिये
आता हूँ ।

३. शीघ्रं उत्तिष्ठ च तत्र सत्वरं आगच्छ=जल्दी उठ और जहाँ
शीघ्र आ ।

४. तत्र हवनार्थं इन्धनं नाम्नि=वहाँ हवन के लिये लकड़ी नहीं है ।

५. यज्ञकुण्डं कुत्र अस्ति=हवन कुण्ड कहाँ है ।

६. अहं न जानामि=मैं नहीं जानता ।

७. तत्र एव पश्य शीघ्रं च अत्र आनय=यहाँ ही देख और शीघ्र
यहाँ ले आ ।

८. ओ मित्र ! हवनकुण्डं अहं आनयामि त्वं इन्धनं आनय=हे
मित्र हवनकुण्ड मैं लाता हूँ तू लकड़ी ले आ ।

९. यज्ञसामग्रीं अत्र अस्ति=हवन सामग्री यहाँ है ।

१०. ज्ञानं कृत्वा एव हवनं करोमि=ज्ञान करके ही हवन करता हूँ ।

११. ज्ञानं संभ्यां च कृत्वा हवनं कुर्व=ज्ञान और संभ्या करके
हवन कर ।

१२. इदानीं देवदत्तः मध्यां करोति=अब देवदत्तः संभ्या करता है ।

शब्द

आरभे=मैं आरम्भ करता हूँ ।	आरभसे=तू आरम्भ करता है ।
आरभते=वह आरम्भ करता है ।	उपास्य=उपासना करके ।
एहि=आओ ।	कुरालः=निरोगी, प्रवीण ।
मां=मुझे ।	कंवलं=कंवल ।
आज्ञापयति=आज्ञा करता है ।	आज्ञापयसि=आज्ञा करता है ।
आज्ञापयामि=आज्ञा करता हूँ ।	त्वां=मुझे ।
तं=उसको ।	शुभं=अच्छा ।
इति=ऐसा, यह ।	ऊर्णावत्=उत्ती कपड़ा ।

वाक्य

१. रामचन्द्रः इदानीं कुरालः अस्ति=रामचन्द्र अब कुराल है ।
२. स प्रातः एव संध्यां उपास्य बहिः गच्छति=वह सवेरे ही संध्या करके बाहर जाता है ।
३. स मध्याह्ने आगच्छति तदा भोजनं च करोति=वह दोपहर (के समय) आता है और तब भोजन करता है ।
४. स मां आज्ञापयति=वह मुझे आज्ञा करता है ।
५. अहं त्वां न आज्ञापयामि=मैं तुम्हें नहीं आज्ञा करता ।
६. स तं किमर्थं आज्ञापयति=वह उसको किस लिये आज्ञा करता है ?
७. स कदापि तं न आज्ञापयति=वह उसको कभी नहीं आज्ञा करता ।
८. एहि पश्य एतत्=आ इसको देख ।
९. स शुभं कर्म इदानीं आरभते=वह श्रेष्ठ कार्य अब आरम्भ करता है ।

१०. अहं इदानीं संस्कृतं पठितुं आरम्भे=मैं अब संस्कृत पढ़ना प्रारंभ करता हूँ ।

११. एवं अपि किं न आरम्भसे=तू भी क्यों नहीं आरम्भ करता ।

१२. समयः न अस्ति अतः न आरम्भे=समय नहीं है इसलिये नहीं आरम्भ करता ।

१३. त्व इदानीं कुरालः अस्ति किं ?=तू अब कुरालपूर्वक है क्या ?

१४. स तत्र गत्वा भूमिं रत्नति=वह वहाँ जाकर जमीन खोदता है ।

१५. तत्र न गच्छ उति स त्वा आश्वासयति=वहाँ तू न जा देखी वह तुझे आशा करता है ।

पुल्लिङ्ग में "किं" शब्द के रूप

१. प्रथमा	क	कीन
२. द्वितीया	क	किसको
३. तृतीया	केन	किसने
४. चतुर्थी	कस्मै	किसके लिये
५. पंचमी	कस्मात्	किस से
६. षष्ठी	कस्य	किसका
७. सप्तमी	कस्मिन्	किस में

गत = गया । आलोक्य=दिखा, तसवीर ।

मंदिर=घर, तसवीर । अलोक्य=लिया कर ।

ददाति=(वह) देता है । ददाति=(तू) देता है ।

भवति=(वह) होता है । भवति=(तू) होता है ।

भवाति=होता है । भत्वा=मान कर ।

गृहीत्वा=लेकर । भूत्वा=होकर ।

१. क' तत्र अस्ति=कौन वहाँ है ?

२. त्व कं पश्यसि=तू किसको देखता है ?

३. केन मार्गेण स गतः=किस मार्ग से वह गया ?
४. कस्मै धनं ददासि=किसके लिये धन देते हो ?
५. कस्मात् ग्रामात् ॥ आगच्छति=किस गाँव से वह आता है ।
६. कस्य इतत् पुस्तक अस्ति=किस की यह पुस्तक है ?
७. कस्मिन् पुस्तके तत् आलेख्यम् अस्ति=किस पुस्तक में वह तसवीर है ?
८. कः तत्र न गच्छति=कौन वहाँ नहीं जाता ?
९. कस्मै कारणात् त्वं धनं न ददासि=किस कारण से तू धन नहीं देता ?
१०. कस्मिन् स्थाने तस्य पाठशाला अस्ति=किस स्थान में उसकी पाठशाला है ?

किं कृष्णः मंदिरं न गच्छति ? अथ कृष्णः मंदिरं नैव गच्छति । देवदत्तः यदि रामचन्द्राय पुस्तकं न ददाति तर्हि कस्मै ददाति । त्वं कुत्र गत्वा इदानीं अत्र आगतः । मित्र, परम्य तस्य गृहं अत्र एव अस्ति । मम गृहं अत्र नास्ति । तव वस्त्रं मलिनम् । किं प्रणम्य स आगतः । स गुरुं प्रणम्य अत्र आगतः ।

निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइए ।

हे बिष्णुदत्त तू कब आवेगा । मैं शाम के समय सप्या करके वहाँ जाऊँगा । तू वहाँ क्यों नहीं जाता, कह । यदि तू जायगा तो मैं अवश्य जाऊँगा । वह तुम को पोटता है । रामचन्द्र यज्ञदत्त के लिये पुस्तक नहीं देता । देख, मेरा घर कैसा चतम है । मैं ठंडे पानी से स्नान करके आया । तू अब पुस्तक पढ़ । मैं भोजन करके पत्र पढ़ूँगा ।

पाठ १६

मसूराः=मसूर ।	यवाः=जौ ।
तिलाः=तिल ।	गोधूमाः=गेंहूँ, कनक ।
मनुष्यः=मनुष्य ।	जनः=मनुष्य ।
पुरुषः=मनुष्य ।	काचः=शीरा ।
कलमः=कलम, लेखनी ।	तदुक्ताः=चायन ।
मुद्गाः=मूँग	मापाः=माप, माँह ।
स्त्री=स्त्री ।	सन्ति=हैं ।
कृष्णाः=काले ।	अर्धः=आधा ।

वाक्य

१. स पुरुषः नगरं गत्वा जलं आनयति=वह पुरुष शहर जाकर जल लाता है ।
२. तत्र गोधूमाः सन्ति परन्तु यथा न सन्ति=वहाँ गेंहूँ हैं परन्तु जौ नहीं हैं ।
३. तिलाः कृष्णाः सन्ति तथा एव मापा अपि=तिल काले हैं वैसे ही माप भी ।
४. मापाः न तथा कृष्णाः यथा तिलाः=माप वैसे काले नहीं, जैसे तिल ।
५. परम, अत्र पुरुषः अस्ति=देख यहां मनुष्य है ।
६. अत्र पुरुषः अस्ति परन्तु स्त्री नास्ति=यहां मनुष्य है परन्तु स्त्री नहीं है ।
७. दुर्गादासः किं करोति=दुर्गादास क्या करता है ?
८. बामूरामः तत्र तिष्ठति शिष्यति च=बामूराम वहाँ ठहरता है और शिष्यता है ।

६. तव दूतः लिखितुं न शक्नोति=तेरा दूत लिख नहीं सकता ।
 १०. मम स्त्री संस्कृतं वक्तुं शक्नोति=मेरी स्त्री संस्कृत बोल सकती है ।
 ११. तत्र उपविश, यत्र बालकः स्पपिति=वहाँ बैठ, जहाँ बालक सोता है ।
 १२. अत्र बालकः नास्ति=यहाँ बालक नहीं है ।
 १३. तर्हि स कुत्र अस्ति इति अहं न जानामि=तो वह कहा है यह मैं नहीं जानता ।
 १४. स इदानीं उपरि अस्ति=वह अब ऊपर है ।
 १५. त्वं नीचैः गच्छ=तू नीचे जा ।

शब्द

- | | |
|----------------------------|------------------------------|
| त्यजति=छोड़ता है । | त्यजसि=तू छोड़ता है |
| त्यजामि=छोड़ता हूँ । | त्यजस्व=छोड़कर । |
| त्यक्तुं=छोड़ने के लिये । | हस्तौ=दोनों हाथ । |
| प्रक्षालयति=(वह) धोता है । | प्रक्षालयसि=(तू) धोता है । |
| प्रक्षालयामि=धोता हूँ । | प्रक्षालयितुं=धोने के लिये । |
| प्रक्षालय=धो । | मुखं=मुँह । |
| पादौ=दोनों पाँव । | प्रक्षालनं=धोना । |
| कठिनं=सखत । | त्यज=छोड़ । |
| प्रथमं=पहिले । | जहः=मूर्ख |

१. स हस्तौ पादौ च प्रक्षालयति=वह हाथ और पाँव धोता है ।
 २. अहं वस्त्रं प्रक्षालयामि=मैं कपड़ा धोता हूँ ।
 ३. त्वं किं इदानीं प्रक्षालयसि=तू क्या अब धोता है ?
 ४. त्वं इदानीं एव किमर्थं सत् प्रक्षालयसि=तू अभी किस लिये उसे धोता है ।

५. अथ सायक ले जल आनय वस्त्रं च प्रक्षालय=आज साय-
काल जल ला और वस्त्र धो ।

६. त्व अचूतं किमर्थं न त्यजसि=तू असत्य बोलना क्यों

७. स असत्य शीघ्रं एव त्यजति=वह असत्य को जल्दी ही
छोड़ देता है ।

८. प्रथमं दस्तौ पादौ च प्रक्षालय=पहिले हाथ और पाव धो ।

९. पश्चात् भोजनं कुरु=पीछे भोजन कर ।

१०. प्रातः पयं चक्षिष्य मुरा च प्रक्षालय=सवेरे ही चूठ और
मुँह धो ।

११. स प्रातः उत्तिष्ठति बहिः गच्छति तत्र मुरा प्रक्षालयति=वह
सवेरे ही चठकर बाहर जाता है और
वहाँ मुँह धोता है ।

१२. स स्नानं जलं न पिबति=वह गरम जल नहीं पीता ।

१३. अहं शंते जलं न पिबामि=मैं ठंडा जल पीता हूँ ।

१४. त्वं तत्र गच्छ वस्त्रं च प्रक्षालय=तू वहाँ जा और कपड़ा धो ।

१५. जहं न पठति=मूर्ख नहीं पढ़ता ।

१६. स धाम्नकः मूढः नैव अस्ति=रह व लकड़ मूढ़ नहीं है ।

पुंलिङ्गः "अस्मत्" शब्दः ।

१ प्रथमा	अहं	मैं
२ द्वितीया	मां	मुझे
३ तृतीया	मया	मैंने
४ चतुर्थी	महा	मेरे लिये
५ पंचमी	मत्वा	मेरे से
६ षष्ठी	मम	मेरा
७ सप्तमी	मयि	मुझ में

किं करोति ? स प्रातः उत्थाय तपः आचरति । यज्ञमित्रः भूमित्रस्य पुत्रः अस्ति । स तं मुनिं प्रणम्य अत्र आगच्छति । स मुनिः कस्मात् स्थानात् अत्र आगतः इति त्वं जानासि किम् ? स मुनिः कस्मात् माम् अत्र आगतः अहं नैव जानामि । यज्ञमित्रः जानाति । हे मित्र किं त्वं जानासि ? स मुनिः अयोध्यानगरात् अत्र आगतः । कदा आगतः इति अहं न जानामि । स सर्वं शास्त्रं जानाति ।

पाठ २०

पाठक ! इस समय तक आपके कन्नीस पाठ हो चुके हैं, और आपके पास उपयोगी अर्थात् नित्य व्यवहार में उपयुक्त होने वाले बहुत शब्द आ चुके हैं, अगर आपने ये शब्द स्मरण किये होंगे तथा उस उस पाठ में जो जो वाक्य दिये हैं, उनकी पद्धति की ओर ध्यान देकर, उन वाक्यों को अच्छी प्रकार बरूठ किया होगा, तो निःसन्देह दैनिक व्यवहार के उपयोगी कतिपय वाक्य आप पढ़ सकेंगे । प्रत्येक पाठ में आपके पास दस बीस उपयोगी शब्द आते हैं, और जो पाठक उनका उपयोग अधिक करेंगे वे संस्कृत भाषा जल्दी सीख सकेंगे ।

आज के पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, परन्तु जो शब्द और वाक्य पूर्वोक्त कन्नीस पाठों में आ चुके हैं उनकी ओर आज द्वारा याद कीजिये, ताकि वे भूल न जायें । अगर आप विवश भूलेंगे तो आप बने नहीं बढ़ सकेंगे, हम ऐसे क्रम से वाक्य देने का यत्न करते हैं कि शब्दों को बरूठ किये बिना ही शब्द आप ही स्मरण हो जायें । तथापि हमारा प्रयत्न सफल होने के लिये आप का दृढ़ अभ्यास भी तो होना चाहिये ।

आप नये संस्कृत वाक्य बनाने के समय डरते होंगे, कि शापद

परीक्षा

सूचना—पाठकों के इस समय तक बीस पाठ हो चुके हैं। यहाँ उचित है कि पाठक पूर्ण पाठों को दुबारा पढ़ कर सब शब्द तथा वाक्य स्मरण करें। और इन प्रश्नों का उत्तर देने के पश्चात् इक्कीसवें पाठ को प्रारम्भ करें।

परीक्षा के प्रश्न

(१) निम्न शब्दों के सन्धि कीजिये:—

इ + ई	आ + औ
आ + इ	उ + अ
अ + ए	इ + आ
औ + आ	ऐ + इ

(२) निम्न शब्दों की सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप कीजिये:—

रामः । देवदत्तः । ग्रामः । इन्द्र । नृपति । भूपतिः । भानुः ।
कर्तुः । कर्तृ । धर्तृ ।

(३) निम्न शब्दों के पञ्चमी के एक वचन के रूप लिखिये:—

नरपतिः । विश्वमानुः । वसुः । कः । अस्मद् । भोक्तृ ।
पातृः । रथः । कविः । शत्रुः ।

निम्न वाक्यों के अर्थ कहिये ।

(१) किं त्वं अद्य ग्रामं न गच्छसि ? (२) स तत्र गत्वा किं करोति ? (३) अहं रात्रौ ग्रामाद् बहिः न गच्छामि । (४) स दिया यत्र शुभ्र अपि भवति । (५) अहं परश्वः हरिद्वारं गत्वा गंगाजलं आनेष्यामि । (६) पर्यंतस्य शिखरं समुत्थं नास्ति । (७) तेन उत्तमं पुस्तकं उचितम् । (८) स हनन्त्या पठति, पठित्वा भोजनं करोति । (९) रवेः प्रकाशो भवति । (१०) नृपतेः प्रसादेन

तेन धनं प्राप्तम् । (११) मुनिना भोदकः न भक्षितः । (१२) स
रात्रौ भोजनं न करोति । (१३) सेनापतिना सैन्यं अत्र आनीतम् ।
(१४) वह्निना सर्वं गृहं दग्धम् । (१५) वाल्मीकिना रामायणं
रचितम् । (१६) व्यासेन महाभारतं लिखितम् ।

(५) निम्न वाक्यों का संस्कृत कीजिए:—

१ कब वह नगर को जायगा । २ अब तू कहाँ जाता है ।
३ भोज, तू वहाँ क्यों नहीं जाता । ४ हे भाई ! तू वहाँ शीघ्र
जा । ५ जहाँ तू दिन में जाता है वहाँ वह रात्रि में जाता है ।
६ वहाँ वह कैसे परसों जा सकता है । ७ तू अब धन को जा,
मैं नगर को जाऊँगा और मेरा भाई गाँव को जायगा । ८ मैं घर
जाऊँगा । ९ तू वहाँ जल्दी जा । १० आज बिष्णु शर्मा आ गया
११ मैं परसों स्नान करूँगा ।

पाठ ११

रेखा=लकीर ।

लोभः=लालच ।

सिद्धं=तैयार ।

शुद्धं=सुच्छ ।

धायुः=हवा ।

नगरे=शहर में ।

स्वभावः=आदत ।

वेपः=पहनाव ।

मार्जारं=बिल्ली को ।

अखं=च दे को ।

आकाशः=आकाश ।

तारकाः=तारागण ।

१. तव भोजनं सिद्धं अस्ति इति त्वं जानासि किंतेरा भोजन
तैयार है ऐसा तू जानता है क्या ?

२. भो मित्र ! अहं न जानामि=हे मित्र ! मैं नहीं जानता ।

३. एतत् ज्ञात्वा भोजनाय कथं न आगमिष्यामि=यह जानकर

१ दग्धं=जला ।

भोजन के लिये कैसे नहीं आऊँगा ।

४. प्रातः एव उत्तिष्ठ । व्यायाम च कुरु=सवेरे ही उठ और व्यायाम कर ।

५. त्वं प्रातः वनं किमर्थं गच्छसि=तू सवेरे वन को क्यों जाता है ।

६. सत्र प्रातः शुद्धः वायुः भवति=वहाँ सवेरे शुद्ध हवा होती है ।

७. किं नगरे शुद्धः वायुः न भवति=क्या शहर में शुद्ध वायु नहीं होता ।

८. नगरे शुद्धः वायुः कदापि न भवति=शहर में शुद्ध वायु कभी नहीं होती ।

९. एवं अत्र सायंकाल पर्यन्तं स्थातुं शक्नोषि किम्=तू यहाँ शाम तक ठहर सकता है क्या ?

१०. स अतीव दुर्बलः जातः अतः गन्तुं न शक्नोति=वह बहुत दुर्बल हो गया है, इसलिए चल नहीं सकता ।

११. त्व इदानीं ऊवरितः असि, अतः अल्पं अग्नं भक्षय=तू अब उबर चुका है, इसलिये थोड़ा अन्न खा ।

१२. स किमर्थं मार्जारं ताडयति=वह किस लिये बिल्ली को मारता है ?

१३. स कदा नीरोगः भविष्यति=वह कब नीरोग होगा ?

१४. आकाशे तारकाः पर्य=आकाश में तारे देख ।

१५. बालकः वने क्रीडति किम्=बालक वन में खेलता है क्या

भानु =सूर्य ।

अस्तसमये=सूर्य डूबने के समय

उदयसमये=उदयकाल में

उदयते=उगता है ।

हसन=हसना ।

प्रतिमा=मूर्ति ।

रजकः=घोषी । गृहीत्वा=लेकर ।

दुग्धपानार्थं=दूध पीने के लिये ।

गोदुग्धं=गाय का दूध ! नमनं=नमस्कार ।

आलोकचित्रं=फोटोग्राफ ।

१. एष भानुः आकाशे उदयते ! = यह सूर्य आकाश में निकलता है ।
२. यदा भानुः उदयते तदा आकाशः रक्तो जायते = जब सूर्य निकलता है तब आकाश लाल होता है ।
३. यथा उदय-समये तथा अस्त-समये अपि भवति = जैसा उदय काल में वैसा अस्त समय में भी होता है ।
४. भद्रसेनः अतीव दरिद्रः अस्ति इति त्वं न जानासि किम् = भद्रसेन अत्यन्त दरिद्र है, यह तू नहीं जानता क्या ।
५. पश्य स किमर्थं हसति = देख वह क्यों हंसता है ।
६. अहमदः मार्गे पतितः स हसति = अहमद रास्ते पर गिर पड़ा इसलिये वह हंसता है ।
७. किं पतद् वरं अस्ति = क्या यह ठीक है ।
८. एवं हसनं वरं नैव अस्ति = इस प्रकार हंसना ठीक नहीं है ।
९. इदानीं सः रजकः वस्त्रं कुत्र नयति = अब वह घोषी वस्त्र कहां ले जाता है ।
१०. रजकः प्रातः एव वस्त्रं गृहीत्वा कूर्पं गच्छति = घोषी सुबेरे ही वस्त्र लेकर कूर्प पर जाता है ।
११. स प्रातः गत्वा वस्त्रं प्रक्षालयति = वह वहां जाकर वस्त्र धोता है ।
१२. स परकीयां गौं किमर्थं गृहं आनयति = वह दूसरे की गाय किस लिये घर में लाता है ।

१३. स दुग्धपानार्थं मां आनयति=इह दूध पीने के लिये गाय लाता है ।

१४. गोदुग्धं त्वं पिबसि किं=गाय का दूध तू पीता है क्या ?

१५. गोदुग्धं मिष्टं भवति अतः न दू एव अहं पिबामि=गाय का दूध मीठा होता है । इसलिये बही मैं पीता हूँ ।

१६. शृणु ! अथ अहं तत्र नैव गच्छामि=सुन ! आज मैं वहाँ नहीं जाऊँगा ।

पुल्लिग में 'युष्मत्' शब्द

१. प्रथमा	त्वं	तू
२. द्वितीया	त्वां	तुम्हें
३. तृतीया	स्वया	तू ने
४. चतुर्थी	तुभ्यं	तेरे लिये
५. पंचमी	स्वत्	तुम्ह से
६. षष्ठी	तव	तेरा
७. सप्तमी	स्वयि	तुम्ह में

स्थातुं=बैठने के लिये ।

उस्थातुं=उठने के लिये ।

असितुं=बैठने के लिये ।

भोक्तुं=खाने के लिये ।

पातुं=पीने के लिये ।

स्वप्तुं=सोने के लिये ।

जेतुं=विजय पाने के लिये ।

वृत्तुं=बोलने के लिये ।

स्वीकर्तुं=स्वीकार करने के लिये ।

गणयितुं=गिनने के लिए ।

चोरयितुं=चोरने के लिये ।

हसितुं=हंसने के लिये ।

पाठयितुं=पढ़ने के लिए ।

मांशुं=मांजने के लिये ।

ताडयितुं=मारने के लिये ।

आगरितुं=आगने के लिये ।

चिन्तयितुं=चिन्तार करने के लिये ।

- प्रष्टुं=देखने के लिये । स्मर्तुं=याद करने के लिये ।
भक्षयितुं=खाने के लिये ।

चाक्य

१. एवं प्रष्टुं गच्छ=तू पूछने के लिये जा ।
२. स तत्र अन्नं भोक्तुं गच्छति=वह वहाँ अन्न खाने के लिये जाता है ।
३. अहं जलं पातुं अत्र आगतः=मैं जल पीने के लिये वहाँ आया ।
४. ईश्वरदत्तः स्वप्नुं स्वगृहं गतः=ईश्वरदत्त सोने के लिये अपने घर गया ।
५. बालकः पठितुं न इच्छति=बालक पढ़ने के लिए नहीं चाहता ।
६. सेनापतिः जेतुं वयमं करोति=सेनापति विजय पाने के लिये लोभ कर रहा है ।
७. एवं अज्यापदस्य समीपे तं प्रश्नं प्रष्टुं गच्छसि हि ?=तुम - गुरु के पास वह प्रश्न पूछने के लिये जाते हो क्या ?
८. आः ! विष्णुरार्मा तत्र शीघ्रं गन्तुं यावति=अरे ! विष्णुरार्मा वहाँ जल्दी जाने के लिये दीड़ता है ।
९. स गुरुं प्रणम्य अभ्ययनं करोति=वह गुरु को नमन कर के अभ्ययन करता है ।

सरल चाक्य

१ हि एवं तस्य गृहे तिष्ठामि ? । २ अहं आचार्यस्य समीपे कैदं पठितुं नायं गच्छामि । ३ एवं तस्मात् स्थानात् अयातुं न इच्छामि हिम् । ४ स आसनम् अयातुं अत्र न इच्छति । ५ एवं कदा मामं गन्तुम् इच्छसि । ६ अहं बने गत्वा व्यामं हन्तुं इच्छामि । ७ केन

सह त्वं वनं गमिष्यति । ८ अहं अद्य रात्रौ सरदार-दिलीपसिंहेन
सह वनं गमिष्यामि । ९ केन दिलीपसिंहेन सह त्वं गन्तुम् इच्छसि ।

१० यः दिलीपसिंहः अमृतसर-नगरे निवसति । ११ कस्य स पुत्रः ।

१२ स सरदार कर्तारसिंहस्य पुत्रः ज्वालासिंहस्य च भ्राता अस्ति ।

१३ अहं अपि तं द्रष्टुं आगमिष्यामि । १४ देवशर्मा इदानीं कुत्र
गतः । १५ यत्र विश्वदेवः गतः तत्र एव देवशर्मा अपि गतः । १६
देवदत्तः पुष्पमालां गृहीत्वा धावति । १७ किमर्थं स धावति । १८ स
शीघ्रं गृहं गन्तुम् इच्छति अतः एव धावति । १९ तेन द्रव्यं दृष्ट्वा पठि-
तम् । २० परंतु मया द्रव्यं अदृष्ट्वा एव पठितम् । २१ यदि स वेदं पठति

तर्हि त्वं अपि वेदं पठ । २२ प्रातःकाल अथाय ईश्वरस्य स्मरणं
कर्तव्यम् । २३ प्रातःकाल अथाय विद्याभ्यासः कर्तव्यः । २४ प्रातः
काले अभ्यासे कृते विद्या सत्त्वरं आगमिष्यति । २५ विद्यां विना
व्यर्थं जीवनम् । २६ स तत्र गत्वा आगतः किं ?

१ क्या तू उसके घर रहता है । २ मैं गुरु के पास वेद पढ़ने
के लिये हमेशा जाता हूँ । ३ तू उस स्थान से बैठना नहीं चाहता
है क्या । ४ वह आसन से बैठना भी नहीं चाहता । ५ तू कब गाँव
को जाना चाहता है । ६ मैं घन जाकर बाघ को मारना चाहता हूँ ।

१ निवसति=रहता है । २ भ्राता=भाई । ३ द्रष्टुं=देखने के
लिये । ४ अदृष्ट्वा=न देकर ।

५ स्मरण=याद । ६ विद्याभ्यासः=पढ़ना । ७ अभ्यासे कृते=
अभ्यास करने पर । ८ व्यर्थ जीवनं=जिंदगी व्यर्थ है ।

७ किसके साथ तू बन को जायगा । ८ मैं आज सरदार दिलीपसिंह के साथ जाना चाहता हूँ । ९ कौन से दिलीपसिंह के साथ जाना चाहते हो । १० जो अमृतसर में रहता है ! ११ किसका वह लड़का है । १२ देवशर्मा आज यहाँ नहीं है । १३ तू पर जा मैं नीचे जाता हूँ । १४ जलदी जलेबियों ले आ ।

पाठ २२

स्मृत्वा=स्मरण करके

ज्ञानं=ज्ञान

सदाचारः=सदाचार

शृंगयेरं=अदरक

स्मरति=वह स्मरण करता है

स्मरति=तू स्मरण करता है

स्मरामि=स्मरण करता हूँ

गणयति=वह गिनता है

स्थानं=जगह

सकलं=सम्पूर्ण

विषये=विषय में ।

शास्त्रस्य=शास्त्र का ।

स्मरिष्यति=स्मरण करेगा ।

स्मरिष्यसि=तू स्मरण करेगा

स्मरिष्यामि=स्मरण करूँगा ।

चोरयति=चुराता है ।

वाक्य

१. स स्मृत्वा स्मृत्वा वदति=वह स्मरण कर करके बोलता है ।
२. यस्य ज्ञानं नास्ति तस्मिन् विषये ॥ किमर्थं वदति=जिसके ज्ञान नहीं है उस विषय में वह क्यों बोलता है ।
३. सदाचार एव धर्मः अस्ति=सदाचार ही धर्म है ।
४. शृंगयेरं त्वं भक्षयसि किं=अदरक तू खाता है क्या ?
५. देवदत्तस्य स्थानं त्वं जानासि किं=देवदत्त का स्थान तू जानता है क्या ?
६. इदानीम् तु न जानामि=अब तो नहीं जानता ।
७. परन्तु स्मृत्वा वदिष्यामि=परन्तु स्मरण करके बताऊँगा ।

- म. तस्य गृहं अतीव दूरं अस्ति=उसका घर बहुत ही दूर है ।
 इ. तत्र त्वं इदानीं किमर्थं गन्तुम् इच्छसि=वहाँ तु अब क्या जाना चाहता है ?
 ०. स शस्त्रस्य सर्वं ज्ञानं जानाति=वह शास्त्र का सब ज्ञान जानता है ।
 १. यदि त्वं तद् ज्ञातुं इच्छसि तर्हि आगच्छ=अगर तू उसे जानना चाहता है तो आ ।
 २. त्वं घृतं कथं पिबसि=तू घी कैसे पीता है ?
 ३. अहं तु न पातुं शक्नोमि=मैं तो नहीं पी सकता ।
 ४. परमं कथं अहं पिबामि=देख कैसे पीता हूँ ।

शब्द

- व पुः=राहु ।
 तः=हाथ
 लिङ्य=मलिनता ।
 क्रीय=बेच कर ।
 णासि=तू खरीदता है ।
 लोक्यति=देखता है ।
 इ=यदि ।
 =अथवा ।
 केशः=केश ।
 रोचते=पसन्द है ।
 मापवटीः=कचौरी ।
 क्रीणाति=बह खरीदता है ।
 क्रीणामि=खरीदता हूँ ।
 कृष्णः=काला ।
 मा=नहीं ।
 विलोक्यति=देखता है ।
 . मालिन्यं वर्म नास्ति=मलिनता अच्छी नहीं है ।
 वि. तस्य केशः अतीव कृष्णः अस्ति=उसके केश बहुत काले हैं ।
 स. यदि रोचते तर्हि गृहाण=अगर पसन्द है तो ले ।
 गं. न रोचते चेत् मा कुरु=अगर पसन्द नहीं है (कितो) न कर ।
 (५) मे. छ 'चेत्' शब्द वाक्य के पश्चात् आता है, परन्तु उसका
 ॥ में अर्थ पहिले लिखा जाता है तथा "तो" यह शब्द सश्रुत
 हुआ भी भाषा में अर्थ से बोझा जाता है ।

५. किं इदानीं क्रीणासि पुष्पं फलं वा=क्या अब खरीदता है फूल या फल ?

६. न अहं इदानीं पुष्पं क्रीणामि नापि फलम्=न मैं अब फूल खरीदता हूँ न फल ।

७. तर्हि किमर्थं अत्र मार्गं तिष्ठसि=तब क्यों यहाँ मार्ग पर ठहरता है ?

८. मम मित्र इदानीम् अत्र आगमिष्यति=मेरा मित्र अब यहाँ आवेगा ।

९. स किं आनेष्यति=वह क्या लायेगा ?

१०. स इदानीं मापद्यतोः भक्षयार्थं आनेष्यति=वह अब कच्चीरी खाने के लिये लायेगा ।

११. स दुग्धं विक्रीय आगच्छति=वह दूध बेच कर आता है

दकारान्तः लिंगः 'तद्' शब्दः

१ प्रथमा	सः	वह
२ द्वितीया	तं	उसको
३ तृतीया	तेन	उसने
४ चतुर्थी	तस्मै	उसके लिये
५ पंचमी	तस्मात्	उस से
६ षष्ठी	तस्य	उसका
७ सप्तमी	तस्मिन्	उस में

दकारान्तः पुलिङ्गो 'यद्' शब्दः

१ प्रथमा —	यः	जो
२ द्वितीया	यं	जिसके
३ तृतीया	येन	जिसने

३ चतुर्थी	यस्मै	-	जिस के लिये
५ पंचमी	यस्मात्		जिससे
६ षष्ठी	यस्य		जिसका
७ सप्तमी	यस्मिन्		जिसमें

१. येन सह त्वं वदसि स न साधुः अस्ति=जिसके साथ तू बोलता है, वह उत्तम मनुष्य नहीं (है)।
२. यस्मै त्वं धनं दातुं इच्छसि तत्र नास्ति=जिसके लिये तू धन देना चाहता है, वह वहाँ नहीं है।
३. यस्य गृहं अग्निना दग्धं, स अत्र आगतः=जिस का घर आग से जला, वह यहाँ आ गया है।
४. यस्मिन् पात्रे दुग्धं रक्षितं, तत् पात्रं मित्रम्=जिस घरतन में दूध रखा था वह घरतन टूट गया।
५. यस्मात् ग्रामात् त्वं इदानीम् आगतः तस्य किं नाम अस्ति=जिस गाँव से तू अब आया उसका क्या नाम है?
६. यं त्वं पश्यसि सः कः अस्ति=जिसको तू देखता है वह कौन है।
७. यः पुस्तकं पठसि स एव मम भ्राता अस्ति=जो पुस्तक पढ़ता है वह भी मेरा भाई है।
८. यस्मै धनं दातुं इच्छसि सिं स दरिद्रः अस्ति=जिसको धन देना चाहते हो क्या वह दरिद्र है?
९. येन सह वदसि तं एवं कथय=जिसके साथ बोलते हो उस को ऐसा कह।
१०. यः कूपस्य जलं पातुम् इच्छसि तस्मै कूपस्य एव जलं देहि=

जो घूर्ण का जल पीना चाहता है उसके
लिप घूर्ण का ही जल दे ।

११. तथा यः गंगाजलं पातुम् इच्छति तस्मै शुद्धं गंगाजलं देहि—
वैसा ही गंगाजल पीना चाहता है उसके
लिये शुद्ध गंगाजल दे ।
सरल वाक्य

१ श्रीगणेशाय नमः पत्रं आगतम् । २ अहं पत्रं पठामि । ३ देव-
दत्तः ऋषिः प्रीतिः । ४ पश्य ? स युवा लक्ष्मणशर्मा अत्र
आगतः । ५ विष्णुदत्तेन रामायणं नाम पुस्तकं आर्यभाषायां
लिखितम् । ६ तेन शूरेण व्यासः हतः । ७ स आचार्यः सदा
अत्र पद्य निवसति । ८ यदा स पाठशालां गच्छति तदा दर्श-
नादन-समयः भवति । ९ यदा त्वं गंगाजलं आनेष्यसि तदा
घूर्णस्य जलं अपि आनय । १० मध्याह्नमस्यः जातः ।

पाठ २३

“प्रीणाति” “स्वरीदता है” इस के बदले “वि” लगाने से
“वेचता है” ऐसा अर्थ होता है, देखो:—

प्रीणाति=बढ़ स्वरीदता है प्रीणाति=बढ़ स्वरीदता है

प्रीणामि=स्वरीदता है प्रीत्या=स्वरीद कर

सूची=सुई नीला=नीली, बेड़ा

विप्रीणीते=बढ़ वेचता है विप्रीणीते=बढ़ वेचता है

विप्रीणे=वेचता है । विप्रीण=वेचकर ।

१ आगतं=आया । २ नाम=नामक । ३ आर्यं भाषा=हिन्दी
भाषा । ४ दश यजे ।

समीपं=पास

कंठः=गला

वाक्य

१. अधुना त्वं आपणं गत्वा किं क्रीणासि=अब तू बाजार जाकर जाकर क्या खरीदता है।

२. अहं पुस्तकं मसीपात्रं लेखनीं च क्रीणामि=मैं पुस्तक, दवात और कलम खरीदता हूँ।

३. यत्र त्वं स्थास्यसि अहमपि तत्र स्थातुं इच्छामि=जहाँ तू ठहरेगा मैं भी वहाँ ठहरना चाहता हूँ।

४. यत् त्वं लेखितुं इच्छसि, तद् अत्र लिख=जो तू लिखना चाहता है, वह यहाँ लिख।

५. नवनीतं विक्रीय, घृतं च क्रीत्वा, आगच्छ=मक्खन बेचकर और घी खरीद कर, आ।

६. अद्यश्चः आपणो पुराणं मलिनं च घृतं मस्ति=आज-कल बाजार में पुराना और मलीन घी है।

७. यदि तत्र नवीनं शुद्धं स्वादु च घृतं नास्ति=अगर वहाँ नया शुद्ध और मीठा घी नहीं है।

८. तर्हि तद् न ज्ञानय=तो उसको न ला।

९. अहं शुद्धं घृतं एव भक्षयामि=मैं शुद्ध घी ही खाता हूँ।

पूर्व स्थल में कहा है कि स्वर आगे आने से अनुस्वारका 'म' बन जाता है, उदाहरण देखिये:—

ॐ “अहं+अपि” इन दो शब्दों का जोड़ “अहमपि” ऐसा होता है। शब्द के अन्त में जो नुक्ता होता है उसको अनुस्वार कहते हैं, जैसा “घृतं दुग्धं” इत्यादि इस अनुस्वार के आगे स्वर आने से उसका “म्” बनता है, जैसा “दुग्धं+अस्ति” इसका “दुग्धमस्ति” ऐसा होता है ॥

अहं अस्मि	अहमस्मि	मैं हूँ ।
त्वं इच्छसि	त्वमिच्छसि	तू चाहता है ।
दुग्धं आनय	दुग्धमानय	दूध ले आ ।
घृतं उत्तमं अस्ति	घृतमुत्तममस्ति	घी उत्तम है ।
त्वं औषधं आनय	त्वमौषधमानय	तू दवा ले आ ।

इस प्रकार संस्कृत में जोड़ होते हैं, इनको देख कर पाठकों को घबराना नहीं चाहिये, इस समय तक हमने जोड़ (जिन को संस्कृत में सन्धि कहते हैं) नहीं बताया, परन्तु अब बताना चाहते हैं, यदि पाठक थोड़ा सा ध्यान देंगे, तो उनको कोई कठिनाई नहीं प्रतीत होगी। जो जो जोड़ (सन्धि) हम देंगे उनको अलग-अलग शब्द हम नीचे टिप्पणी में देंगे, जिस से किन किन शब्दों का यह जोड़ है, यह पाठक जान सकेंगे, जैसे—

त्वमत्र आगच्छ=तू यहां आ

स दुग्धमानयति=वह दूध लाता है ।

त्वमिदानीं पुत्र गच्छसि=तू अब कहां जाता है ।

अहमत्र तिष्ठामि=मैं यहां ठहरता हूँ ।

जहां जहां इस प्रकार का जोड़ आवेगा, वहां वहां पाठकों को सोचना चाहिये कि किन २ शब्दों का यह जोड़ (सन्धि) हो सकता है ॥

पाठकों ने इस समय तक पुरिल्लग शब्दों को चलाने का प्रकार जान लिया है। प्रायः पन्द्रह शब्द सारों विभक्तियों में चलाकर

टिप्पणी—(१) त्वं अत्र, (२) दुग्धं आनयति (३) त्वं इदानीं
(४) अहं अत्र

बताये हैं । अगर पाठक उनकी ठीक स्मरण रखेंगे तो उनके समान शब्दों के रूप बनाने में उनके लिये कोई दिक्कत कहीं होगी । अब स्त्रीलिंग शब्दों के रूप किस प्रकार होते हैं यह बताना है । स्त्रीलिंग शब्दों के विषय में पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि कोई आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में नहीं है । आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हुआ करते हैं । जैसे लमा, कृपा, दया, भार्या, जाया, बालिका, गंगा, ब्रह्मपुत्र, विद्या, माला, लता, प्रविष्टा इत्यादि शब्द आकारान्त हैं । इनको आकारान्त इसलिये कहते हैं कि इनके अंत में 'आ' रहता है । अब इनके रूप देखिये—

आकारान्तः स्त्रीलिंगी 'विद्या' शब्द ।

१ प्रथमा	विद्या	विद्या
२ द्वितीया	विद्या	विद्या को
३ तृतीया	विद्याया	विद्या ने
४ चतुर्थी	विद्यायै	विद्या के लिये
५ पंचमी	विद्यायाः	विद्या से
६ षष्ठी	विद्यायाः	विद्या का
७ सप्तमी	विद्यायां	विद्या में
सम्बोधन	(हे) विद्ये	(हे) विद्ये

विद्या के समान चलने वाले आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

कृपा=दया	दया=कृपा, मेहरबानी
भार्या=स्त्री	बाला=लड़की
बालिका=लड़की	गंगा=गंगाजी
यमुना=यमुनाजी	गंगा=माला
शाला=गृह, घर	ब्रह्मपुत्रा=ब्रह्मपुत्र नहीं

लता=वेन	माला=माता
पुत्री=लड़की	आया=छो, धर्मपत्नी
प्रतिष्ठ=यश	सुता=लड़की
शकैरा=खाद, मिथी	पाठशाला=पाठशाला
धर्मशाला=धर्मशाला, सराय	प्रश=मियाऊ
वाक्य	

१. दयां कुह=दया कर
२. भार्यया सह रामचन्द्रः वनं गतः=छो के साथ रामचन्द्र वन को गया ।
३. यमुनायाः जलं आनीतम्=यमुनाजी का जल लाया ।
४. बालिकायाः वस्त्रम् आनय=लड़की का कपड़ा ले आ ।
५. सुता पुत्रं गता=लड़की कहां गई ?
६. दुग्धाय शर्करां देहि=दूध के लिये मिथी दे ।
७. शकैरया मिष्टं भवति=मिथी से मीठा होता है ।
८. धर्मशालायाः रक्तः कुत्र अस्ति=तराय का चौकीदार कहां है ?
९. अया बालिकया सह अद्य प्रार्थनं न गता=माता लड़की के साथ आज गांव को नहीं गई ।
१०. गंगायाः जलम् आनयामि=गंगा का जल लाया हूँ ।
११. ईश्वरस्य दया अस्ति=ईश्वर की दया है ।
१२. ईश्वरस्य कृपया सर्वं शुभं भवति=ईश्वर की कृपा से सब शुभ होता है ।
१३. तस्य शाला उत्तमा अस्ति=उसका मकान उत्तम है ।
१४. या कृष्णस्य सुता सा पातकस्य भार्या=जो कृष्ण की लड़की वह पातक की धर्मपत्नी ।
१५. तया कल्याणं दयानात् सा पुत्रमाप्ता आनीता=वुम ने जिस

स्थान से वह फूशों की माला लाई ।
सरल वाक्य .

१ स तत्र तिष्ठति । २ अहं अत्र क्रीडामि । ३ स पाठशालां
गत्वा पुस्तकं पठति । ४ त्वं शुद्धं गंगाजलं पिबसि । ५ त्वं तत्
स्मरसि किम् । ६ स स्वगृहं गत्वा अन्नं भक्षयति । ७ रामः तम्
पयं वदति । ८ शृणु, इदानीं हरिः देहली-नगरं गन्तुम् गच्छति ।
९ इदानीं तत्र न गन्तव्यमिति त्वं तं कथय । १० नरः ग्रामं गच्छति
किम् । अथकिम् स अद्य एव ग्रामं गमिष्यति । ११ चोरः धनं
चोरयति । पंडितः पुस्तकं पठति । धेनुः वनं गमिष्यति । १२ सा
पुत्रिका पुष्पमालां करोति । रामः फलं भक्षयति । १३ या गच्छति सा
एव गंगा भवति । १४ अद्य सा बालिका अम्बया सह वनं गता ।
१५ रामेण सह लक्ष्मण- वनं गतः । सीतया सह रामः वनं गतः ।
लक्ष्मणेन सह रामः वनं गतः ।

पाठ २४

पादुके=जूता

मेघः=मेढा

शृणोपि=तू सुनता है

मस्तकपीडा=सिर दर्द

घटिका=घड़ी

श्रुत्वा=सुन कर

श्रुतं=सुना

वृषभः=बैल

शृणोति=वह सुनता है

शृणोमि=सुनता हूँ

धूम्रयानं=रेल गाड़ी

अश्वः=घोड़ा

श्रोतुं=सुनने के लिये

स्मरणपुस्तकं=छाया

वाक्य

१. मम पादुके गृहाण तस्मै च देहि=मेरा खड़ाऊं ले और
उसको दे ।

२. पश्य तत् धूम्रयानं कथं शीघ्रं गच्छति=देख वह रेल गाड़ी

कैसी जल्दी जाती है ।

१. मेघः घावति परन्तु अश्वः विघ्नति=मेढा दीड़ता है, परन्तु घोड़ा रूढ़ा है ।

४. इह इदानीं श्रीकृष्णः हवनार्थं आगमिष्यति=यहां अब श्रीकृष्ण हवन करने को आवेगा ।

५. स इदानीं सन्ध्यां उपास्य पठनं आरभते=वह अब सन्ध्या करके पढ़ना आरम्भ करता है ।

६. एवं मां अघुना किं आह्लापयसि=तू मुझे अब क्या आह्ला करता है ?

७. शृणु, त्वम् इदानीं वने न गच्छ, अत्र एव तिष्ठ=सुन, तू अब वन को न जा (और) यहां ही ठहर ।

८. किं एवं कुशलः अस्मि इदानीम्=क्या तू निरोग है अब ?

९. अहमिदानीं कुशलः अस्मि=मैं अब कुशल हूँ ।

१०. ओ मित्र ! वैडुता कुत्र सन्ति=हे मित्र बाबल कहां हैं ।

११. स यथा श्रुतमस्ति तथा एव वदति=वह जैसा सुना है वैसे ही बोलता है ।

१२. यथा यथा स मालिन्यं त्यजति तथा तथा शुद्धो भवति=जैसे जैसे वह मलिनता छोड़ता है वैसे वैसे शुद्ध होता है ।

शब्द

कथां=कथा

उपदेशं=उपदेश

व्याख्यानं=व्याख्यान की

पंडितः=पंडित

अश्रयणाय=सुनने के लिये

उपासने=आराधना में

टिप्पणी—(१) अहं इदानीं (२) अतं अस्ति ।

शिवालये=शिवालय में	दास्यति=वह देगा
दास्यसि=तू देगा	दास्यामि=दूँगा
त्यक्त्वा=छोड़ कर	दृष्ट्वा=देख कर
स्थापय=रख	जल=चल, जल

वाक्य

१. त्वम् इदानीं पुत्रं गन्तुं इच्छसि ?=तू अब कहीं जाना चाहता है ?
२. अहमद्यः ॐ उपदेशं श्रोतुं गच्छामि=मैं आज उपदेश सुनने के लिये जाता हूँ ।
३. पुत्र अस्ति उपदेशः अद्य=रुहा है उपदेश आज ?
४. तत्र पद्याने पंडितः विश्वामित्रः उपदेशं दास्यति=वहा बाग में पंडित विश्वामित्र उपदेश देगा ।
५. न तत्र, पद्याने उपदेशः नास्ति, शिवालये अस्ति=नहीं नहीं, बाग में उपदेश नहीं है, शिवालय में है ।
६. कः वरं व्याख्यानं ददाति=कौन अच्छा व्याख्यान देता है ।
७. पंडितवरः देवप्रन एव उत्तमं व्याख्यानं ददाति=पंडित देवप्रन ही अच्छा व्याख्यान देता है ।
८. व्याख्यानं श्रवणाय आलस्यं त्यक्त्वा गच्छ=व्याख्यान सुनने के लिये आलस्य छोड़कर जा ।
९. प्रथमं शुद्धं जलं आनय पश्चाद् भोजनं कुरु=पहिले शुद्ध जल ला पीछे भोजन कर ।
१०. स अश्वं दृष्ट्वा किं स्मरति=वह घोड़ा देख कर क्या सोचता है ?

११. तत्रवायु' नास्ति, जलमपिच्छ' नैवास्ति=वहाँ वायु नहीं है और जल भी नहीं है ।
- १२ मदिरे माज्जर. नास्ति अतः दुरघ तत्र स्थापय=मदिर में बिछो नहीं है इस लिये दूध वहाँ रख
१३. एव गोदुरघ गृहीत्वा एव शिवालय गच्छ=तू गाय का दूध लेकर ही शिवालय को जा ।
- १४ स पंडितः कुत्र अस्ति इदानीं=वह पंडित कहाँ है अब ?

आहारान्तः स्त्रीलिङ्गो 'प्रतिज्ञा' शब्दः

१. प्रथमा	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा
२. द्वितीया	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा को
३. तृतीया	प्रतिज्ञाया	प्रतिज्ञा से
४. चतुर्थी	प्रतिज्ञाये	प्रतिज्ञा के लिये
५. पञ्चमी	प्रतिज्ञाया	प्रतिज्ञा से
६. षष्ठी	"	" या
७. सप्तमी	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा में
सप्तमी	(हे) प्रतिज्ञे	(हे) प्रतिज्ञा

आहारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के षष्ठी तथा षष्ठी के एक वचन के रूप एक जैसे ही होते हैं । इसलिये षष्ठी के रूप के स्थान पर (,,) ऐसा चिह्न दिया है । इसका मतलब यह है कि वहाँ का रूप ऊपर के रूप के समान ही होता है । आगे भी जहाँ जहाँ रूपों के नीचे (,,) ऐसा चिह्न दिया होगा, वहाँ वहाँ पाठक समझे की वहाँ का रूप पूर्ववत् ही होता है ।

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्द

इच्छा=स्वादिश	कामात्मता=विषयीपन, कामीपन
चिन्ता=फिकर	जिह्वा=जवान
दीप्ता=प्रत	मुष्ण=मोती
रेखा=लकीर	हन्या=लड़की
निद्रा=नींद	पूजा=सत्कार
पापाण्ड्विका=स्लेट	मूर्खता=पागलपन
मलिनता=गंदगी	धुधा=भूख
कथा=कहानी	गीता=गीता_जी
देवत=देवी	चेष्टा=प्रयत्न
आक्षा=हुकम	वाटिका=बाग
जरा=धुड़ापा	अपूजा=सत्कार न करना
पत्रिका=पत्र, पत्र	पूपला=खाँड की पूरी
रुचता=रूखापन	सन्ध्या=ध्यान
हरिद्रा=हल्दी	

वाक्य

१. स इच्छां करोति=वह इच्छा करता है ।
२. त्वया सा मुष्ण कुत्र स्थापिता ?=तू ने वह मोती कहाँ रक्खा ?
३. गीतायां किम् उक्तम् ?=गीता में क्या कहा है ?
४. तस्य आक्षया अहं इदं कार्यं करोमि=उसकी आज्ञा से मैं यह कार्य करता हूँ ।
५. त्वं देवतायाः पूजां कुरु=तू देवता की पूजा कर ।
६. तेन पत्रिका प्रेषिता किम् ?=उसने पत्र भेजा क्या ?
७. जरये किम् औषधम् ? धुड़ापे के लिये क्या दवा ?

८. हरिद्रायाः पीतः वर्णः=हल्दी का पीला रंग ।

९. तस्य कन्यया युक्ता न आनीता=उसकी लड़की ने मोती नहीं लाया ।

१०. मनुष्यः जिह्वा वदति=मनुष्य जवान से बोलता है ।

सरल वाक्य

१—रामः मित्रेण सह कुत्र तिष्ठति । आचार्यः शिष्येण सह वदति । गुरुः कुमारिकया सह कथां वदति । २—कन्यया सह स मनुष्यः उद्यानं गच्छति । किं स मनुष्यः प्रतिदिनं कन्यया सह उद्यानं गच्छति । अथ किम् । स पुरुषः प्रतिदिनं सायंकाले पञ्च-वादन समये भ्रमणाय कन्यया सह उद्यानं गच्छति । ३—तदा तत्र स्वं अपि गच्छति किम् । अथ किम् । अहं अपि तस्मिन् एव समये उद्यानं गच्छामि । ४—रामाय नमः । ईश्वराय नमः । नमः ते । नमस्ते । तस्मै नमः । अर्थायै नमः । ५—वृक्षात् फलं पतति । पर्वतात् घृक्षः पतति । नगरात् जनः आगच्छति । सडागात् जलं आनयामि । उद्यानात् पुष्पं आनयति । आपणात् वस्त्रं आनय ।

पाठ २५

स्थापयति=बह रखता है ।

स्थापयामि=रखता हूँ

नित्यं=नित्य

पृतं=किया

स्रवति=चूता है

स्थापयितुं=रखने के लिये

मग्नः=टेपल, मंजा

गतः=गया

स्थापयति=बू रखता है

प्रत्येकं=हर एक

परमेश्वरं=ईश्वर की

स्थापनं=रखना

स्थापयित्वा=रख कर

स्थापनाय=रखने के लिये

विष्टरः=कुरसी

आगतः=आ गया

संस्थाप्य=रख कर

विरोध =मुकाबला

वाक्य

- १ नित्य परमेश्वर स्मृत्वा कर्म कुरु=नित्य परमेश्वर का स्मरण करके कार्य कर ।
- २ स मम पुस्तकं कुत्र स्थापयति=यह मेरी पुस्तक कहाँ रखता है ?
- ३ यत्र मञ्च अस्ति तत्र स तत् स्थापयति=जहाँ टेबल है वहाँ वह वैसे रखता है ।
- ४ स तत्र दीप स्थापयितु गत =वह वहाँ दीप रखने के लिये गया है।
- ५ त्व मसीपात्र कुत्र स्थापयितु इच्छसि=तू दवात कहाँ रखना चाहता है ?
- ६ स तत्र फल स्थापयित्वा अत्र आगत =वह वहाँ फल को रख कर वहाँ आया ।
- ७ कृत कर्म स्मरे=किया कर्म स्मरण कर ।
- ८ अत्र स्थित्वा कर्म कुरु नोचेत् अत्र न तिष्ठ=यहाँ रह कर कार्य कर, नहीं तो यहाँ न बैठ ।
- ९ यदि धर कर्म कर्तुमिच्छसि तर्हि एव अत्र तिष्ठ=अगर श्रेष्ठ कार्य करना चाहता है तो ही यहाँ रह ।
१०. नोचेद् यत्र इच्छसि तत्र द्रुत गच्छ=नहीं तो जहाँ चाहता है वहाँ शीघ्र जा ।
११. अह निर्धन अस्मि पुस्तक पठितुमिच्छामि=मैं निर्धन हू पुस्तक पढ़ना चाहता हूँ ।
१२. स मये गृहीत्वा अत्र एव आगच्छति=वह टेबल लेकर यहाँ ही आता है ।

ॐ कर्तुं इच्छसि ।

(१) पठितुं इच्छामि ।

शब्द

आलेख्य=तस्वीर	कस्य=किसका
तस्य=उसका	उपविश=बैठ
उपविशति=(वह) बैठता है	उपविशसि=(तू) बैठता है।
उपविशामि=बैठना हूँ	उपविश्य=बैठकर

वाक्य

१. पतन् कस्य आलेख्यम् अस्ति=वह किस का चित्र है।
२. स पुरुषः श्रुतमपि न स्मरति=वह मनुष्य सुना हुआ भी नहीं स्मरण रखता।
३. एवं तस्य व्याख्यानं शृणोपि किम्=तू उसका व्याख्यान सुनता है क्या?
४. अत्र एव उपविश व्याख्यानं च शृणु=यहाँ ही बैठ और व्याख्यान सुन।
५. स तत्र एव उपविश्य सर्वं पश्यति=वह वहाँ ही बैठकर सब कुछ देखता है।
६. कः अत्र उपविश्य आलेख्यं करोति=कौन यहाँ बैठकर तस्वीर खेचता है।
७. श्रीधरः अत्र स्थित्वा आलेख्यम् आतिरिचति=श्रीधर यहाँ ठहर कर चित्र खेचता है।
८. स पलमेव पुनः पुनः वदति=वह कदा कदा ही फिर फिर बोलता है।
९. यदि त्वम् अत्र एव उपविशसि तर्हि अहं त्वां द्रव्यं दास्यामि=

अगर तू यहां बैठेगा तो मैं तुझे द्रव्य दूंगा ।

१०. रा किमर्थं सदा शिवालयं गच्छति=वह क्यों हमेशा मन्दिर जाता है ।

११. स तत्र गत्वा संख्यामुपास्ते, ईश्वरं च स्मरति=वह वहां जाकर संख्या करता है और ईश्वर का स्मरण करता है ।

१२. अहं राम इथम्, अत्र न स्थापयामि=मैं अपनी गाड़ी, यहाँ नहीं रखूँगा ।

१३. मम विष्टरः कुत्र अस्ति=मेरी कुर्सी कहाँ है ।

१४. यत्र हाः स्थापितः तत्र एव अस्ति=जहाँ कल रखी थी वहाँ ही है ।

ईकारान्त स्त्रीलिंग 'नदी' शब्दः ।

१ प्रथमा	नदी	नदी
२ द्वितीया	नदीम्	नदी को
३ तृतीया	नद्या	नदी ने
४ चतुर्थी	नदी	नदी के लिये
५ पञ्चमी	नद्याः	नदी से
६ षष्ठी	"	" का
७ सप्तमी	नद्याम्	नदी में

सम्बोधन (हि) नदि हे नदी

नदी शब्द के समान चलने वाले शब्द—

मातुलानी, मातुली=मामा की छो

पितृभगिनी=पिताकी बहिन मातृभगिनी=माताकी बहिन

(१) संख्यां उपास्ते ।

मातामहो=माता की माता	भगिनी=बहिन
उर्वा=पृथ्वी	ब्राह्मणी=ब्राह्मण क स्त्री
पितामहो=पिता की माता	कुडलिनी=जलेबी
नीली=नीला रंग	कुमारी=लड़की
कमलिनी=कमल की धेनु	

इन के सब विभक्तियों के रूप बनाकर पाठक उन से बहुत वाक्य बना सकते हैं ।

सरल वाक्य

१ यज्ञदत्तात् देवदत्तः पुस्तकं गृह्णाति । २ सोमदत्तात् ब्राह्मणः घनं गृह्णाति । ३ ब्राह्मणः गङ्गायात् रक्तं कमलं आनयति । ४ रामस्य रावणेन सह युद्धं भवति । रावणस्य रामेण सह युद्धं भवति । भीमस्य जरासंधेन सह युद्धं जातम् । जरासंधस्य भीमसेनेन सह युद्धं जातम् । ४ सत्र हरिः अरित । वं हरिं परय । हरिणा पुस्तकं लिखितम् । हरये नमः कुरु । हरेः लेखनीम् आनय । इदं हरेः गृहं अस्ति । हरो भक्तिं कुरु ।

पाठ २६

आक्रोशाति=चिन्तावा हे	पुरो=नगर, शहर
गर्जति=बढ़ गरजता है	गर्जसि=तू गरजता है
गर्जामि=गरजता हूँ	कीटर्षा=कैसा
षाट्=निश्चय से	सिंहः=शेर

१ भवति=होता है । २ जातं=हो गया । ३ हरेः=हरी से । ४ हरेः=हरी का ।

पलये=गोल

आंगमं=आंगन

चपधि=स्टूल

घटिका=घड़ी

वृथा=व्यर्थ

शूकर=सूअर

तूष्णीं=चुपचाप

महिष=भैसा

वाक्य

१. बने सिंहः गर्जति, ग्रामे शूकरः गर्जति=बन में शेर गरजता है ग्राम में सूअर गरजता है ।
२. त्वं वृथा किमर्थं गर्जसि=तू व्यर्थ क्यों गरजता है ?
३. आकाशे मेघः अधुना गर्जति=आकाश में मेघ अब गरजता है ।
४. रघुने सिंहः साय प्रातः च गर्जति=बाग में शेर सायंकाल तथा प्रातःकाल गरजता है ।
५. यदि त्वं तत्र न भविष्यसि तर्हि तत् कथं ज्ञास्यसि=अगर तू वहाँ न जायगा तो उसे कैसे जानेगा ।
६. त्वं इदानीमेव ओपधातयं गच्छ ओपधं च आनय=तू अभी धवाएाने को जा और एवा ले आ ।
७. यदि त्वं मुद्गौदनं भक्षयिष्यसि तर्हि वरं भविष्यति=अगर तू खिचड़ी खायेगा तो अच्छा होगा ।
८. स अपूपं दुग्धं च भक्षयितुमिच्छति=वह पूड़ा और दूध खाना चाहता है ।
९. सिंहः कदापि अन्नं न भक्षयति=शेर कभी अन्न नहीं खाता है ।
१०. यद्यं इदानीमेव स्नात्वा शीघ्रमागमिष्यामि=मैं अभी स्नान कर के जल्दी आऊँगा ।

टिप्पणी—१ इदानीं एव । २ भक्षयितु इच्छति । ३ शीघ्रं आगमिष्यामि ।

११. शुद्धं घृतं वस्त्रं देहि=शुद्ध, घोया हुआ वस्त्र तुझे दे ।

भोजनात्=भोजन से

अभ्यन्तरे=अन्दर

परिवारकः=नौकर

नगरात्=शहर से

ग्रामात्=गाँव से

गृहात्=घर से

कृपात्=कुछ से

प्रायः=बहुधा

वाक्य

१. भूहि, एवं सन्ध्यां करोषि न वा=बोल, तू सवेरे सन्ध्या करता है वा नहीं ?

२. वद. एवं तत् पुस्तकं पठसि वा=बतजा, तू वह पुस्तक पढ़ता है वा नहीं ?

३. यद् अहं स्वामाज्ञापयामि तत् कर्म शीघ्रं कुरु=जो मैं तुझे आज्ञा करता हूँ वह कार्य जल्दी कर

४. नोचेत् स्वाम् अधुना पथ तादयामि=नहीं तो तुझे अभी ताड़ना करूँगा ।

५. अहं भोजनात् पूर्वं किमपि कर्म कर्तुं न इच्छामि=मैं भोजन के पूर्व कोई भी कार्य करना नहीं चाहता ।

६. हे परिवारक ! कपाटं दृष्ट्वा त्वं अहमभ्यन्तरे आगन्तुमिच्छामि=हे नौकर ! दरवाजा खोल मैं अन्दर आना चाहता हूँ ।

७. यद् अहं वदामि तत् एवं न शृणोषि किञ्च=जो मैं बोलता हूँ वह तू नहीं सुनता है क्या ?

८. यदि त्वं सद्यैः वदसि तदा अहं सत्र भाषणं श्रोतुं शक्नोमि=अगर तू जैसा बोलेंगा तो मैं तेरी बात सुन सकूँगा ।

टिप्पणी—१ किं अपि । २ अहं अभ्यन्तरे । ३ आगन्तुं इच्छामि ।

६ ॥ नगरात् नगरं गच्छति=यह (एक) शहर से (दूसरे) शहर को जाता है ।

१० स प्रामादं बहिः गत्वा बने गतः=वह गाँव से बाहर जाकर बने को गया ।

११ स मनुष्यः कूपात् जलमानयति=वह मनुष्य कूँ-से जल लाता है ।

१२ स इदानीमेव? गृहात् बहिर्गतः=वह अभी घर से बाहर गया है ।

१३ स पुनः कदा गृहमागमिष्यति=वह फिर कब घर आवेगा ।

१४ स प्रायः सायंकालमागमिष्यति?=वह प्रायः शाम को आवेगा ।

१५ सुतः रक्षति=सड़का रक्षा करता है ।

१६ कुमारी तिष्ठति=सड़की ठहरती है ।

१७ अहम् अत्र लिखामि=मैं यहाँ लिखता हूँ ।

१८ मातामही नीचैः स्वपिति=माता की माया नीचे सोती है ।

१९ तस्य भ्राता वरं न लिखति=उसका भाई अच्छा नहीं ।

२० कः त्वम्=कौन तू (है) ?

२१ स कः अस्ति=वह कौन है ?

२२ स दूरं तिष्ठति=वह दूर ठहरता है ।

२३ तव वषात कुत्र अस्ति=तेरा जूता कहाँ है ?

२४ तस्य भ्राता शीघ्रं न आगमिष्यति=उसका भाई जल्दी नहीं आवेगा ।

ॐ जलं आनयति ।

? इदानीं घव ।

ॐ गृह आगमिष्यति ।

? कास आगमिष्यति ?

२५. एष कः अस्ति ?=यह कौन है ?

२६. तव भ्राता कः अस्ति=तेरा भाई कहां है ।

२७. स किं लिखति=वह क्या लिखता है ।

सरल वाक्य

(२) तस्मै कुंडलिनीं देहि । (२) तस्य सुतः दुग्धं पिबति ।
(३) तस्य भ्राता गृहं न गच्छति । (४) धनं दत्त्वा फलं गृहाण ।
(५) मित्राय पत्रं लिख । (६) तस्मै पुष्पं देहि । (७) यदा त्वं
स्वपिपि तदा तव भ्राता कुत्र भवति । (८) स वनं गत्वा फलं
भक्षयति । (९) यदा स वनं गतः तदा अहं न गतः । (१०) स
मां न ताडयति । (१२) स तं एव किमर्थं ताडयति । (१२) त्वं
तस्य पुस्तकं गृहीत्वा शीघ्रम् अत्र आगच्छ । (१३) स त्वान्
जानाति किम् ? (१४) तस्य पुत्रः पुस्तकं चोरयति । (१५) कः
त्वाम् अद्य भोजनं दास्यति ।

पाठ २७

अटति=वह घूमता है

अटामि=घूमता हूँ

अटितु=घूमने के लिये

अटिष्यसि=(तू) घूमेगा

पक्षं=पक्षी हुआ

अटसि=तू घूमता है

अटित्वा=घूम कर

अटिष्यति=(वह) घूमेगा

अटिष्यामि=घूमूँगा

पठितं=पढ़ा हुआ

शब्द

१. कृष्णचन्द्रः नित्यं ग्रामाद् ग्रामं अटति=कृष्णचन्द्र नित्य
(एक) गाँव से । दूसरे] गाँव को घूमता है ।

२. तं कुमारं पश्य किं स करोति इति=जस लड़के को देख वह
क्या करता है ?

३ स भोजनाय पक्कं म न पानाय जल च इच्छति=वह भोजन के लिये पका हुआ अन्न और पाने के लिये जल चाहता है।

४. स पठितमपि पाठ न स्मरति=वह पढ़े हुए पाठ को भी नहीं स्मरण करता।

५ स द्रव्यं दृष्ट्वा धान्यं क्रीणाति=वह द्रव्य देख कर धान खरीदता है।

६ स रात्रौ किमपि न भक्षयति=वह रात्रि में कुछ भी नहीं खाता।

७ सूर्यं दृष्ट्वा जन उचिष्ठति=सूर्य को देखकर मनुष्य उठता है।

८ तथा तारका दृष्ट्वा मनुष्य स्वपिति=वैसा ही सितारे देख कर मनुष्य सोता है।

९ स सूर्यं दृष्ट्वा अदितुमिच्छति=वह हमेशा व्यर्थ धूमना चाहता है।

१०. स इदानीं किं करोति इति अहं ज्ञातुमिच्छामि=वह अब क्या करता है यह मैं जानना चाहता हूँ।

११. शीघ्रं रथमानयार्थं अहं अन्यं नगरात्तुमिच्छामि=जल्दी गाड़ी ले आ मैं दूसरे गाँव को जाना चाहता हूँ।

१२ इदानीं मेघ गर्जति अतः यदि न गच्छ=अब मेघ गरजता है, इस कारण बाहर न जा।

शब्द

महं=याज्ञिक

पीडयति=वह दुःख देता है

पीडयति=तु दुःख देता है

पीडयामि=तु मुझ देता हूँ

ऊर्ध्वं=ऊपर, पश्चाद्

उपरि=ऊपर

किं पक्कं अन्न। † अदितु इच्छामि। ‡ ज्ञातु इच्छामि।

? रथ भानय। § गतु इच्छामि।

यति=सन्वासी

वृत्तस्य=वृत्त के

प्रतीयते=म लूम होता है

यद्=बहुत

आत=यक

खड=दुःख

वाक्य

१. पश्य स यातः कथं शीघ्रं शीघ्रं यावसि=देख वह यातक
कैसा जल्दी जल्दी दौड़ता है ।

२. भी मित्र इदानीं मां बुभुक्षा अतीव पीडयति=हे मित्र ! अब
मुझे भूख बहुत दुःख देती है ।

३. त्वं महा पक्वम् अन्नं दातुं शक्नोसि किम्=तू मुझे पका हुआ
अन्न दे सकता है क्या ?

४. भोजनं तु उर्ध्वं त्वं शीतं जलमपि शक्नुमिच्छसि किं=
भोजन के पश्चात् ठण्डा जल भी पीना चाहता
है क्या ?

५. यदि त्वं शीतं जलमपि आनेतुं शक्नोसि तर्हि शीघ्रं आनय=
अगर तू ठण्डा जल भी ला सकता है तो जल्दी
ले आ ।

६. यद् त्वं इच्छसि तद् अहमानेयामि=जो तू चाहता है वह
मैं लाऊँगा ।

७. एतद् अन्नम् अतीव उष्णम् अस्ति=यह अन्न बहुत गरम है ।

८. मम भ्राता इदानीं कुत्र गतः न जानामि=मेरा भाई अब कहाँ
गया है मैं नहीं जानता ।

९. स उद्यमे वृत्तस्य अब इदानीं हरपिति=वह बह याग में वृत्त
के नीचे अब सोता है ।

१०. स बहु कर्म कृत्वा श्रान्तः इति प्रतीयते=वह बहुत कार्य करके थका है ऐसा मालूम होता है।
११. स तत्र तूष्णीमेव स्थितः किमपि न वदति=वह वहाँ चुपचाप बैठा है कुछ भी नहीं बोलता।
१२. स स्वपाठं स्मरति इति प्रतीयते=वह अपना पाठ स्मरण करता है ऐसा मालूम होता है।
१३. स स्वगृहमिदानीं रक्षति अतः बहिः गन्तुं न शक्नोति=वह अब अपने घर की रक्षा करता है इसलिये बाहर जा नहीं सकता।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'धेनु' शब्द

१. प्रथमा	धेनुः	गौ
२. द्वितीया	धेनुँ	गौ को
३. तृतीया	धेनुना	गौ ने
४. चतुर्थी	धेनवे धेनवे }	गौ के लिये
५. पञ्चमी	धेनोः धेन्वाः }	गौ से
६. षष्ठी	धेनोः धेन्वाः }	गौ का
७. सप्तमी	धेनौ धेन्वाम }	गौ में
सं०	(हे) धेनो	हे गौ

चतुर्थी से सप्तमी पर्यन्त चारों विभक्तियों में संकयपन के रूप दो दो होते हैं यह बात ध्यान में अवश्य रखनी चाहिये।

रज्जु=रस्सा

हनु=डुन्ही

तनु=शरीर

वाक्य

१. मातृदेवो भव=माता को देवता समझ ।
२. पितृदेवो भव=पिता को देवता समझ ।
३. आचार्यदेवो भव=गुरु को देवता समझ ।
४. अतिथिदेवो भव=अतिथि को देवता मान ।
५. सत्यं श्रूय त्=सच बोल ।
६. प्रियं श्रूयात्=प्रिय बोल ।
७. सत्यं अप्रियं न श्रूयात्=अप्रिय सत्य न बोल ।
८. प्रियं असत्यं न श्रूयात्=प्रिय असत्य न बोल ।
९. सत्यात् परः धर्मः नास्ति=सत्य से परे दूसरा धर्म नहीं ।
१०. असत्यसमः न कः अपि अधर्म=असत्य के समान नहीं कोई भी अधर्म ।
११. इह पद्मि=यहाँ मा ।
१२. अः विसृष्टिः अस्ति=रक्त छुटी है ।
१३. शास्त्रेण चिना मनुष्यः अन्धः=शास्त्र के बिना मनुष्य अन्ध (है) ।

सरल वाक्य । संवादः ।

रामः—हे मित्र ! त्वं कुत्र गच्छसि इदानीम् ?

विष्णुः—इदानीमहं भ्रमणार्थं गच्छामि ।

रा०—कः समयः इदानीम् ।

वि०—इदानीं सप्तवादन-समयः ।

रा०—इदानीं भ्रमणाय बहिः गत्वा पुनः कदा स्वगृहमागमिष्यसि

वि०—अहमवश्यमष्ट वादनसमये स्वगृहमागमिष्यामि ।

रा०—तर्हि अहमपि त्वया सह आगच्छामि ।

वि०—आगच्छ तर्हि शीघ्रम् । समय गच्छति ।

राम०—शीघ्रमागत^१ । क्षणं तिष्ठ ।

पाठ २८

“स्मर” के पृथक् “वि” लगाने से “विस्मर” रूप बनता है और उसका अर्थ ‘भूलना’ ऐसा होता है, देखिये —

स्मरति=स्मरण करता है

स्मरसि=स्मरण करता है

स्मरामि=स्मरण करता हूँ

स्मरिष्यसि=स्मरण करेगा

स्मरिष्यसि=तू स्मरण करेगा

स्मरिष्यामि=स्मरण करूँगा

त्वया=तूने

मया=मैंने

तेन=उसने

विस्मरसि=वह भूलता है

विस्मरसि=तू भूलता है

विस्मरामि=भूलता हूँ

विस्मरिष्यसि=भूलेगा

विस्मरिष्यसि=तू भूलेगा

विस्मरिष्यामि=भूलूँगा

तल्लेन=तल्ले ने

१ पुरुषेण=मनुष्य ने

पुत्रेण=पुत्र ने

वाक्य

१ यत् त्वं पठसि तत् सयंदा स्मरसि न वा=जो तू पढ़ता है उसे सदा स्मरण करता है वा नहीं ।

२ यद् अहं पठामि तद् कदापि न विस्मरामि=जो मैं पढ़ता हूँ वह कभी नहीं भूलता ।

३ यद्विषयविस्मरिष्यसि तर्हि कथं पठिष्यसि=अगर तू भूल

प्रकार भूलेगा तो कैसे पढ़ेगा ।

४. अहं अतः कर्त्तुं न विस्मरिष्यामि=मैं इसके पश्चात् नहीं भूलूँगा ।

५. यथा तव गुरुः आद्यापयति तथा कुरु=जैसा तेरा गुरु आद्या करता है वैसा कर ।

६. स मं पृथा पीडयति=वह मुझे व्यर्थ दुःख देता है ।

७. अतः अहं तं अवश्यं ताडयिष्यामि=इसलिए मैं उसको अवश्य पीटूँगा ।

८. स महिषः यस्य अस्ति=वह भैंसा किसका है ?

९. स महिषः नास्ति पृथगः अस्ति=वह भैंसा नहीं है, भैल है ।

शब्द

गर्त=गाया	आगर्त=आ गया
भक्षितं=खाया	दत्तं=दिया
स्वीकृतं=स्वीकार किया	दत्तं=दहा
नीतं=लिया	आनीतं=लाया
कृतं=किया	पीतं=पिया
क्षान्तं=क्षान्त किया	दृष्टं=प्राप्ति प्राप्त
जातं=उत्पन्न हुआ	उत्थितं=उठा हुआ
न्यतं=ठहरा हुआ	ताडितं=ताड़ना किया हुआ
गृहीतं=लिया	आद्यापितं=आद्या की
स्मृतं=स्मरण किया	विस्मृतं=भूला
श्रुतं=सुना	दृष्टं=देखा
पठितं=पढ़ा	उद्धाटितं=खोला
विहितं=बन्ध किया	निमित्तं=लिखा

ज्ञातं = जाना	विज्ञातं = जाना
प्रक्षालितं = धोया	क्रीडीत = खेला
रक्षित = रक्षा की	आरब्ध = आरम्भ किया
क्रोतं = खरीदा	विक्रीत = बेचा
अटित = घूमा	कथित = कहा

वाक्य

१. त्वया फलं नीत किं = क्या तू ने फल लिया ?
२. मया तत् अद्यापि न दृष्टम् = मैंने वह अब तक नहीं देखा ।
३. बालकेन वस्त्रं प्रक्षालितं = बालक ने कपड़ा धोया ।
४. मया शोभनं कर्म आरब्धम् = मैंने श्रेष्ठ कार्य आरम्भ किया ।
५. त्वया तत् कथं विस्मृतं = तूने वह कैसे भुला दिया ।

श्रुकारान्तः स्त्रीलिंग 'मातृ' शब्दः

१. प्रथमा	माता	माता
२. द्वितीया	मातर	माता-की
३. तृतीया	मात्रा	माता ने
४. चतुर्थी	मात्रे	माता के लिये
५. पंचमी	मातुः	माता से
६. षष्ठी	„	„ का
७. सप्तमी	मातरि	माता में
सम्बोधन	(हे) मातृ	(हे) माता

माता शब्द के समान चलने वाले शब्दः—

दुहितृ = लड़की	यातृ = चलने वाली
ननद = ननद, पति की बहिन	ननट = ननद, पति की बहिन

वाक्य

१. सर्वदा पद्यमः कर्तव्यः=सदा उद्योग करना चाहिये ।
२. उद्यमेन एव सुखं भवति=उद्योग से ही सुख होता है ।
३. भुक्त्या भदरोफलं भक्षणीयम्=भोजन करके बेर खाना चाहिये ।
४. अभुत्वा आमलकः पथ्यः=भोजन न करके आंवला हितकर (है)
५. एव बालकेन सह मीडसि=तू लड़के के साथ खेलता है ।
६. अहं तु न मीडामि=मैं तो नहीं खेलता ।
७. स तव किमर्थं कोलाहलं करोति ?=वह वहां क्यों शोर करता है ?
८. यदि अहं क्रीडामि तर्हि गुरुः मां ताडयिष्यति=अगर मैं खेलूँगा तो गुरु मुझे मारेगा ।
९. तव मातुः किं नाम अस्ति=तेरी माता का क्या नाम है ।
१०. तस्य पितुः नामः यक्षदत्तशर्मा इति=उसके पिता का नाम यक्षदत्तशर्मा ऐसा (है) ।
११. दुग्धं पीत्वा फलं भक्षयामि=दूध पीकर फल खाऊँगा ।
१२. अरतः शीघ्र प्रावति=घोड़ा जल्दी दौड़ता है ।

सरल वाक्य

(१) किमर्थं त्वं तत्र गत्वा मोदकं भक्षयसि । (२) मया नत कर्म न कृतम् । (३) दुर्जनः अन्यस्मै दुःखं ददाति । (४) सुमनः अन्यस्मै सुखं ददाति । (५) आद्यशो यदि परम । (६) पाटशाला सदा निपमेन गंतव्यम् । (७) मित्रेण सह कलहः न कर्तव्यः । (८) यदा गुरुः पाठं कथयति तदा तत्र चित्तं देयम् । (९) इत्यस्तुतः न द्रष्टव्यम् । (१०) सहाकर्तुं दुग्धं पेयम् ।

तत्=यह

कर्म=उद्योग

अन्यस्मै=दूसरे के लिये

कलहः=मगड़ा

देयं=देने योग्य	द्रष्टव्यं=देखने योग्य
पेयं=पीने योग्य	दुर्जनं=दुष्ट मनुष्य
सुजनः=सज्जन	नियमः=नियम
चित्तं=मन, दिल	इतस्ततः=इधर उधर
सशर्करं=खाद के साथ	बदरीफल=बेर

सरल धाक्य

१ स यत् पठति तत् कदाऽपि न विस्मरति । २ अहं यत् शृणोमि तत् कदापि न विस्मरामि । ३ यथा गुरुः मां आज्ञापयति तथैव अहं करोमि । ४ त्वं बालकेन सह-किमर्थं व्रीडसि इदानीम् । ५ तं पुरुषं त्वं पश्यसि किम् ? ६ यदा यदा प्रकाशः न भवति तदा तदा दीपं प्रज्वालयेत् ।

पाठ २६

१. इदानीं त्वया किं कृतं=अब तूने क्या किया ?
 २. गृहं गत्वा अधुना मया अन्नं भक्षितं=घर जाकर अब मैंने अन्न खाया ।
 ३. तस्य पुस्तकं त्वया नीतं किं=उसका पुस्तक तूने लिया क्या ?
 ४. तेन तन् वरं अद्यापि न कृतम्=उसने वह अच्छा काम अब तक नहीं किया ।
 ५. तत् सर्वं शोभनं जातं=वह सब ठीक हुआ ।
 ६. यत् त्वया पुस्तकं गृहीतं तत् मम अस्ति=जो तूने पुस्तक लिया वह मेरी है ।
 ७. यत् त्वया आज्ञा पित तत् मया न श्रुतम्=जो तूने आज्ञा की
- १ सुनता हूं । २ वैसा ही । ३ जहामो ।

वह मैंने नहीं सुनी ।

८. किं त्वया न स्मृतं यत् तेन उक्तम्=क्या तुझे स्मरण नहीं जो उसने कहा था ।

९. यत् तेन उक्तं तत् सर्वं मया पूर्वं एव विस्मृतम्=जो उसने कहा यह सब मैंने पहिले ही सुना दिया ।

१०. यत् त्वया तत्र दृष्टं तत् सर्वं कथय=जो तूने वहाँ देखा वह सब कह ।

११. यदि त्वया तद् ज्ञातं तत् मामपि वद=अगर तूने उसे जान लिया तो मुझे भी कह ।

१२. यदि त्वया स्वगृहं रक्षितं तदिदं वदं कृतं=अगर तूने अपने मकान की रक्षा की तो अच्छा किया ।

१३. यदि त्वया अद्यापि वाश्रमं न विक्रीतम्=अगर तूने अब तक कपड़ा नहीं बेचा ।

१४. तदिदं तद् महा देहि=तो उसे मुझे दे ।

१५. यदि त्वया इदानीं पर्यन्तं द्वारं न वदूषादितं=अगर तूने अब तक दरवाजा नहीं खोला ।

१६. तत् केन वदूषादितं तत् शीघ्रं कथय=तो किसने उसे खोला यह शीघ्र कह ।

१७. तद् अहं न जानामि=वह मैं नहीं जानती ।

१८. त्वया जलं पीतं किम्=तूने जल पिया क्या ?

शब्द

ज्ञातिः=शिथिलता

रज्जु=निश्चय से

सत्यात्=सत्य से

अभ्युत्थानं=उदाई

मूलं=मूल

परः=प्रेष्ठ, दूसरा, भिन्न

प्रतिष्ठित=स्थित है

पिटृक =डबलरोटी

वाक्य

१. यदा यदा धर्मस्य ग्लानिः भवति=जब जब धर्म की शिथिलता होती है ।
२. तदा तदा अधर्मस्य अभ्युत्थानं भवति=तब तब अधर्म की चढ़ाई होती है ।
३. सत्यात् परः धर्मः नास्ति=सत्य से श्रेष्ठ दूसरा धर्म नहीं ।
४. असत्यात् परः अधर्मः न कः अपि अस्ति=असत्य से भिन्न अधर्म कोई भी नहीं है ।
५. त्वं सत्यं वदसि इति वर करोषि=तू सत्य बोलता है । यह ठीक करता है ।
६. कदापि असत्य न वद=कभी असत्य न बोल ।
७. सर्वं खलु धर्ममूलं सत्ये प्रतिष्ठितं=सब धर्म का मूल सत्य में स्थित है ।
८. यः सत्यं न वदति स असत्यवादी भवति=जो सत्य नहीं बोलता है वह असत्यवादी होता है ।
९. असत्यात् वारिद्वयं वर अस्ति=असत्य से गरीबी अच्छी है ।
१०. त्व सर्वदा असत्य किमर्थं वदसि=तू सर्वदा असत्य क्यों बोलता है ?
११. मया कदापि असत्य न उक्तं=मैंने कभी असत्य नहीं कहा ।
१२. यत् द्रव्यं मया रक्षितं तत् सर्वं त्वया त्यक्तं=जो द्रव्य मैंने रखा था वह सब तूने छोड़ दिया ।
१३. पुनः पुनः श्रुत्वा अपि लिखितुं न शक्नोमि=फिर फिर सुना हुआ भी (मैं) लिख नहीं सकता ।

१४. यत् जलं स्वया आनीतं तत् शुद्धं नास्ति=जो जल तू ने लाया है वह शुद्ध नहीं ।

१५. मया कृपात् जलम् आनीतम् अस्ति, अतः तत् शुद्धम् एव अस्ति=मैं कुँवे से जल लाया हूँ, इस लिये वह शुद्ध ही है ।

दकारान्तः स्त्रीलिङ्ग 'तत्' शब्द

१. प्रथमा	सा	वह	[स्त्री]
२. द्वितीया	सां	उसकी	[,,]
३. तृतीया	तया	उसने	[,,]
४. चतुर्थी	तस्यै	उसके लिये	[,,]
५. पञ्चमी	तस्याः	उससे	[,,]
६. षष्ठी	"	उसका	[,,]
७. सप्तमी	तस्यां	उस में	[,,]

तद् शब्द के पुलिङ्ग रूप पाठ २२ पृष्ठ ११७ पर दिये हुए हैं । पाठकों की चाहिये कि ये पुलिङ्ग रूपों में जो भिन्नता है उसकी ठीक प्रकार ध्यान में रखें । पुलिङ्ग शब्द के बदले पुलिङ्ग रूप आयेंगे और स्त्रीलिङ्ग रूप आयेंगे ये नियम हैं । निचले वाक्य ध्यान से देखने से इस नियम का पूरा पता लग जायगा :—

वाक्य

१. यः पुरुषः माम् दू आगतः स इदानीं अत्र नास्ति=जो पुरुष गाँव से आया वह अब यहाँ नहीं ।

२. या वालिका नगरं गता सा कस्य पुत्री ?=जो लड़की शहर गई वह किसकी पुत्री ?

३. तं पुत्रं तस्मिन् स्थाने परय=उस पुत्र को उस स्थान में देय ।

४. तां पुत्रीं तस्मिन् स्थाने परय=उस लड़की को उस स्थान में देय ।

४. अत्र तेन शोभनं व्याख्यानं दत्तम्=यहां उस ने अच्छा व्याख्यान दिया ।
५. स वरं व्याख्यानं ददाति=वह अच्छा व्याख्यान देता है ।
६. एवम् अत्र न कः अपि वक्तुं शक्नोति=इस प्रकार यहां कोई भी नहीं बोल सकता ।
७. स संस्कृतभाषायाम् प्रवीणः अस्ति=वह संस्कृत भाषा में प्रवीण है ।
८. यथा स्वामी सर्वदानन्दः प्रवीणः अस्ति=जैसा स्वामी सर्वदानन्द प्रवीण है ।
९. न तथापंडितः विश्वामित्र शर्मा=नहीं वैसा पं० विश्वामित्र शर्मा
१०. त्वया तस्य व्याख्यानं श्रुतं किम्=क्या तूने उसका व्याख्यान सुना ?
११. कदा स पुनः स्वनरं गमिष्यति=कब वह फिर अपने गांव को जायगा ।
१२. स इदानीं नैव गमिष्यति=वह अब नहीं जायगा ।
१३. अत्र स्थित्वा स किं कर्तुमिच्छति=यहां ठहर कर वह क्या करना चाहता है ।
१४. अत्र स्थित्वा स धर्मप्रचारं करिष्यति=यहाँ ठहर कर वह धर्म का प्रचार करेगा ।
१५. यदि स अत्र स्थास्यति तर्हि वरं भविष्यति=अगर वह यहां रहेगा तो अच्छा होगा ।

दकारान्तः स्त्रीलिङ्ग 'यद्' शब्दः

१ प्रथमा

या

जो

स्त्री

(१) कर्तुं इच्छति ।

२ द्वितीया	यां	जिस को	स्त्री
३ तृतीया	यया	जिस ने	"
४ चतुर्थ	यस्यै	जिस के लिये	"
५ पञ्चमी	यस्याः	जिस से	"
६ षष्ठी	"	जिसका	"
७ सप्तमी	यस्यां	जिस में	"

स्त्रीलिङ्गः 'किम्' शब्दः

प्रथमा	का	कीन	(स्त्री)
२ द्वितीया	कां	किस को	"
३ तृतीया	कया	किस ने	"
४ चतुर्थी	कस्यै	किस के लिये	"
५ पञ्चमी	कस्याः	किस से	"
६ षष्ठी	"	किसका	"
७ सप्तमी	कस्यां	किस में	"

वाक्य

१. का पुत्रिका पुस्तकं पठति=कीन सी लड़की पुस्तक पढ़ती है
२. या बालिका पाठशालां गच्छति सा एव पठितुं शक्नोति=जो लड़की पाठशाला को जाती है वह ही पढ़ सकती है।
३. यया पुस्तकं पठितं तस्यै धनं वस्त्रं च देहि=किस (स्त्री) ने पुस्तक पढ़ा है उसके लिये धन और कपड़ा दे।
४. यस्याः कृते त्वं तत्र गतः, सा न आगता किम्=जिसके कारण तू वहाँ गया, वह नहीं आई क्या ?
५. यस्यां पाठशालायां मम पुत्रः पठति, तत्र अपि तस्यां

५. तव धर्मपत्नी अत्र अस्ति किं । यदि अस्ति तर्हि तया किं
इदानीं कर्तव्यम्=तेरी धर्मपत्नी यहाँ है क्या ? अगर है तो उसने
क्या अब करना है ।

६. तस्मै जल देहि=उसके लिये जल दे ।

७. तस्याः वस्त्रे कुत्र अस्ति=उसका कपड़ा कहाँ है ?

८. तां पाठशालां पश्य तस्यां मम पुत्रः पठति=उस पाठशाला की
देख उसमें मेरा लड़का पढ़ता है ।

९. यत्र त्वं गच्छसि तत्र स न गच्छति किम् ?=जहाँ तू जाता है
वहाँ वहाँ नहीं जाता क्या ?

पाठ ३०

गजः=हाथी

लवपुर=लाहौर

विद्यालयं=पाठशाला की

शब्दः=शब्द

प्रयत्नः=उद्योग

प्रकाशः=प्रकाश

प्रदत्तादः=घरटे की आवाज

प्रथमः=पहिला

सर्वः=सारा

नैव=नहीं

महाचारी=महाधारी

उदेति=उगता है, निकलता है

अधिकारः=ओहवा

अंधकारः=अंधेरा

एकः=एक

द्वितीयः=दूसरा

वाक्य

१. पुस्तकं लेखनीं मसीपात्रं च मह्यं देहि=पुस्तक, कलम और
दवात मुझे दे ।

२. कोलाहलं ॥ कुह इति हरिदत्तं कथय=कोलाहल न कर ऐसा
हरिदत्त को कह ।

३. यत्र भूमिग्रः अस्ति तत्र त्वं शीघ्रं गच्छ=जहाँ भूमिग्र है

एव पठति=जिस पाठशाला में मेरा लड़का पढ़ता है तेरा भी
वहाँ ही पढ़ता है ।

६. तस्या देवताया भक्तिं धारय=उस देवता में भक्ति धारण कर ।

७. पठनस्य काजे तस्यां शब्द महान् भवति=पढ़ने के समय उस
(स्त्री) का शब्द बड़ा होता है

परीक्षा

अब तीस पाठ हो चुके हैं । अब आज पाठकों की परीक्षा
होनी है । अगर पाठक सब प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर दे सकेंगे तो
वे आगे बढ़ सकते हैं । अन्यथा उनको चाहिए कि वे पूर्व के तीस
पाठ प्रारम्भ से दुबारा पढ़ें और सब को ठीक ठीक स्मरण करें ।
जब तक विद्यार्थी स्मरण न होगा तब तक आगे बढ़ने से कोई
लाभ नहीं होगा ।

परीक्षा के प्रश्न ।

(१) निम्न शब्दों के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप लिखिये —
पुन्लिङ्गी शब्द ।

मार्ग । देव । भाग । घनगयः । कवि । अरि । भानुः ।
पितृ । भ्रातृ । सर्वः ।

स्त्रीलिङ्गी शब्द ।

-उपासना । दया । मातृ । विद्या । जिह्वा । नासिका । किम्
यद् । घेतु । नदी ।

(२) निम्न शब्दों के पंचम, छठीया, चतुर्थी तथा पञ्चमी के एकवचन
के रूप लिखिये :—

रामः । देवता । विष्णुः । कर्तुं । अस्मत् ।

(३) निम्न वाक्यों का भाषा में अर्थ लिखिये :—

स त्वां न जानाति किम् ? यदा म आगत तदा एव त्वं गतः ।
दशरथस्य पुत्रः श्रीरामचन्द्रः अस्ति । विश्वामित्रेण सह रामचन्द्रः
यनं गतः । तत्र का अद्य वृत्तिं भवति । सा बाला वस्मिन् गृहे
न पठति ।

(४) निम्न वाक्यों के उत्तर संस्कृत में ही दीजिये ।

तव किं नाम अस्ति ? इदानीं त्वं किं पठति ? श्रीकृष्णचन्द्रः
कस्य पुत्रः आसीत् ? श्रीरामचन्द्रेण केन सह युद्धं कृतं ? धर्मेण
किं भवति ?

(५) निम्न भाषा के वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये :—

मैं मदरसे को जाता हूँ । वह मुझे देखता है । राजा ने उसके
लिये धन दिया । सूर्य आकाश में आया । प्रातःकाल मैं सन्ध्या
कर । सवेरे उठ और स्नान कर ।

(६) आप कोई एक कथा संस्कृत में ही लिखने का यत्न कीजिये ।

(७) निम्न शब्दों के अर्थ कीजिये :—

उत्तिष्ठ । व्यायामः । पंचवादनसमयः । नागः । याचनः ।
मैत्रिकः । रविः । कीलाहलः । स्वपिम्बि । युवा । कुशलः ।
शुभं । जाया ।

पाठ ३१

हे सुविद पाठको ! इस समय तक आपने ३० पठ स्मरण
किये हैं और व्याकरण के नियमों का विरोध ज्ञान न होते हुए भी
आपने व्यापकारिक वास्तवीय संस्कृत भाषा में करने की कुछ योग्यता
प्राप्त की है ।

अब इसके पश्चात् थोड़ा थोड़ा व्याकरण का परिचय आप को
करने की आवश्यकता है, व्याकरण के जानने के लिये प्रथम संस्कृत
वाक्यों की घनावट पर तथा शब्दों की घटना पर एक दृष्टि डालनी

चाहिये अन्यथा व्याकरण के नियम ठीक ठीक ध्यान में नहीं आ सकते ।

व्यञ्जन और स्वर मिलकर संस्कृत के तथा भाषा के अक्षर बनते हैं जैसा देखिये :—

क+अ=मिलकर क बनता है ।

म+अ= ,, म बनता है

ल+अ= ,, ल ,, ,,

अर्थात् “कमल” शब्द की बनावट “क+अ+म+अ+ल+अ” इतने वर्णों से हुई है, इसी प्रकार :—

(र्+आ)+(म्+अ)=मिलकर “राम” शब्द बनता है ।

(प्+इ)+(त्+आ)=मिलकर “पिता” शब्द बनता है ।

(ष)+(द्+य्+आ)+(न्+अ+म्)=मिलकर “अद्यान” शब्द बनता है ।

(ई)+(श्+य्+अ)+(र्+अ.)=मिलकर “ईश्वरः” शब्द बनता है ।

(प्+उ)+(स्+त्+अ)+(क्+अ+म्)=मिलकर “पुस्तक ” शब्द बना है ।

(य्+अ+ + त्)=मिलकर “यत्” शब्द बना है ।

(द्+उ)+(ध्+अ.)=मिलकर “दिवः” शब्द बना है ।

पाठकों को ध्यात है कि वे इस अक्षर घटना तथा शब्द घटना की स्मरण में रहें । संस्कृत के अक्षर तथा शब्द जैसे लिखे जाते हैं, वैसे ही बोले जाते हैं, और जैसे बोले जाते हैं वैसे ही लिखे जाते हैं, वरुं अंग्रेजी के समान “लिखना कुछ और बोलना कुछ” वाली बात यहाँ नहीं है, इसलिये संस्कृत की शब्द घटना (Sporling स्पेलिंग—हिजे) वरुं अंग्रेजी की अपेक्षा सुगम है ।

संस्कृत में व्यञ्जन और स्वर आगने सामने आते ही जुड़

जाते हैं, जैसे देखिये :—

सं अपि=तमपि (तम्+अपि)

त्वं आगच्छ=त्वमागच्छ (त्वम्+आगच्छ)

यत् अस्ति=तदस्ति (यद्+अस्ति)

यत् अस्ति=यदस्ति (यद्+अस्ति)

इस प्रकार जोड़ हम आगे के पाठ में लिखेंगे इसलिये पाठकों को उचित है कि वे इस जोड़ की व्यवस्था को ध्यान में रखें, जहां जहां जोड़ आवेगा वहां वहां पुस्तक के नीचे टिप्पणी देकर उस शब्द को खोलकर भी बनायेंगे । अस्तु । जोड़ के विषय में इतना ही पर्याप्त है ।

अब कुछ वाक्य दिये हैं उनकी ओर पाठकों को ध्यान देना चाहिये, इन वाक्यों के अन्दर सक्त प्रकार के जोड़ दिये हैं :—

वाक्य

१. यदस्ति तत्र तदत्र त्वमानय=जो है वहाँ, वह यहाँ तू ले आ ।
२. रामः शीघ्रमागच्छति=राम जल्दी आता है ।
३. त्वमधुना पुस्तकं देहि=तू अब पुस्तक दे ।
४. तदधुना तत्र नास्ति=वह अब वहाँ नहीं है ।
५. न कदापि नैव असत्यं वदति=वह कभी असत्य नहीं बोलता ।
६. स पुनरमानयति=वह फिर लाता है ।

(१) यद्+अस्ति । (२) तद्+अत्र । (३) त्वम्+आनय । (४) शीघ्रम्+आगच्छ । (५) त्वम्+अधुना । (६) तद्+अधुना । (७) न+अस्ति । (८) वद+अपि । (९) न+अव । (१०) पुस्तक+आनय ।

५. त्वं कस्मै धनं ददासि	त्वं कस्यै धनं ददासि
६. यस्मै त्वं इच्छसि	यस्यै त्वं इच्छसि
७. येन मनुष्येण जलं पीतम्	यया पुत्रिकया जलं पीतम्
८. तस्मै देहि	तस्यै देहि
९. यः गच्छति	या गच्छति
१०. कः पर्वं वदति	का पर्वं वदति
११. सः वदति	सा वदति
१२. केन न पठितम्	कया न पठितम्
१३. कस्य गृहम् अस्ति	कस्याः गृहम् अस्ति

संस्कृत में यत्र लोपन

ॐ

अलमोढ़ा नगरे
चैत्रस्य शुक्ल-पञ्चाय मू.
रविवारसरे सं० १६३५.

मो प्रियमित्र कृष्णवर्मन्

नमस्ते ! तव यत्र अद्य एव लब्धम् । आनन्दः जातः । अहं तव
नगरं शीघ्रं न आगमिष्यामि । अत्र मम बहू कर्तव्यम् अस्ति ।
अहं यः हिम-पर्यटनं गमिष्यामि । तस्य स्नानस्य नाम त्वं जानासि
एव । तस्य पर्यटन-शिखरस्य नाम धवलगिरिः इति अस्ति । तस्य
दृश्यं अतीव सुन्दरम् अस्ति । यदि त्वं तत्र आगमिष्यसि तर्हि वरं
भविष्यति । यदि त्वं आगन्तुम् इच्छसि तर्हि वरं भविष्यति । यदि
त्व आगन्तुम् इच्छसि तर्हि मम मातरम् अपि त्वया सह आनय ।

सर्वं अत्र सुलभम् अस्ति । तव रुद्रेण पुत्रम् इच्छामि ।

तव मित्रम्

सीत.रामः

भो=हे	नमस्ते=तुम को नमस्कार
लब्ध=प्राप्त	आनन्द=खुशी
वर=अच्छा	बहु=बहुत
हिम=बर्फ	पर्वत=पहाड़
शिखर=(पहाड़ की) चोटी	दृश्य=सीन
कुशल=स्वास्थ्य	तपस्या=तप

सरल वाक्य

तत्र पुत्रिका कुत्र अस्ति । सा मात्रा सह हरिद्वार नगर गता । कदा सा पुन स्वगृहमागमिष्यति । यदा तस्या माता आगमिष्यति तदा एव तथा सह सा अपि आगमिष्यति । सा तत्र किं करोति । हृषीकेशनामके तीर्थस्थाने सा तपस्या करोति । कथं पुत्रिका तपस्या करोति । तत्र कन्या गुरुकुलम् अस्ति । तत्र सा अध्ययनं वक्तुम् इच्छति । तर्हि एव कथय । किमथम् असत्यं वदसि सा तत्र तपस्या करोति इति ।

पाठ ३२

शब्द के अन्त में जो लुप्तता अर्थात् अनुस्वार होता है उस का "म्" घनता है, और उसके सामने जो स्वर आता है उसके साथ वह मिल जाता है, और कोई स्वर न आए तो "म्" ही रहता है जैसे —

देव—देवम्	} इस प्रकार अनुस्वार का "म्" घनता है ।
इदानी—इदानीम्	
त्व—त्वम्	

वाक्य

१ देव तत्र गच्छति=देव (विद्वान्) वहा जाता है ।

२. तं देवं पश्य=उस देव को देख ।
 ३. देवेन ज्ञानं दत्तम्=देव ने (विद्वान् ने) ज्ञान दिया ।
 ४. देवाय जलं देहि=देव के लिये जल दे ।
 ५. देवात् द्रव्यं गृह्णामि=देव से द्रव्य लेता हूँ ।
 ६. देवस्य एतत् सर्वम् अस्ति=देव का यह सब है ।
 ७. देवे सर्वम् अस्ति=देव (ईश्वर) के अद्वर सब कुछ है ।
 ८. हे देव ! अत्र पश्य=हे देव ! यहाँ देख ।
 ९. रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति=राम दशरथ का पुत्र है ।
 १०. रामं दशरथः एव वदति=रामको दशरथ ऐसा बोलता है ।
 ११. कृष्णो जलं दत्तम्=कृष्ण ने जल दिया ।
 १२. देवदत्ताय पुस्तकं देहि=देवदत्त के लिये पुस्तक दे ।
 १३. लवपुरात् फलं आनय=लाहौर शहर से फल लेआ ।
 १४. रामस्य गणस्य च युद्धं ज्ञातम्=राम और रावण का युद्ध हुआ ।
 १५. तस्य गृहे मम वस्त्रम् अस्ति=उस के घर में मेरा कपड़ा है ।
 १६. हे देवदत्त ! त्वं युद्धं न कुरु=हे देवदत्त तू युद्ध न कर ।
 १७. बालकः उपरि अस्ति=बालक ऊपर है ।
 १८. ■ बालकं पश्य ! कथं स धावति=उस बालक को देख ! कैसे वह दौड़ता है ।
 १९. बालकेन स्नानं कृतम्=बालक ने स्नान किया ।
 २०. बालकाय मोदकं देहि=बालक को छह्द दे ।
 २१. बालकात् पुस्तकं गृह्णामि=बालक से पुस्तक ले ।
 २२. बालकस्य वस्त्रं रक्तमस्ति=बालक का कपड़ा लाल है ।
 २३. बालके दयां पुर=बालक पर दया कर ।
 २४. हे बालक ! स्वमुत्तिष्ठ=हे बालक ! तू उठ ।

शब्द

पालकः=पालनकर्ता

पानीयं=जल

पेटकः=संदुक

पुच्छं=दुम

कणः=घन का कण

दन्तः=दांत

तक्रम्=छाछ

घृतं=घी

ओदनं=चावल

खट्वा=चारपाई, खटिया

कपि=भंदर

वैर=रघुता

क्रिया

वव्रलति=(वह) जलती है

वव्रलसि=(तू) जलता है

वहति=(वह) उठता है

कुन्तति=(वह) कुतरता है

वव्रलामि=जलता हूँ

अप्ति=(वह) खाता है

अरिसि=(तू) खाता है

अद्मि=खाता हूँ

कुन्तसि=(तू) कुतरता है

कुन्तामि=कुतरता हूँ

निःसरति=(वह) निकलता है निःसरसि=(तू) निकलता है

वाक्य

१. मम गृहे अश्वः अस्ति=मेरे घर में घोड़ा है।

२. तस्य पुच्छं श्वेतम् अस्ति=उसकी दुम सफेद है।

३. स घृतं नैव अप्ति=वह घी नहीं खाता है।

४. तस्य दन्तः श्वेतः नास्ति=उसका दांत सफेद नहीं है।

५. अयं तस्य पेटकः नास्ति=यह उसका द्रुम नहीं।

६. अहम् ओदनं मत्स्य मि=मैं भात खाता हूँ।

७. ॥ ओदनं दुग्धेन सह अप्ति=वह चावल दूध के साथ खाता है।

८. त्वं कथं शर्करया सह ओदनं अरिसि=तू कैसे शर्करा के साथ

चावल खाता है ?

६. अहं तस्य छत्रं नयामि=मैं उसका छ.ता ले जाता हूं ।
 १०. मूयकः तस्य पुच्छं कृतंति=चूहा उसकी दुम काटता है ।
 ११. हे मित्र ! अधुना स्थानं गच्छ, तत्र मम भृत्यः अस्ति=हे मित्र
 अब बाग को जा, वहाँ मेरा नौकर है ।

सरल-वाक्य

१ एवं अत्र शीघ्रं ओदनम् आनय । २ अत्र जलम् अपि नास्ति । ३ तस्य पुस्तकं तव मित्रेण नीतम् । ४ तत्र दीपः उज्ज्वलति । ५ तस्य प्रकाशे पुस्तकं पठ । ६ स हि वदति इदानीम् । ७ अहं मम ग्रामम् अद्य गमिष्यामि । ८ यदि भूमित्रः अत्र अस्ति तर्हि तम् अत्र आनय । ९ राजा धीरं दृष्ट्वा धावति । १० यदा मम गृहे धीरः आगतः सदा त्वं पुत्र गतः ।

पाठ ३३

अ सीत्=था, हुआ था	राजा=नरेश, राजा
कृतं=किया	पुच्छं=झंग, लड़ाई
दत्तः=नारा, हनन किया	सह=साथ
ममूय=होगया था, हुआ था	
नैत्रं=ध्यान	नामधेय, नाम=नामवाला
अवर्त्मन्=मन्त्रालयन करके	राज्यं=राज्य
अकरोत्=करता था,	भार्या=स्त्री, धर्मपत्नी
नामधेया=नाम की	साध्वी=रतिव्रता

वाक्य

१. रामचन्द्रः कः आसीत्=रामचन्द्र कौन था ?
 २. रामचन्द्रः अयोध्यानामकस्य नगरस्य राजा आसीत्=रामचन्द्र
 अयोध्या नगरी का राजा था ।

३. तेन रामेण किं कृतम्-उस रामने क्या किया ?

४ रामेण युद्धे रावण हत =राम ने युद्ध में रावण को मारा ।

५. रावणः कः आसीत्=रावण कौन था ?

६. रावण लक्ष्मणामधेयस्य नगरस्य राजा आसीत्=रावण लक्ष्मण नगरी का राजा था ।

७ रावणेन सह रामस्य युद्धं किमर्थं अभूव=रावण के साथ राम का युद्ध किस कारण हुआ ?

८. रावण धर्मं त्यक्त्वा अधर्मम् अवलम्ब्य राज्यम् अकरोत्, अतः रावणेन सह रामेण युद्धं कृतम्=रावण धर्म को छोड़ अधर्म का अवलम्बन करके राज्य करता था, इसलिये रावण के साथ राम ने युद्ध किया ।

९ रामस्य का भार्या आसीत्=राम की स्त्री कौन थी ?

१० सीता नामधेया रामस्य भार्या अतीव माध्वी आसीत्=सीता नाम वाली राम की धर्मपत्नी अत्यन्त प्रतिप्रता थी ।

११. रामचन्द्रस्य माता का आसीत्=रामचन्द्र की माता कौन थी ?

१२ कीर्त्यानामधेया श्रीरामचन्द्रस्य माता आसीत्=कीर्त्या नाम वाली श्री रामचन्द्र की माता थी ।

१३. रावणस्य भ्राता कः आसीत्=रावण का भाई कौन था

१४. विभीषणः रावणस्य भ्राता आसीत्=विभीषण रावणका भाई था ।

१५. रामचन्द्रस्य लक्ष्मणनामधेयः कः पुत्र आसीत्=रामचन्द्र का लक्ष्मण नामक भाई था ।

१६ तथा भरतः शत्रुत्र अपि=उसी प्रकार भरत और शत्रुघ्न भी ।

१७. रामेण सह माध्वी सीता धनं गता आसीत्=राम के साथ

पतिव्रता सीता देवी बन में गई थी ।
 १८. रामेण सह लक्ष्मणः अपि वनं गतः=राम के साथ लक्ष्मण
 भी वन को गया था ।

१९. यथा रामेण राक्षसाः हताः तथा एव लक्ष्मणेन अपि राक्षसाः
 हताः=जिस प्रकार राम ने राक्षसों को
 मारा उसी प्रकार लक्ष्मण ने भी राक्षसों
 को मारा ।

२०. रामः धर्मेण राज्यं अकरोत्=राम ने धर्म के साथ राज्य किया ।

२१. अतः जनः रामे प्रीतिं अकरोत्=इस लिये लोग राम में प्रीति
 करते थे ।

शब्द

वार्ता=बात

नगरी=शहर

वार्तालाप=वार्तालाप, बातचीत

स्वरितं=शीघ्र

उदयं=जल

वृष्टि=वर्षा, धरती

एव=यह

मेघः=बदल

पत्र=पत्र, रस

रम्या=रमणीय

सा=यह

बहु=ऊँट

नयनं=आँख

गति=गमन दी

प्रकाशः=प्रकाश, रोशनी

मुषान्तरे=बम्बई में

द्रुतं=शीघ्र

पानीय=पानी

वाक्य

१. युद्धस्य वार्ता रम्या भवति=युद्ध की बात रमणीय होती है ।

२. सा नगरी अतीव रम्या अस्ति=यह शहर बहुत रमणीय है ।

३. कृष्णेन सह वार्तालापं कुरु=कृष्ण के साथ बातचीत कर ।

४. षट्स्य त्वरिता गतिः=ऊँट की दौड़ तेज (होती है)
 ५. अश्वस्य गमनमपि तथैव=घोड़े की दौड़ भी वैसी ही है ।
 ६. मेघात् वृष्टिः भवति=बादल से वृष्टि होती है ।
 ७. सूर्यात् प्रकाशः भवति=सूर्य से प्रकाश होता है ।
 ८. रात्रौ सूर्यः न भवति=रात्रि में सूर्य नहीं होता ।
 ९. अहं रामाय पत्र लिख मि=मैं राम के लिये पत्र लिखता हूँ ।
 १०. त्व पत्र शीघ्रं लिख=तु जल्दी पत्र लिख ।
 ११. पत्रस्य लेखनेन त्वि भविष्यति=पत्र लिखने से क्या होगा ?
 १२. एष यज्ञदत्तस्य पुत्र =यह यज्ञरत्न का पुत्र (है) ।
 १३. तव पुत्रः कुत्र अस्ति=तेरा पुत्र कहाँ से ।
 १४. मुम्बानगरे मम पुत्र अस्ति=बम्बई में मेरा पुत्र है ।

शब्द

पाथकः=रसोइया	यष्टि=सोटी
यष्टिका=सोटी	सूचका=सूई
द्वार=दरवाजा	गणहूप.=चुञ्जी
अनृतं=मसाला	कशा=चायुड
पपंटः=पापड़	मृत्पिण्ड =मट्टी का गोला
कसैरी=कैची	पटः=बख
महानसं=रसोई का स्थान	पारितोषिकं=बत्तीस, इनाम
महिषः=भैंसा	महिषे=भैंस, मशाराणी

क्रिया

आरोहति=(वह) चढ़ता है	आरोहति=(तू) चढ़ता है
आरोहामि=चढ़ना हूँ ।	उपविशति=(वह) बैठता है

(१) गमनं + अपि । (२) तथा + एव ।

धामयसि=(तू) धुमाता है	उत्तिष्ठामि=उठता हूँ
हसति=(वह) हंसता है	निक्षिपति=(वह) फेंकता है
सिचति=छिड़कता है	कतयति=(वह) काटता है

वाक्य

१. अहं पर्यटं भक्षयामि=मैं पापड़ खाना हूँ।
२. अयं पाचकः अस्ति=यह रसोइया है।
३. अयं स्थानात् अगच्छति=अगर स्थान से चोड़ा जाता है।
४. अथ मार्गे वदमः जातः=मात्र मार्ग में कीचड़ हो गया है।
५. तव वस्त्रं मलिनम् अस्ति=तेरा वस्त्र मलिन है।
६. त्वां दृष्ट्वा स हसति=तुम्हें देख कर वह हंसता है।
७. अहं तं दृष्ट्वा हसामि=मैं उसको देख कर हंसता हूँ।
८. यष्टिकया मूषकं ताडय=सोटी से चूहे को मार।
९. यदि त्वं कूरस्य जलं पातुम् इच्छसि तर्हि मया सह अगच्छ=अगर तू कूर का जल पीना चाहता है, तो मेरे साथ आ।
१०. अयन्ति-नगरात् तस्य मित्रं अथ अपि न आगतम्=अवन्ति शहर से उसका मित्र आज भी नहीं आया।

सरल वाक्य

१. पश्य स सूचिकायां सूत्रं निक्षिपति। २. स कतयति पत्रं वतयति। ३. स वत्स्याय गृहाद् अत्र एव आगतः। ४. महानमान धूमः उत्तिष्ठति। ५. अत्र धूमः अस्ति तत्र न गन्तव्यम्। ६. जनस्य गंडूषेण मुखं प्रक्षालयामि। ७. तेन पारितोषितकं प्राप्तम्। ८. तस्य महिषो दुग्धं ददाति। ९. अयं सैनिकः कथाया अर्थं वदति। १०. पाठशाखायां केनापि सह युद्धं न कुरु।

निम्न भाषा के वचनों का सम्प्रत कीजिए —

१. उस याचक को अन्न दो। २ जो लड़की पाठशाला को जानती है, वह किसकी है। ३ मैं घटा देखता हूँ। ४ तू बादल देखता है। ५ तेरा सड़क कहा है।

पाठ ३४

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

गमन=जाना

आगमन=आना

भक्षण=खाना

भोज =भोजन, रोटी

क्रीडन=खेलना

पान=पीना

दान=देना

आदा =लेना

हसन=हसना

स्वीकरण=स्वीकार करना

लेखन-लिखना

पत्र=पत्र

घटन-घटना

पात्र=वर्तन

शरीर=शरीर

अन्न=अन्न

संस्कृत में शब्दों के तीन प्रकार के लिंग होते हैं। कई शब्द पुल्लिङ्ग हैं, हैं कई स्त्रीलिङ्ग हैं और कई नपुंसकलिङ्ग हैं, शब्दों के लिंग पहिचानने के लिये कोई सामान्य नियम नहीं है, और जो नियम है वे इस समय पाठकों के ध्यान में नहीं आ सकते, इसलिए यहाँ नहीं दिये जाते।

सब अकारान्त नपुंसक—लिंग शब्दों के रूप अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के समान ही होते हैं, केवल प्रथमा तथा द्वितीया के रूप कुछ भिन्न होते हैं, देखिये —

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

१ प्रथमा

भोजन

भोजन

२ द्वितीया	भोजनं	भोजन को
३ तृतीया	भोजनेन	भोजन से
४ चतुर्थी	भोजनाय	भोजन के लिये
५ पंचमी	भोजनात्	भोजन से
६ षष्ठी	भोजनस्य	भोजन का
७ सप्तमी	भोजने	भोजन में

संशोधन

(हे) भोजन

(हे) भोजन

इसी प्रकार सब अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के विषय में जानना चाहिये । इन रूपों को देख कर पाठकों ने जान लिया होगा कि, प्रथमा द्वितीया के अतिरिक्त अन्य विभक्तियाँ अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग शब्दों की एक ही होती हैं ।

पाठकों ने देखा होगा, कि तृतीया विभक्ति का जो "न" है वह कई शब्दों में "ण" बनता है और कई शब्दों में "न्" ही रहता है, इसका पूरा पूरा नियम हम आगे द्वितीय विभाग में देने परन्तु पाठकों को यहाँ इतना ही ध्यान में रखना चाहिये कि जिन शब्दों में "र ध" ये अक्षर होते हैं प्रायः उन शब्दों के "न" का "ण" बनता है, परन्तु कई अवस्थाएँ ऐसी आती हैं कि जिनमें "न" की "ण" नहीं बनता:—

- | | |
|------------------|--------------------|
| (१) देवेन=देव ने | पुरुषेण=पुरुष ने |
| भोजनेन=भोजन से | (३) कृतेन=कृष्ण ने |
| गमनेन=गमन से | रथेन=रथ ने |
| (२) रामेण=राम ने | रावणेन=रावण ने |
| नरेण=नर ने | |

(१) देव, गमन, भोजन आदि शब्दों में "र, अक्षरा "ध" चलने होने से "ण" नहीं हुआ (२) राम, नर इन शब्दों में "र

और प" होने से "ण" बना है (३) वृष्ण, रथ, शवण, इन शब्दों में कुछ विशेष हालत न होने के कारण "ण" बना नहीं। इस विशेष हालत का वर्णन हम आगे करेंगे, इस विशेष अवस्था की परवा न करते हुए पाठकों को रूप बनाने चाहिये और वाक्यों में उनका प्रयोग करना चाहिये।

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

पुण्य=पुण्य	पातक=पाप
पोषण=पुष्टि	प्रचालन=घोना
ध्यान=ध्यान	ध्रमण=ध्रमण, धूमना
शीतनिवारण=शीत का निवारण	सत्य=सत्य
ज्ञान=ज्ञान	शूर्प=छत्र
फलक=पट्टा	जीरक=जीरा
चक्र=चक्र	

वाक्य

१. द्रव्यस्य दानेन ऋ फल भवति=द्रव्य के दान से क्या फल होता है ?
२. द्रव्यस्य दानेन पुण्य भवति=द्रव्य के दान से पुण्य होता है।
३. शरीरस्य पोषणाय अन्नमस्ति इ=शरीर की पुष्टि के लिये अन्न है।
४. वस्त्रस्य प्रचालनाय शुद्ध जल तत्र अस्ति=कपड़ा धोने के शुद्ध जल यहाँ है।
५. पत्रस्य लेखनाय मसीपात्र महा देहि=पत्र लिखने के लिये दवात मुझे दे।
६. पट्टक लेखनाय भवति=गेंद खेलने के लिये होता है।

७. नगरं नगरं तस्य भ्रमणं सदा भवति=(एन) शहर से
(दूसरे) शहर उसका भ्रमण सदा
होता है।

८. वस्त्रेण शीतनिवारणं भवति=कपड़े से सर्दी का निवारण
होता है।

९. तव भोजने कर्पटृणा नास्ति X=तेरे भोजन में कुत्ता
नहीं है।

१०. मम भोजने ओदन मस्ति^१ व्यंजनमपि॥ अस्ति=मेरे भोजन
में भत है, और चटनी भी है।

११. इदानीं वयं तस्य गमनं वग्मू=अब यहाँ उसका जाना
रूखा है।

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

१. प्रथमा	ज्ञानं	ज्ञान
२. द्वितीया	ज्ञानं	ज्ञान को
३. तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञान ने
४. चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञान के लिये
५. पञ्चमी	ज्ञानात्	ज्ञान से
६. षष्ठी	ज्ञानम्	ज्ञान का
७. सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञान में
सम्बोधन	(हे) ज्ञान	(हे) ज्ञान

अकारान्त नपुंसक-लिङ्गी शब्द

अम=नोक	अंजनं=चत्रल, सुरमा
पाटयं=चलता	अभिषादनं=शेहो को नमन

‡ अन्नं + अस्ति । X न + अस्ति । ए ओदनं + अस्ति ।

॥ व्यंजन + अपि ।

अवलोकनं=देखना
 आरोग्यं=त.दुरुस्ती
 चन्प्रीजनं=खोलना
 गानं=गाना
 चित्तं=मन
 धनं=दौलत
 दुःखं=तकलीफ
 अ-पाटवम्=बीमारी
 सत्यं=सत्य

स्मरणं=याद
 उपवनं=बाग
 भवणं=सुनना
 चलनं=चलना
 तत्त्वम्=तत्त्व
 इन्द्रियं=इन्द्रिय
 आसनं=आसन
 क्षेत्रं=खेत
 पत्तनं=नगर
 शीलं=स्वभाव

फलं=फल
 स्थानं=जगह
 कार्यं=कृत्य, काम
 घ्राणं=नाक
 तरणं=तैरना
 नर्तनं=नाच
 अनामयं=आरोग्य
 नयनं=आँख
 असह्यं=असत्य

उत्तरं=जवाब
 स्निग्धं=खोदने का हथियार
 पालनं=रक्षा
 जीवनं=जिन्दगी
 मूलं=जड़
 शस्त्रं=हथियार
 हवनं=हवन
 नामधेयं=नाम
 व्रतं=नियम
 हिंसनं=हिंसा, धध

ये सब शब्द ज्ञान शब्द के समान ही चलते हैं ।

वाक्य

१. मम शरीरस्य अपाटवम् अस्ति=मेरा शरीर बीमार है ।
२. यथा आरोग्यं भवति तथा कार्यम्=स्वास्थ्य हो वैसा करना ।
३. तव चित्तं पुत्र अस्ति=तेरा मन कहाँ है ।

४. ईश्वरस्य स्मरणं प्रभाते उत्थाय अवश्यं कर्तव्यम्=ईश्वर का स्मरण सवेरे उठ कर अवश्य करना चाहिये ।
 ५. यदा त्वं द्रव्यं करोषि तदा किं भक्षयसि ?=जब तू द्रव्य करता है, तब क्या खाता है ।
 ६. अश्वस्य पालनं कुरु=घोड़े का पालन करो ।
 ७. यदा ॥ अक्षयं वक्षति तदा तस्य मुखं मलिनं भवति=जब वह झूठ बोलता है तब उसका चेहरा मलीन होता है ।
 ८. येन देनापिमार्गेण गच्छ=जिस किसी मार्ग से जा ।
 ९. तव विशा धनं दत्तम्=मेरे मिता ने धन दिया ।
 १०. मया शास्त्रं न पठितम्=मीने शास्त्र नहीं पढ़ा ।

सरल वाक्य

१ माता पुत्राय भोजनं ददाति । २ पुत्रः पित्रे पत्रं लिपति । ३ तेन धनं न जानंति । ४ किं स अद्यपि तत्रैव अस्ति । ५ किं करोति स तत्र । ६ अहं तस्मै बालकाय हिमं अपि दातुं न इच्छामि, पत्रः स स्वकीये पुस्तकं न पठति, इत्यतः भ्रमति च । ७ मद्युधया दुग्धितं मनुष्यं दृष्ट्वा तस्मै एव कर्णं ददाति । ८ देयदत्तं, किं स जले गरणं जानति । ९ यदि जानाति तर्हि अद्य मया सह आगच्छ नदीम् । तत्र गरणा स्नानं करिष्यामि । १० इदानीं भोजनस्य समयः जातः, शीघ्रं जलं गृह्णीया अत्र एव आगच्छ ।

पाठ ३५

शब्द

मुनी=मुंई
 वयो=वयन
 दान=दाय

नेत्रं=आंख
 दनः=दान
 वादः=वात

भिन्न=अलग

आत्मा=आत्मा जीव

पकं=पका हुआ

बीज=बीज

वाक्य

१ इह मनुष्यः दिनेऽक्षि दिने अन्नं भक्षयति=यहां मनुष्य प्रत्येक दिन अन्न खाता है।

२. नगरे जनः क्रीडां करोति=प्रत्येक शहर में मनुष्य खेलता है।

३. ग्रामे ग्रामे द्य नं भवति=प्रत्येक गांव में योग होता है।

४. गृहे गृहे बालः प्रसन्नः भवति=हर एक घर में बालक आनन्दित होता है।

५. शरीरे शरीरे आत्मा भिन्नः भवति=हर एक शरीर में अलग २ आत्मा है।

६. वृक्षे वृक्षे फलं पक्वम् अस्ति=हर एक वृक्ष पर फल पका है।

७. राष्ट्रे राष्ट्रे राजा भवति=हर एक राष्ट्र में राजा होता है।

८. सायं सायं जलं आगच्छति=प्रति सायंकाल जल आता है।

९. मार्गे मार्गे रथः यावति=हर एक मार्ग में रथ दौड़ता है।

१०. पुस्तके पुस्तके अलेख्य भवति=हर एक पुस्तक में चित्र होता है।

११. फले फले रज भवति=हर एक फल में रीत होता है।

१२. कूपे कूपे जलं भवति=हर एक कूपे में जल होता है।

१३. वने वने वृक्षः भवति=हर एक वन में वृक्ष होता है।

इकारान्तो नपुंसकलिङ्गो 'वारि' शब्दः

१ प्रथमा

वारि

जल

॥ संस्कृत में शब्दों का दुबारा प्रयोग करने से "प्रत्येक, हर एक" ऐसा अर्थ स्वयं उत्पन्न होता है।

२ द्वितीय	”	जल को
३ तृतीया	धारिणा	जल ने
४ चतुर्थी	धारिणे	जल के लिये
५ पञ्चमी	धारिणः	जल से
६ षष्ठी	”	जल का
७ सप्तमी	धारिणि	जल में
सम्बोधन	(हे) वारि	(हे) जल

इस प्रकार इकागन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ।

वाक्य

१. मनुष्यस्य देहे प्रथम घ्राणम् इन्द्रिय, येन गन्धः गृह्यते=मनुष्य के शरीर में पहिला नाक इन्द्रिय जिससे गंध लिया जाता है ।
२. द्वितीयं चक्षुः येन मनुष्यः सर्वं पश्यति=दूसरी आँख जिस से मनुष्य सब देखता है ।
३. तृतीयं श्रोत्रं येन शब्दः श्रूयते=तीसरा कान जिससे शब्द सुना जाता है ।
४. चतुर्थम् इन्द्रियम् जिह्वा, यया अन्नस्य रसः गृह्यते=चौथी इन्द्रिय जवान, जिससे अन्न का रस लिया जाता है ।
५. पञ्चमम् इन्द्रियम् त्वक्, यया मनुष्यः स्पर्शं जानाति=पाँचवीं इन्द्रिय चमड़ी है जिससे मनुष्य स्पर्श जानता है ।
६. षष्ठम् इन्द्रियं पञ्चकम् सर्वस्य ज्ञानस्य मूलम्=यह इन्द्रिय पंचक (पाँच इन्द्रियाँ) सब ज्ञान की मढ़ है ।

नासिका=नाक

हृदयं=दिल, हृदय

उदं=पेट

पृष्ठं=पीठ

अंगुली=अंगुली

शिखा=चोटी

वाक्य

१. परम नवीनचंद्रस्य मुखं कथं अतीव मलिनम् अस्ति=देख
नवीनचंद्र का मुख कैसा (धुत्त) मलिन है ।
२. स इदानीं मुखेन फलं मलयितुं न शक्नोति=वह अब मुंह से
फल खा नहीं सकता ।
३. अहं कर्णेन तव अतीव मधुरं भाषणं शृणोमि=मैं कान से
तेरा बहुत मीठा भाषण सुनता हूँ ।
४. मार्गे तस्य हस्तात् पुस्तकं पतितं=मार्ग में उसके हाथ से
पुस्तक गिर पड़ा ।
५. मार्गे पतितं तत् पुस्तकं अधरेण गृहीतं=मार्ग में गिरी हुई
पुस्तक को अधर ने लिया ।
६. सः शूरपुरुषः इदानीं युद्धे पतितः=वह शूर पुरुष अब जंग में
गिर पड़ा (मर गया) ।
७. तस्य मलिनहस्तात् बुडलिनीः न गृह्णा=उसके मलिन हाथ
से जलेबियाँ न ले ।

शब्द

नेत्राभ्यां=दोनों आँखों से

कर्णाभ्यां=दोनों कानों से

हस्ताभ्यां=दोनों हाथों से

पद्भ्यां=दोनों पैरों से

नासिकया=नाक से

दन्तैः=दाँतों से

आरोहति=चढ़ता है

विश्वः=विश्व, सब

सुगन्धः=सुशायू

वानरः=बन्दर

वृक्षः=दररत्न

घाणो=भाषण

शठः=ठग

विषं=जहर

वाक्य

१. अहं नेशाभ्यां विश्वं परयामि=मैं (दोनों) आँखों से विश्व को देखता हूँ ।
२. स कर्णाभ्यां श्रोतुं न शक्नोति=वह (दोनों) कानों से सुन नहीं सकता ।
३. त्वं नासिकया सुगन्धं गृह्णासि किम्=क्या तू नाक से सुगन्ध लेता है ?
४. मनुष्यः पादूभ्यां घ्रायति=मनुष्य (दोनों) पैरों से दौड़ता है ।
५. जनः दतैः फलं अस्ति=मनुष्य दाँतों से फल खाता है ।
६. वानरः हस्ताभ्यां, पादूभ्यां च वृक्षं आरोहति=बन्दर (दोनों) हाथों तथा (दोनों) पैरों से वृक्ष के ऊपर चढ़ता है ।
७. वानरः रात्रौ वृक्षस्य उपरि शयिति=बन्दर रात्रि में वृक्ष के ऊपर सोता है ।
८. शटस्य मुखे मधुरा वाणी तथा हृदये विषं भषति=ठग के मुँह में मीठा भाषण तथा हृदय में विष होता है ।
९. पश्य ! वानरस्य मुखं कथं कृणाम् अस्ति=देख बन्दर का मुँह कैसा काता है ।

शब्द

इह=यहाँ, इस लोक में
ससारः=संसार, दुनियाँ
राष्ट्र=राष्ट्र, कीम

अदुष्ट=परलोक
जगति=जगत् में
प्रसन्न=आनन्दित

७. हे बालकः ! त्वम् किम् करोषि=हे बालक तू क्या करता है ?
८. त्वम् कदापि असत्यं मा वद । असत्य भाषणम् पापम्
वर्तते=तू कभी असत्य न बोल । असत्य
बोलना पाप है ।
९. यः असत्यम् वदति कः अपि तस्य विश्वासम् न करोति=जो
असत्य बोलता है । कोई भी उसका
विश्वास नहीं करता ।
१०. यदि कः अपि बालकः असत्यम् वदति तर्हि गुरुः तम् ताड-
यति=अगर कोई भी बालक झूठ
बोलता है तो गुरु उसको मारता है ।
११. यः सत्यम् वदति तस्य सर्वजनः विश्वासं करोति=जो सच
बोलता है उसका सब मनुष्य विश्वास
करते हैं ।
१२. सत्यं सदा सत्यं वद सत्य-भाषणं पुण्यं वर्तते=तू सदा सच
बोल. सत्य बोलना पुण्य है ।
१३. यदा बालकः सत्यं वदति तदा गुरुः तम् नैव ताडयति=अब
बालक सत्य बोलता है तब गुरु उसको
नहीं मारता ।
१४. अतः कदापि असत्यं न वक्तव्यं । परन्तु सदैव सत्यं वक्तव्यम्=
इसलिये कभी भी असत्य न बोलना
परन्तु हमेशा सच ही बोलना ।
१५. इदम् अहं अनृणात् सत्यम् उपैमि=यह मैं झूठ से (जो छोड़
कर) सत्य को प्राप्त होता हूँ ।

' पाठ ३६

पूँ पाठों में पुलिग, स्त्रीलिग तथा नपुंसकलिग शब्दों के रूप सात विभक्तियों में कैसे होते हैं, यह दे चुके हैं, कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिग में नहीं है, जब कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिग बनता है तब उसके अकार का प्रायः "आ" बनता है, जैसे :—

पुलिग	उत्तम पुरुषः	उत्तम पुरुष
स्त्रीलिग	उत्तमा स्त्री	उत्तमा स्त्री

इसमें "उत्तम" शब्द जो पहिले वाक्य में पुलिग शब्द था वह दूसरे वाक्य में स्त्रीलिगो बना तब उसका "उत्तम" ऐसा रूप बदलते रहते हैं देखिये—

(१) पुलिगी

१. श्वेत रथ = सफेद रथ (गाड़ी) ।
२. मधुर आम्र = मीठा आम ।
३. शोभन समय = अच्छा समय ।

(२) स्त्रीलिग

१. श्वेता पुष्पमाला = सफेद फूलों की माला ।
२. मधुरा दुहन्तिनी = मीठी जलैषी ।
३. शोभना वेला = अच्छा समय ।

(३) नपुंसकलिगी

१. श्वेत पुष्पम् = सफेद फूल ।
२. मधुर दुग्धम् = मीठा दूध ।
३. शोभन दृश्यम् = सुन्दर दृश्य (नजारा) ।

इस प्रकार तीनों लिगों में रूप बदलते रहते हैं । विशेषण जिसका गुण बताता है उस गुणो का जो लिग होगा वही उसके

विशेषण का भी होगा। इसी नियमानुकूल वक्त विशेषणों के लिंग गुणी के लिंगों के अनुसार बदलते हुए हैं, इसका विचार स्पष्ट होने के लिये पाठकों को दुबारा देखना चाहिये, कि ऊपर दिये हुए तीनों लिंगों के विशेषण, एक ही होते हुए, गुणी के लिंग भिन्न होने के कारण कैसे भिन्न हो गये हैं। अब इस पाठ में कुछ विशेषण देते हैं —

विशेषण के शब्द

उत्तम=उत्तम	श्रेष्ठ=श्रेष्ठ
वर=भ्रेष्ठ	पीता=पीला
रत्न=नाम	नील=नीला
अध=अधा	बधिर=बहिरा
मध्यम=मीच वाला	कनिष्ठ=कनिष्ठ छोटा
चतुर=चतुर, समझदार	उद्यमशील मेहनती परिश्रम
श्वेत=सफेद	हरित=हरा
साम्न=ताल	सरुण=नारंगी
कृष्ण=काला	अलस=आलसी
राण=रोगी	नीरोग=स्वास्थ्य
यामन=ठिगणा	उच्च=ऊँचा

इन सब शब्दों के लिङ्ग गुणी के लिङ्गों के अनुसार बदलते रहेंगे, यह आप निम्न वाक्यों में देख सकते हैं, यदि यह बात पाठकों के ध्यान में आ गई, तो आगे का व्याकरण का विषय इन के लिये बहुत ही सुगम हो जायगा —

वाक्य

१. उत्तम पुरुष रोमने प्रातःकाल सचये वसिष्ठदि=उत्तम

मनुष्य अच्छे सचेरे के समय में सठता है ।

२. शुद्धेन जलेन स्नात्वा सन्ध्योपासनं करोति=शुद्ध जल से स्नान करके सन्ध्योपासन करता है ।

३. यः एवं सदा करोति स एव उत्तमः मनुष्य भवति=जो इस प्रकार हमेशा करता है वही उत्तम मनुष्य होता है ।

४. या एवं सदा करोति सा अपि उत्तमा स्त्री भवति=जो इस प्रकार हमेशा करती है वह भी उत्तम स्त्री होती है ।

५. अतः प्रातः स्नानं सन्ध्योपासनं च श्रेष्ठं कर्म अस्ति इति अहं वदामि=इसलिये प्रातः स्नान और सन्ध्योपासन श्रेष्ठ कार्य है ऐसा मैं कहता हूँ ।

६. स अंधः पुरुषः रक्तं वस्त्रं आनयति=वह अंधा मनुष्य लाल कपड़ा लाता है ।

७. सा अंधा स्त्री श्वेतां पुष्पमालां आनयति=वह अंधी स्त्री सफेद फूलों की माला लाती है ।

८. स वृद्धः पुरुषः श्वेते रथे उपविश्य अत्र आगच्छति=वह वृद्ध मनुष्य सफेद गाड़ी में बैठ कर यहां जाता है ।

९. सा वृद्धा स्त्री रक्तं वस्त्रं हस्ते गृहीत्वा धावति=वह वृद्ध स्त्री लाल कपड़ा हाथ में लेकर दौड़ती है ।

१०. ॥ वद्यमशीतः बालः यदा उत्तमं पुस्तकं पठति=वह वद्यमी बालक हमेशा उत्तम पुस्तक पढ़ता है ।

११. वद्यमशीला बालिका सदा उत्तमां पुष्पमालां करोति=वद्यमी लड़की हमेशा उत्तम पुष्पमाला करती है ।

१२. ॥ दग्धः बालः मधुरं अपि दुग्धं न पिबति=वह रोमी बालक भीठा दूध भी नहीं पीता ।

१३ सा दग्धा बालिका मधुरम् अपि दुग्ध न विचति=रह रोगी
लड़की भीठा दूध भी नहीं पीती ।

विशेषण के शब्द

अखिल=सब संपूर्ण	अधिव=धीर बहुत
अद्येतव्य=देरने योग्य	अनुत्तम=सब से उत्तम
अभिजाय=नमस्कार के योग्य	अथ त=रहा हुआ
अनर्घ=बहु मोल	अन्तिह=पाम
अन्त्य=आखीर का	अवाच्य=बोलने के अयोग्य
अर्पित=अर्पण किया हुआ	संतुष्ट=सुख
असंतुष्ट=न सुख	कठिन=मुश्किल
कथनीय=कहने योग्य	तुल्य=समान
दृष्टव्य=देरने योग्य	निवृत्त=समीप
निर्विल=मग	परिवृत्त=संस्कार किया हुआ
पूर्व=रहिता	वेद्य=धीने योग्य
भक्ष्य=खाने योग्य	दु स्तित=शीघ्रित
अविलुप्त=नष्टापायी	अशिक्षित=अशानी
ईदृश=ऐसा	ग्राह्य=जिन्हा हुआ
विन्तित=बोधा हुआ	दातव्य=देने योग्य
नष्ट=नाश को प्राप्त	पथ्य=हितकारक
पर=उत्तम, श्रेष्ठ, दूसरा	पालनीय=पालने योग्य
भोग=हरा हुआ	पूजनीय=संस्कार के योग्य
पुनश्चित=भूया	भयाकुल=हर्षा हुआ है
मुनोद्गर=मुख से निकला हुआ	

- { १. अखिल संसारः ईश्वरेण कृतः ।
 २. अखिलया सेनया युद्धं कृतम् ।
 ३. अखिलं पुस्तकं मया पठितम् ।
- { १. संतुष्टः राजा द्रव्यं ददाति ।
 २. संतुष्टा धालिका इदानीं हसति ।
 ३. संतुष्ट मित्रं किं करोति ?
- { १. पूजनीयः गुरुः आगतः ।
 २. पूजनीया माता आगता ।
 ३. पूजनेयं ज्ञानं देहि ।

पाठ ३७

नाम=नाम बाला	कश्चिद्=कोई एक
प्रज्वाल्य=जाला कर	स्वकीय=अपना
सरवर=जलदी	वर्ण=रंग
सौंदर्य=सूषसूती	नित्य=हमेशा
लघु=छोटा	आहारः=भोजन
नवीन=नवीन, नया	प्राचीन=पुराणा
आकारः=शकल	पुरुषता=पदसूत्र

वाक्य

१. गंगाधरः नाम कश्चिद् बालः अतीव उद्यमशीलः अस्ति=गंगाधर नामक कोई एक बालक बहुत ही दयोगी है।
२. स प्रातः एव उत्तिष्ठति दोषं प्रज्वाल्य, पुस्तकं गृहीत्वा स्वकीयं पाठं पठति=वह सबेरे ही उठता है, दोष जल कर, पुस्तक लेकर अपना पाठ पढ़ता है।

३. यदा स उत्तिष्ठति तदा सूर्यः अपि न उदयते=जब वह उठता है
तब सूर्य भी नहीं उगता ।

४. स स्वकीयस्य पाठस्य अध्ययनं कृत्वा स्नानं करोति, स्नात्वा च
नित्यं कर्म करोति=वह अपने पाठ का अध्य-
यन करके स्नान करता है, और स्नान करके
नित्य कर्म करता है ।

५. पश्चाद् लघु आहारं भक्षयित्वा सत्त्वरं पाठशालां गच्छति=पीछे
से थोड़ा आहार खाकर शीघ्र ही पाठशाला
को जाता है ।

६. तत्र तवीनं पाठं गृहीत्वा स्वकीयं गृहम् आगच्छति=वहां गया
पाठ लेकर अपने घर आता है ।

७. स कदापि मार्गं न क्रोडति=वह कभी मार्ग में नहीं खेतता है ।

८. अतः सर्वदा स प्रमन्नः भवति=इस लिये हमेशा वह खुरा
रहता है ।

पृच्छति=वह पूछता है

पृच्छति=तू पूछता है

पृच्छामि=मैं पूछता हूँ

सम्यक्=सही प्रकार

प्रतिदिन=हर एक दिन

पृष्टं=पूछा

पृष्ट्वा=पूछ कर

प्रश्न=प्रश्न, सवाल

उत्तर=उत्तर, जवाब

वायुसेवन=हवा खोरी

वाक्य

१. शृणु ! देवप्रतः तं किं पृच्छति=सुन ! दे देवप्रत उस को क्या
पूछता है ?

२. स उच्यैः न वदति अत आहं तस्य भाषणं श्रोतुं न शक्नोमि=वह
कंवा नहीं बोलता, इसलिये मैं उसका भाषण सुन
नहीं सकता ।

३. सत्वरं तत्र गत्वा शृणु=शीघ्र वहाँ जाकर सुन ।

४. मम इदानीं भ्रमणस्य समयः जातः अतः तत्र गन्तुं न शक्नोमि=
मेरा अब घूमने का समय हो गया है इस लिये
वहाँ जा नहीं सकता ।

५. किं त्वं प्रतिदिनं स यं काने भ्रमणाय गच्छसि=क्या तू प्रति-
दिन शाम को घूमने के लिये जाता है ?

६. अहं दिने दिने सायं काले वा प्रातःकाले वा भ्रमणाय गच्छामि=
मैं हर एक दिन शाम को अथवा सबेरे के समय
भ्रमण के लिये जाता हूँ ।

७. सायंकालस्य भ्रमणात् प्रातःकाले भ्रमणं वरं अस्ति इति अहं
जानामि=शाम के घूमने से सबेरे का घूमना
अच्छा है ऐसा मैं जानता हूँ ।

क्रियाओं के तीन काल होते हैं एक वर्तमान काल, दूसरा भूत
काल और तीसरा भविष्यत् काल इन तीनों कालों में वर्तमान तथा
भविष्य पाठकों ने जान लिया है, जैसा:—

वर्तमान काल—गच्छामि=जाता हूँ ।

भविष्य काल—गमिष्यामि=जऊँगा ।

भूत काल का सुगम रूप “स्म” शब्द से बनता है, वर्तमान
काल के रूप के आगे “स्म” रखने से उसी क्रिया का भूतकाल
है, जैसे:—

वर्तमान काल

भूतकाल

गच्छति—जाता है

गच्छति स्म—जाता था

करोति—करता है

करोति स्म—करता था

उत्तिष्ठति—उठता है

उत्तिष्ठति स्म=उठता था

/ वाक्य

१. रामः रथे ने सदा गच्छति=राम चाग में हमेशा जाता है ।
२. रामः उद्यमे सदा गच्छति स्म=राम यग में हमेशा जाता था ।
३. अहं कृष्णेन सह भाषणं करोमि=मैं कृष्ण के साथ भाषण करता हूँ ।
४. एवं तेन सह भाषणं करोपि=तू उसके साथ भाषण करता है ।
५. स मित्रेण सह भाषणं करोति स्म=वह मित्र के साथ भाषण करता था ।
६. ॥ याज्ञः मार्गे लोडतिस्म=बड़ बालक मार्ग में खेलता था ।
७. राजा युद्धं करोति स्म=राजा युद्ध करता था ।
८. स कर्म करोति स्म=उह काम करता था ।
९. स फलं भक्षयति स्म=उह फल भक्षण करता था ।
१०. स प्रातः उत्तिष्ठति स्म=उह सबेरे उठता था ।

पूँर्ष पाठ में जो विशेषण दिये हैं उनका दोनों श्रिगों में वर-योग परके कुछ वाक्य यहाँ देते हैं । जिनसे देख कर विशेषणों का उपयोग किस प्रकार किया जाता है इसका ज्ञान पाठकों को हो सकता है । इसलिये निवेदन है कि पाठक हर एक वाक्य में जो जो विशेषण आये हैं उनकी ओर । विशेषण ध्यान से देखें और उपयोग का प्रकार जान लें ।

वाक्य

- | | |
|---|-----------------------------------|
| { | १. अश्विनस्य संवारस्य किं मूलम् ? |
| { | २. अश्विनाया सृष्टेः किं मूलम् ? |
| { | ३. अश्विनस्य जघनः किं मूलम् ? |

१. मया उत्तमाय ब्राह्मणाय मोदकः अर्पितः ।
२. मया उत्तमायै पंडितायै पुष्पमाला अर्पिता ।
३. मया उत्तमाय वाजकाय पुस्तकं अर्पितम् ।

१. पश्य, तं दुःखितं बालकम् ।
२. पश्य तां दुःखितां नारीम् ।
३. पश्य, तं दुःखितं जनम् ।

१. तस्मै तृपिताय मनुष्याय पेयं जलं देहि ।
२. तस्यै तृपितायै पुत्रिकायै पेयां यवागूं देहि ।
३. तस्मै तृपिताय मित्राय पेयं दुग्धं देहि ।

१. मया अधीतं पुस्तकं त्वं नय ।
२. मया अधीतां कथां त्वं नय ।
३. मया अधीतं ग्रंथं त्वं नय ।

शब्द

संसारः=दुनियां (पुल्लिंग)	सृष्टिः=दुनिया (स्त्री०)
जगत्=दुनियां (नपुंसक०)	यवागु=विच्छ, चावसों का
नारिका=स्त्री	पानी
पंडितः=विद्व न् पुरुषः	पंडिता=विदुषी स्त्री
तृपित=व्यासा	शोमन=उत्तम
गौः=गाय	कार्य=काम, योग

सरल वाक्य

१ मया अभिवाद्यः गुरुः श्रद्धानो अत्र आगच्छति । २ तेन शोमना रूप कथा कथनीया । ३ त्वं बधिराय मनुष्याय गुरुकं पुष्पं न देहि । ४ अहं तस्यै पुत्रिकायै नारिकायै उत्तमम् अन्नं पेयं च

पानीयं दातुम् इच्छामि । ५ यदा स पूजनीयः यः गुरवे अस्थिलं धनं दास्यति तदा स्वम् एव वद । ६ पश्य मित्र, मया अद्य प्रातःकाले उत्तम गौः गंगाया तीरे दृष्टा । ७ यदा त्वं कठिनं कार्यं करिष्यसि तदा अहं तव सहाय्याय आगमिष्यामि ।

निम्न शब्दों का संस्कृत कोजिये :—

१ राम की सीता नाम पतिव्रता स्त्री थी । २ रामचन्द्र ने रावण का वध किया । ३ जैसा मार्ग में कल कीचड़ हुआ था वैसा आज नहीं हुआ । ४ कल वदल से पानी बहुत पड़ा था । इसलिए कीचड़ हुआ था । ५ कपड़ा धोने के लिये शुद्ध जल उत्तम होता है । वह जल अत्यन्त अशुद्ध है । इसमें कपड़ा कैसे धोऊँ ।

पाठ ३८

शब्द

मालाकारः = माली ।	लोहकारः = लोहार ।
काष्ठकारः = चरान ।	वैद्य = वैद्य ।
सुवर्णकारः = सुनार ।	चर्मकार = चमार ।
उपानत् = जूता ।	वधकार = तरान ।
वस्त्रकारः = दर्जी ।	घटीकारः = घड़ी साज ।
रजकः = धोबी ।	चित्रकारः = चित्रकार ।
मूर्तिकार = मूर्ति बनाने वाला ।	

वाक्य

१. मालाकारः रचने कर्म करोति = माली याग में काष्ठ करता है ।
२. वैद्यः रुग्णाय जनाय औषधं ददाति = वैद्य रोगी मनुष्य के लिए दवा देता है ।
३. सुवर्णकारः सुवर्णस्य आभूषणं करोति = सुनार सोने का गहना बनाता था ।
४. चर्मकारः उपानत् करोति = चमार जूता बनाता है ।

५. चित्रकारः उत्तमं आलेख्यम् आलित्वति=चित्रकार उत्तम चित्र खींचता है।

६. रजकः शुद्धेन जलेन वस्त्रं प्रक्षालयति=धोबी शुद्ध जल से कपड़ा धोता है।

७. घटीकारः घटीयंत्रम् करोति=घड़ीसाज घड़ी बनाता है।

७. रथकारः रथं करोतिस्म=तरतान गाड़ी बनाता था।

शब्द

पुष्पाणि=(अनेक) फूल

पात्राणि=(अनेक) पात्र।

ताम्रं=तांबा।

भवन्ति=होते हैं।

सुवर्णं=सोना।

रजताभ्रकं=पलोमीनियम।

बहूनि=बहुत।

वस्त्राणि=(अनेक) वस्त्र।

रजतं=चाँदी।

पित्तलं=पीतल।

लोहः=लोहा।

यंगं=रत्न।

मृण्मयं=मिट्टी का।

साधुः=अच्छा प्रकार।

१. मालाकारः रत्नानि गत्वा बहूनि पुष्पाणि आनयति=माली बाग में जाकर बहुत फूल लाता है।

२. सुवर्णकारः रजस्य बहूनि पात्राणि अतीव मनोहराणि करोति=सुनार चाँदी के बहुत बर्तन अत्यन्त सुन्दर बनाता है।

३. ताम्रस्य पात्रे जलं अतीव सुशुद्धं भवति=ताँबे के बर्तन में जल अत्यन्त पवित्र होता है।

४. पित्तलस्य पात्राणि पीतानि भवन्ति=पीतल के बर्तन पीले होते हैं।

५. ताम्रस्य पात्राणि रत्नानि भवन्ति=यैसे ताँबे के बर्तन लाल होते हैं।

६. रजकः रक्षम् वस्त्रं साधु प्रचाजयितुं न शक्नोति=धोबी लाल कपड़ा अच्छी प्रकार नहीं धो सकता ।
 ७. सुवर्णं वात्रं अतोव शोभनं अस्ति=सोने का बर्तन बहुत अच्छा है ।

शब्द

- तडागः=तालाब ।
 समुद्रः=समुद्र ।
 समीप=पास ।
 नदी=दीर्घा, नदी ।
 जलमलिनम्=पानी का नलका ।
 कुप=कुआँ ।
 सागरः=समुद्र ।
 प्रपा=पानी का स्थान, पियाऊ ।
 स्नानगृहं=स्नान करने का स्थान ।

वाक्य

१. एवं तडागस्य समीपं गच्छ तत्रैव स्नानं कुरु=तू तालाब के पास जा और वहाँ ही स्नान कर ।
 २. अस्य तडागस्य जलमतीव मलिनमस्ति तेन स्नानं कर्तुम् नेच्छामि=इस तालाब का जल बहुत मलिन है । उस से स्नान करना नहीं चाहता ।
 ३. तर्हि अस्य कुपस्य जलेन स्नानं कुरु=तो इस कुएँ के जल से स्नान कर ।
 ४. अस्य कुपस्य जलं बहु शीतम् अस्ति अतः अहं तेनापि स्नानं कर्तुं नेच्छामि=इस कुएँ का जल बहुत ठंडा है इसलिये मैं उस से भी स्नान करना नहीं चाहता ।

(१) तत्र+रख । (२) जलं+अतोव । (३) मलिनं+अस्ति । (४) न+इच्छामि ।

५. यदि कूपस्य शुद्धेन जलेन अपि स्नान कर्तुं नेच्छसि तर्हि मम स्नानागारे गत्वा तत्रस्थितेन स्नान कुर्वन्=अगर कुएँ के शुद्ध जल से भी स्नान करना नहीं चाहता तो मेरे स्नान घर में जाकर वहाँ के जल से स्नान कर ।
६. शोभनं । भो मित्र ! यथा त्वया सक्त तया करोमि=उत्तम । हे मित्र ! जैसा तूने कहा वैसा करता हूँ ।

शब्द

भूतं = शठ, ठग

पक्षिपालक = पक्षियों का पालन करने वाला ।

वक्तुं=बोलने के लिये

शिक्षित=सिखाया हुआ

नरपति = राजा

कस्मिंश्चिद्=किसी एक में

प्ररने कृते=प्रश्न करने पर

अनयत्=(यह) ले गया

अनय = (तू) ले गया

अनयम्=(मेँ) ले गया

प्रविश्य=प्रवेश करके

भाषण=बोलना

श्रुत्वा=सुनकर

स्वमदिरं=अपना महल

मूलं=मूढ़

प्रीत=परीदा हुआ

शुक = तोता

सदेह = सस्राय

नरेश = राजा

राज्ञा=राजा ने

राजन्=हे राजा

राजसभा=राजा का दरबार

वाच=वाणी को

सत्तरूप्यकाणि=लाएँ रुपये

ददी=दिये

स्थापयित्वा==रखकर

कुपित=क्रोधित

बहुमूल्य=बहुत कीमत वाला

पृथ्वान्=पृथ्वी

शुभस्य कथा

केनचित् भूतेन पक्षिपालकन एक शुभं मनुष्य इव वक्तुं शि-

क्षितः । कस्मिंश्चिद् अपि प्रश्ने कृते “अत्र कः संदेहः” इत्येव स शुकः
वदति । एकदा ॥ पक्षिपालकः तं शुकं नरेशस्य समीपम् अनयत् ।
तत्र राजसभां प्रविश्य पक्षिपालकेन वृत्तम् । “हे राजन् ! अयं शुकः
मनुष्य इव सर्वभाषणं वदति” । पक्षिपालकस्य एतद् वचनं श्रुत्वा
राज्ञा शुकं प्रति प्रश्नः कृतः—“हे शुक ! किं त्वं सर्वथा मनुष्यस्य
भावं वदसि” ।

शुकेन वृत्तम्—‘अत्र कः संदेहः’ इति तेन उत्तरेण अतीव संतुष्टः
स राजा तस्मै पक्षिपालकाय लक्षरूप्यकाणि ददौ । पश्चाद् स्व-मंदिरे
शुकं नीत्वा तत्र च उत्तमे स्थाने तं स्थापयित्वा यदा प्रश्नः कृतः
यदा सर्वस्य अपि प्रश्नस्य ‘अत्र कः संदेहः’ इति एव एकम् उत्तरं तेन
शुकेन दत्तम् । तदा क्रुपितेन राज्ञा पुनः शुकं प्रति प्रश्नः कृतः ।

‘हे शुक ! त्वम् अत्र कः संदेहः इति एव वक्तुं जानासि ?’

शुकेन वृत्तम्—‘अत्र कः संदेहः’ इति । तदा स राजा तं शुकं
पुनः पृष्ठवान्—‘हे शुक ! तर्हि किम् अहं मूर्खः, यत् मया यद्मूल्येन
त्वं क्रीतः’ ।

शुकेन वृत्तम्—‘अत्र कः संदेहः’ इति ।

विचार्य एव सर्वं कार्यं कर्तव्यम् । यथा राजा अविचार्य एव
महता मूल्येन शुकः क्रीतः । तथा केन अपि मूर्खत्वं न कर्तव्यम् ।

पाठ ३६

— शब्द

ईश्वरः=ईश्वर

जनः=मनुष्य

चौरः=चोर

पालकः=पालन करने द्वारा

वानरः=वन्दर

द्वारपालः=दरवाजे का रक्षक,

पहरे वाला ।

कर्ममः=कीचड़

तंतुवायः=जुलाहा

सौतिकः=दर्जी

गोधूमः=गेहूं, कनक

विडालः=बिल्ली

मंडूकः=मेंढक

वृषभः=बैल

इन शब्दों के सातों बिभक्तिषों के रूप पूर्वोक्त “देव” शब्द के समान ही होते ।

वाक्य

१. द्वारपालकः द्वारि तिष्ठति गृहं च रक्षति=पहरे वाला दरवाजे में खड़ा रहता है, और घर की रक्षा करता है ।
२. घानरः घृते स्थित्वा फलं भक्षयति=घन्दर घृत के ऊपर रहकर फल खाता है ।
३. ईश्वरः पालकः अस्ति सर्वं च विश्वं सर्वदा रक्षति=परमेश्वर रक्षक है और सारे ससार की सदा रक्षा करता है ।
४. ह्यः तेन द्वारपालेन चौरः अतीव ताडितः=कल उस पहरेदार ने चोर को बहुत पीटा ।
५. मंडूकः जले अस्ति, तं पश्य=मेंढक पानी में है, उसे देख ।
६. विडालः दुग्धं पिबति=बिल्ली दूध पीती है ।
७. हे मित्र ! तत्र कर्ममः अस्ति, अतः तत्र न गच्छ, नोचेत् पति-
भ्यसि=हे मित्र ! वहां कीचड़ है, इस कारण वहां न जा नहीं तो गिरेगा ।

शब्द

पतति=(वह) गिरता है

पतसि=(तू) गिरता है

पतामि=गिरता हूं

चलति=(वह) चलेगा

पतिष्यति=(वह) गिरेगा

पतिष्यसि=(तू) गिरेगा

पतिष्यामि=गिरूंगा

चलसि=(तू) चलता है

चलामि=चलता हूँ

चलिष्यसि=(वह) चलेगा

चलिष्यसि=(तू) चलेगा

चलिष्यामि=चलूंगा

वाक्य

१. रामचन्द्रस्य पुत्रः अतोव घावति, अतः पतति च=रामचन्द्र का लड़का बहुत दौड़ता है, इसलिये गिरता है।
२. यदि त्वम् एवं करिष्यसि तर्हि पतिष्यसि एव=अगर तू ऐसा करेगा तो गिरेगा ही।
३. त्वं श्वः प्रातः काले भ्रमणाय चलिष्यसि किं=क्या तू सवेरे घूमने के लिये चलेगा ?
४. इदानीमेव तस्य रथस्य श्वेतः अश्वः कर्दमे पतितः स न उथातुं शक्नोति=अभी उस रथ का सफेद घोड़ा कीचड़ में गिरा वह छठ नहीं सकता।
५. अहम् इदानीं तस्य छत्रं नयामि, त्वं तं कथय=मैं अब उसका छाता ले जाता हूँ तू उसे कह।
६. तस्य गृहे अश्वः अस्ति तथा विहालः अपि अस्ति=उस के घर घोड़ा है तथा बिल्ली भी है।
७. तस्य वस्त्रं मया प्रक्षालितं=उसका वस्त्र मैंने धोया।

शब्द

पेशकः=संदूक, वेग, ट्रंक

पानीयं=पानी

प्रदीपः=दीवा

घृतं=घी

तर्कं=लक्ष्मी (दही की), मठा

भूतं=हो गया

पचति=(वह) पकाता है

पचसि=(तू) पकाता है

पचामि=पकाता हूँ

पचिष्यसि=पकायेगा

पचिध्यसि=पकायेगा

पचिष्यामि=पकाऊँगा

वाक्य

१. वासुदेवः तस्य गृहे अन्नं पचति=वासुदेव उसके घर में अन्न पकाता है ।
२. तस्य पेटकः कुत्र अस्ति यस्मिन् तेन स्वकीयं द्रव्यं रक्षितम् अस्ति=उसका सद्रूक कहाँ है ? जिसमें उसने अपना धन रक्खा है ।
३. यदा स पुरुषः स्वगृहं गतः तदा तेन स्वकीयः पेटकः कुत्र स्थापितः इति अहं न जानामि=जब वह मनुष्य अपने घर गया तब उसने अपना द्रूक कहाँ रखा है यह मैं नहीं जानता ।
४. भूमित्रः जानाति किं=क्या भूमित्र जानता है ।
५. हे भूमित्र ! किं त्वं जानासि=हे भूमित्र ! क्या तू जानता है ।
६. अहमपि नैत्र जानामि परन्तु सूर्यसिंहः जानाति=मैं भी नहीं जानता परन्तु सूरजसिंह जानता है ।
७. तदि तं पृच्छ=तो उसे पूछा ।
८. स वदति तस्य पेटकः अपि तेन एव स्वगृहे नीतः इति=वह कहता है कि अपना द्रूक भी वह अपने घर ले गया ।
९. ईश्वरस्य पूजनं अवश्यं कर्तव्यम्=ईश्वर का पूजन अवश्य करना चाहिये
१०. अध्यापकस्य समीपं सत्वरं गच्छ=गुरु के समीप जल्दी जा ।

नपुंसकलिङ्गी सर्वनामों के रूप

	(१) सर्व	
	एकवचन	
प्रथमा	सर्वम्	सब
द्वितीया	"	सब को
	(१) किम्	
प्रथमा	किम्	कौन
द्वितीया	"	किस को
	(३) यत्	
प्रथमा	यत्	जो ।
द्वितीया	"	जिसको
	(४) तत्	
प्रथमा	तत्	यह
द्वितीया	"	उसको

इनके शेष विभक्तियों के रूप सर्वनामों के पुलिङ्ग रूपों के समान ही होते हैं । देखिये पाठ १७ में 'सर्व' शब्द पाठ १८ में 'किं' शब्द, पाठ २२ में 'यद्' शब्द तथा २२ में 'तद्' शब्द । पाठकों को उचित है कि ये इनके रूप बनाकर लिख लें, ताकि इनको कभी भूल न सकें ।

पाठ ४०

शब्द

कथयति=(वह) कहता है
कथयामि=कहता हूँ

कथयति=(तू) कहता है
कथयति=(वोम्ह) कहता है

बहसि=बोझ (तू) उठाता है
 शकट=गाड़ी
 महियः=भैंसा
 कथयिष्यसि=(तू) कहेगा
 बहिष्यति=(बोझ) उठायेगा
 बहिष्यामि= ,, उठाऊंगा
 छत्रं=छाता

बहामि ,, उठाता हूँ
 बलीवर्दः=बैल
 कथयिष्यति=(वह) कहेगा
 कथयिष्यामि=कहूँगा
 बहिष्यसि=(बोझ) तू उठायेगा
 भृत्यः=नौकर
 विष्टर=कुर्सी, स्टूल

वाक्य

१. स पण्डितः रात्रौ रामस्य कथां कथयिष्यति, स्वमपि श्रोतुम् आगच्छ=वह पण्डित रात को राम की कथा करेगा तू भी सुनने के लिये आ ।
२. बलीवर्दः शकटं वहति, ग्रामात् ग्रामं चलति च=बैल गाड़ी खेंचता है, और एक गाँव से दूसरे गाँव को जाता है ।
३. राज्ञस्य महियः अद्य अत्र न अस्ति यत्र कुत्र अपि गतः=धोयी का भैंसा आज यहां नहीं है, कहीं इधर उधर चला गया है ।
४. मम भृत्यः इदानीमेव आपणु गतः स अद्य सायं आगमिष्यति=मेरा नौकर अभी बाजार गया है वह आज शाम को आवेगा ।
५. कथय ! हाः तेन किं किं कृतं, कथं च दिनः गतः इति=कह ! कल उसने क्या क्या किया और कैसे दिन गया ।

वाक्य

ब्रह्मसि=(तू) जलता है
 जहति=(वह) बोलता है

ज्वलामि=जलता हूँ
 जहसि=(तू) बोलता है

अल्पामि=बोलता हूँ

योग्य=लायक

बद्धिपेटिका=दियासलाई की

बद्धिशलाका=दियासलाई

दिसवी

ज्वलियति=जलेगा

ज्वलियसि=(तू) जलेगा

ज्वलियामि=जलूँगा

जलियत्यति=बोलेगा

जलियत्यसि=(तू) बोलेगा

जलियत्यामि=बोलूँगा

गाढ=घना

अवकारः=अपेरा

प्रशालय=जला

वाक्य

१. तत्र अग्निः ज्वलित अतः तत्र एवं न गच्छ=वहाँ आग जलनी है इसलिए वहाँ तू न जा ।

२. स एषं वृथा जल्पति सततं भोक्तुं योग्यम् अस्ति=वह इस प्रकार व्यर्थ बोलता है वह सुनने योग्य नहीं ।

३. इदानीं रात्रिः आगता गाढ अंधकारः भवियति अतः प्रदीपं आनेष्यामि=अब रात्रि आ गई, घना अंधेरा हो जायगा, इसलिये दिया लाऊँगा ।

४. तेन बद्धिपेटिकां कुत्र रक्षिता इति न जानामि सा कुत्र भवियति=उसने दियासलाई की दिसवी कहाँ रखी यह मुझे पता नहीं यह कहाँ होगी ?

५. तत्र संघने बद्धिशलाका अस्ति तां गृहीत्या दीपं प्रशालय शीघ्रं च अत्र आनय=वहाँ टेबल पर दियासलाई है उसे लेकर दिया जला, और जल्दी यहाँ ले आ ।

शुद्ध

निमित्तः=धनाया

योग्यति=(वह) पुराता है

चोर्यति=(तू) चुराता है

चोर्यामि=चुराता हूँ

चोरयिष्यसि=चुरायेगा
 चोरयिष्यामि=चुराऊँगा
 यष्टिः=सोटी
 चपेटिका=चपत
 खट्वा=चारपाई
 शिष्ये=छिक्का

चोरयिष्यसि= (तू) चुरायेगा
 अपहृत=चुराया
 यष्टिका=सोटी
 कटः=चटाई
 पुच्छं=पूँछ, दुम
 प्रश्नः=चाकू

वाक्य

१. त्वं तं कटं कुत्र नयसि=तू उस चटाई को कहाँ ले जाता है
२. अहं तं ममगृहं नयामि=मैं उसे अपने घर ले जाता हूँ।
३. तव यष्टिका कुत्र अस्ति=तेरी सोटी कहाँ है ?
४. मम यष्टिः चोरेण ह्यः अपहृता=मेरी सोटी चोर ने कल चुराई।
५. तस्य खट्वा कुत्र अस्ति=उसकी चारपाई कहाँ है ?
६. तस्य अश्वस्य पुच्छं पश्य=उस घोड़े की पूँछ देख।
७. तस्मिन् शिष्ये तेन पात्रं रक्षितं=उस छिक्के में उसने धर्तन रखा।
८. तस्मिन् पात्रे मया दुग्धं रक्षितं=उस धर्तन में मैंने दूध रखा।
९. तत् दुग्धं बिहालेन अथ पीतं, अतः तत्र दुग्धं नास्ति=ब्रह्म दूध बिल्ली ने आत्र पिया, इसलिये वहाँ दूध नहीं।
१०. यः लोहस्य पेटकः तेन लोहकारेण निर्मितः स अतीव शोभनः
 अस्ति=जो लोहे का टुकड़ा उस लोहार ने बनाया वह बहुत अच्छा है।

शब्द

मात्रपदः=माई

सप्तम्यां=सप्तमी के दिन

कृष्णः=कृष्णपक्ष

ऊर्णा=ऊन,

उर्णावस्त्रं=दुशाका, उनीवस्त्र
यनोरम=मन को आनन्द देने
वाला

धर्मः = गरमी

नगरदर्शनाय=शहर दिखाने
के लिये

द्वंद्व=युद्ध

काव्यं=काव्य

तैलं=तेल

शं=सुख

द्रष्टव्यं=देखने योग्य

प्रीणीतुं=प्रीति देने के लिये

इतिहासः=तथ्यापीप, इतिहास

आसीत्=था

पराकाष्ठां=उच्चे दर्जे तक

अश्वरथः=घोड़े की गाड़ी

पदातिना=पैदल

निंदा=निंदा

वीगुदी=बाँद की रोशनी

प्राचीनतम=अत्यन्त पुराना

प्राचीन=पुराणा

प्रसन्न=आनन्दित

गुणसंपन्नः=गुणी

निश्चयः=निश्चय

अलमभतिविस्तरेण=बहुत

विस्तारबस हुआ

छिद्र=सूख

प्रेषित=भेजा हुआ

अनुमृश्य=अनुसरण करके

शर्मणः=शर्मा का

अतीव=बहुत

नाम्ना=नाम से

चिह्न=निशान

धनाढ्यः=पैसे वाला

तेज-बाष्पं=तेज की भाप

प्रशंसा=स्तुति

निद्रा=नींद

पर लेखनम्

ओ

देहली नगरे।

विजयीये १६६७ संवत्सर्

आश्विनदस्य पृथ्वी-सप्तम्या

ओ प्रिय मित्र यशदत्त !

नमस्ते ! तव अहम् अनुमृत्त्य अहम् अत्र अयं प्रायः ॥

आगतः । अस्मिन् नगरे यत् किञ्चिद् अपि द्रष्टव्यम् अस्ति तद् दृष्टुं श्वः वा परश्वः वा अस्मात् स्थानात् अमृतसर—नगरं गमिष्यामि । यदा अहं अमृतसरं गमिष्यामि तदा तव मित्रस्य चंद्रकेतु शर्मणः कृते एकं ऊर्णावस्त्रं केतु इच्छामि ।

भोः प्रियवयस्य ! एतत् देहलीनगरं अतीव सुन्दरम् अस्ति । अस्य प्राचीनतमः इतिहासः च अतीव मनोरमः । अद्य एव इन्द्रप्रस्थं तथा 'कुतुबमीनार' इति नाम्ना प्रसिद्धं स्थानं अपि मया दृष्टम् । पांडवानां समये एतद् एव देहली नगरं 'हस्तिनापुर' इति नाम्नं प्रसिद्धं आसीत् । इदानीं तु हस्तिनापुरस्य प्राचीनं किमपि बिह्वलं दृश्यते ।

ईदृशस्य प्राचीनतमस्य स्थानस्य दर्शनेन मम मनः प्रसन्नं भवति । पांडवकालस्य स्मरणम् अपि आनंदस्य पराकाष्ठां पुरुषं नयति ।

अत्र तु अस्मिन् मासे शीतं न भवति । सूर्यस्य आतपेन घर्म एव भवति । शीतकाले बहुशीतं तथा वर्षाकाले अतीव घर्मः भवति ।

अत्र अहं महाशयस्य कुंदनलालस्य गृहे स्थितः । महाशयः कुंदनलालः अतीव धनाढ्यः पुरुषः अस्मिन् नगरे अस्ति । तस्य पुत्रः चंदनलाल इति नामकः गुणसंपन्नः अस्ति । एष चंदनलालः मया सह नगर-दर्शनाय भ्रमति ।

अहं न अश्वरथेन भ्रमामि नापि "मोटर" इति नाम्ना प्रसिद्धेन लैयाप्प-रथेन भ्रमामि । परंतु यद् द्रष्टव्यम् अस्ति तन् सर्वं पदातिना एव द्रष्टव्यं इति मया निश्चयः कृतः ।

इदानीम् अल्पम् अतिविस्तरेण । मम अन्यतः पत्रं अमृतसरात् पितुं भविष्यति । इति शम् ।

भवदीयः वयस्यः

आनंदसागरः

पाठ ४१

(पुंलिङ्गी)

अर्भकः=बालक

ग्रामः=गाँव

चरणः=पंख

नृपः=राजा

प्रसादः=कृपा, मेहरबानी

मार्गः=रास्ता

मूशकः=चूहा

रक्षकः=पहरे वाला

घटसः=घछड़ा, घालक

निवासः=रहना

समुद्रः=समुद्र

(नपुंसकलिङ्गी)

कुसुमं=फूल

गरलं=झहर

जलं=पानी

द्वारं=दरवाजा

पर्णः=पत्ता

पत्रं=पत्ता, पत्र

भूषणं=जेवर

मित्रं=दोस्त

शरीरं=शरीर

वनं=जंगल

पुरं=राहर

ऊपर पुंलिङ्गी तथा नपुंसकलिङ्गी शब्द दिये हैं जिनके आगे विसर्ग रखा हुआ है। वे शब्द पुंलिङ्गी समझने चाहिये जैसे—“मार्गः, मूशकः” इत्यादि तथा जिनके अन्त में अनुस्वार हो। शब्द नपुंसकलिङ्गी समझने चाहिये जैसे—“पुरं, वनं” इत्यादि। आपने के पाठों में हम इसी प्रकार शब्द रखेंगे कि जिससे पाठकों को शब्दों के लिंग का पता लग जायगा।

जिन शब्दों के अन्त में “भा” होता है, वे शब्द प्रायः पुलिङ्गी होते हैं देखिये :—

गङ्गा=गङ्गा नदी

माला=माला

देवता=देवी, देवता

यमुना=यमुना

फला=हुनर

रेखा=लकीर

कन्या=लड़की

क्षमा=शान्ति, पृथ्वी

तारका=तारा

प्रिया=प्यारी धर्मपत्नी

वाक्य

१. मनुष्यः ईश्वरस्य प्रसादेन सर्वं सुखं प्राप्नोति=मनुष्य ईश्वर की कृपा से सब सुख प्राप्त करता है ।
२. एषः मित्रस्य गृहस्य मार्गः अस्ति=यह दोस्त के घर का मार्ग है ।
३. देवदत्तः नृपस्य प्रसादेन अतीव धनं प्राप्नोति=देवदत्त राजा की कृपा से बहुत द्रव्य प्राप्त करता है ।
४. तव मित्रस्य निवासः कुत्र अस्ति=तेरे मित्र का निवास कहाँ है !
५. अद्यद्यः मम मित्रस्य निवासः अमृतसरनगरे अस्ति=आज कल मेरे मित्र का निवास अमृतसर शहर में है ।
६. त्वं तं द्रष्टुं इच्छसि किम् ?=क्या तू उसको देखना चाहता है ?
७. अथ किम् ! अहं तं शीघ्रं द्रष्टुम् इच्छामि=और क्या ? मैं उसको जलदी देखना चाहता हूँ ।
८. किमर्थं तं त्वम् एव द्रष्टुं इच्छसि ?=किस लिये -उसे तू इस प्रकार देखना चाहता है ?
९. अतीव कालः जातः यदा मया स दृष्टः अतः अहं तं द्रष्टुम् इच्छामि=बहुत समय हुआ जब मैंने उसको देखा था इस लिये मैं वैसे देखना चाहता हूँ ।
१०. तर्हि अद्य मध्याह्ने गच्छ=तो आज दोपहर को जा ।
११. यदि अहं इतः मध्याह्ने चलिष्यामि, तर्हि अमृतसरनगरं कदा कदा गमिष्यामि=अगर मैं यहाँ से दोपहर चलूंगा तो अमृतसर शहर कब पहुँचूंगा ?
१२. यदि त्वं मध्याह्ने त्रिवादन-समये अग्निरथेन चलिष्यसि, तर्हि पंचवादन समये अमृतसरं गमिष्यसि=अगर तू

दोपहर तीन बजे के समय रेलगाड़ी से चलेगा तो
पाँच बजे के समय अमृतसर पहुँचेगा ।

१३. तर्हि तदा एव अहं गमिष्यामि=तो तभी मैं जाऊँगा ।

१४. यदा त्वं तत्र गमिष्यसि तदा मत् पुस्तकम् अपि तत्र नय, मा
विस्मर=जब तू वहाँ जायगा तब मेरा पुस्तक भी
वहाँ ले जा, मत भूल ।

१५. गङ्गाजलं अतीव निर्मलं अस्ति, अतः तद् एव पातुं इच्छामि=
गङ्गाजल बहुत स्वच्छ है, इस दिये वही पीना
चाहता हूँ ।

१६. रक्षकः द्वारात् बहिः तिष्ठति=पहरे वाला दरवाजे के बाहर
रखा है ।

१७. पुरात् बहिः वनम् अस्ति=बाहर से बाहर जंगल है ।

१८. तस्य पुत्रः पाठशालायां पठति=उसका लड़का पाठशाला में
पढ़ता है ।

१९. समुद्रे अतीव जलं भवति=समुद्र में जल बहुत होता है ।

२०. एवं गरलं मा पिब=तू लहर न पी ।

शब्द

पानरः=पेदर

लेखनं=लिखना

अन्य=दूसरा

पूरवा=पहले कर

उपविश्य=बैठ कर

नित्तिप्य=रस कर

आसन=पैठने का स्थान

पापम्=प्रायश्चित्त

पनिः=पैसे वाला

वाचनं=वाचन, पढ़ना

विचार्यं=विचार करके

प्राप्तं=प्राप्त हुआ

साहित्यं=सामान

बहिः=बाहर

पृष्ठं=पृष्ठ

साधनं=उपकरण

सक्तवान्=बोला

स्वकीय=अपना

प्रारम्भ=आरम्भ

विलोक्य=देख कर

विहस्य=हस कर

यथापूर्वं=पहिले समान

वानरस्य-कथा

एकस्मिन् नगरे केनचिद् धनिकेन एकं वानरः पालितः । स धनिक नित्यं वानरस्य समीप एव उपविश्य लेखनं वाचनं च करोति स्म । एकदा स धनिकः लेखनस्य साहित्यं तत्र एव निक्षिप्य अन्यं कार्यं कर्तुं बहिः गतः । 'अहम् अपि धनिकवत् लिखामि' इति विचार्य वानरः धनिकस्य आसने उपविश्य एकेन हस्तेन पत्रं गृहीत्वा द्वितीयेन लेखनीं धृत्वा यावत् लेखनस्य प्रारम्भं कृतवान्, तावद्, धनिकः अपि तत्र आगतः । तं वानरं विलोक्य विहस्य सक्तवान् । 'भो वानर श्रेष्ठ ! इदं किं करोषि ? कस्मै पत्रं लिखसि' । इति । वानरः अपि शीघ्रं स्वकीयं स्थानं गत्वा यथापूर्वं उपविष्टः ।

पाठ ४२

विष्टं=आटा

धुसुम=फूल

एकदा=एक समय

इतः=वहा, से

तत् =वहा से

कुत =वहा से

सर्वतः=सम ओर

अक्षुः=जूबा

अक्षौ=जूबे से

अम्र=नीक

अमृत=मसत्य

अमृत=मसत्य

अमृत=ममृत

अक्षर=आकाश

अधुज=कमल

अक्षय=जंगल

अगराग=उपटना

हृदय=दिल

कंपनं=कंपना

अपराधः=गुनाह

अलंकारः=जेवर

भारवाहकः=कुली, मजदूर

अक्षरं=अक्षर, हरफ

अंजनं=गुणमा

अङ्गनं=अङ्गण

आगृहं=जेतम्याना

अन्यायः=अन्याय

अभिप्रायः=मतलब

सैनिकः=फौजी आदमी

अशुभं=प्राप

अंगं=अंग, शरीर

अक्षयने=पढ़ाई

स्नानगृहं=स्नान का स्थान

चंचल्य=चंचलता

क्रिया

परिदधाति=वह पहनता है

परिदधामि=पहनता हूँ

परिधास्यसि=(तू) पहनेगा

यासि=जाता हूँ

याति=(वह) जाता है

यास्यसि=(तू) जायगा

परिदधासि=तू पहनता है

परिधास्यति=वह पहनेगा

परिधास्यामि=पहनेँगा

यासि=(तू) जाता है

यास्यामि=जाऊँगा

यास्यति=(वह) जायगा

वाक्य

१. एकदा अहं वनं गतः=एक समय मैं वन की गया ।

२. तत्र मया एकः वृक्षः दृष्टः=वहाँ मैंने एक वृक्ष देखा ।

३. तस्य फलं अतीव मधुरम् आसीत्=उसका फल बहुत मीठा था ।

४. तत् फलं मया भक्षितं=वह फल मैंने खाया ।

५. तस्य कन्या अलंकारं परिदधाति=उसकी लड़की जेवर पहनती है ।

६. अलंकारः मुखस्य राजनस्य च भवति=जेवर सीने का तथा चाँदी का होगा है ।

७. तस्य कः अपराधः आसीत्=उसका क्या बुराई थी ।

८. यतः स कारागृहे स्थापितः जिस कारण वह जेलखाने में रखा गया ।

९. अक्षैः मा क्रीड=जूए से न खेल ।

१०. वृथा मा अट=व्यर्थ न घूम ।

११. सदा अध्ययनं कुरु=हमेशा पढ़ ।

१२. कदापि अन्यायं न कुरु=कभी अन्याय न कर ।

१३. तस्य कः अभिप्रायः अस्ति = उसका क्या मतलब है ।

१४. अद्य अनेन मार्गेण यास्यामि=आज इस मार्ग से जाऊँगा ।

१५. तेन अद्भुतम् आलेख्यं निर्मितम्=उसने अद्भुत तस्वीर बनाई ।

१६. भारवाहकः कुत्र अस्ति येन तव पेटकः नीतः=कुली कहाँ है जिसने तेरा टंक चठाया ।

शब्द

तडागः=तालाब

चक्रवर्ते=समीप

समीपं=पास

प्रभूतं=बहुत

मृणं=घास

रगः=पत्ती

वाक्य

१. एकदा कश्चित् बालकः तडागस्य समीपं गतः=एक समय कोई बालक तालाब के पास गया ।

२. तेन बालकेन तत्र तडागे एकः मयूकः दृष्टः=उस बालक ने वहाँ तालाब में एक मेंढक देखा ।

३. जल-पानार्थं तत्र एकः बलीवर्दः अपि आगतः=पानी पीने के लिये वहाँ एक बल भी आया ।

४. तेन वृषभेण प्रभूतं जलं पीतं=उस बैल ने बहुत जल पिया ।

५. तेन बालकेन तस्मै वृषभाय भक्षणार्थं मृणं दत्तं=उस बालक ने उस बैल को खाने के लिये घास दिया ।

६. तत् तृणं तेन वृषभेण शीघ्रमेव भक्षितम्=ब्रह्म घास उस वैल ने जल्दी से ही खाया ।

७. पश्चात्तत्र एकः रत्नः आगतः=गीछे से वहाँ एक पत्थी आ गया ।

८. तस्मै बालकेन एकः मोदकः दत्तः=उसके लिये बालक ने एक लड्डू दिया ।

संख्यावाचक शब्द

पुंलिंगी	स्त्रीलिंगी	नपुंसकलिंगी
१. एकः (एक)	एका	एकम्
२. द्वौ (दो)	द्वे	द्वे
३. त्रयः (तीन)	त्रिः	त्रीणि

नीचे दिये हुए शब्दों के पुंलिंग स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में एक जैसे ही रूप होते हैं.—

५. पंच (पाँच)	१७. सप्तदश (सतरह)
६. षट् (छे)	१८. अष्ट दश (अठारह)
७. सप्त (सात)	१९. एकोनविंशतिः (एकसीस)
८. अष्ट (आठ)	२०. विंशतिः (बीस)
९. नव (नौ)	२१. एकविंशतिः (एकसीस)
१०. दश (दस)	२२. द्वाविंशतिः (बाईस)
११. एकादश (ग्यारह)	२३. एकोनविंशति (वनसीस)
१२. द्वादश (बारह)	२४. त्रिंशत् (तीस)
१३. त्रयोदश (तेरह)	२५. एकत्रिंशत् (एकसीस)
१४. चतुर्दश (चौदह)	४०. चत्वारिंशत् (चालीस)
१५. पंचदश (द्रह)	५०. पंचाशत् (पचास)
१६. षोडश (सोलह)	६०. षष्टिः (साठ)

वारह महेनों के नाम (पुलिंग)

१. चैत्रः	७. आश्विनः
२. वैशाखः	८. कार्तिकः
३. ज्येष्ठः	९. मार्गशीर्षः
४. आपदः	१०. पौष
५. आवणः	११. माघः
६. भाद्रपदः	१२. फाल्गुनः

तिथियों के नाम (स्त्रीलिंग)

१. प्रतिपदा	६. नवमी
२. द्वितीया	१०. दशमी
३. तृतीया	११. एकादशी
४. चतुर्थी	१२. द्वादशी
५. पंचमी	१३. त्रयोदशी
६. षष्ठी	१४. चतुर्दशी
७. सप्तमी	१५. पूर्णिमा
८. अष्टमी	३०. अमावस्या

पक्षों के नाम (पुलिंग)

शुक्लपक्षः—

जिन पन्द्रह दिनों में शाम के समय चौद होता है ।

कृष्णपक्ष—

दूसरे पन्द्रह दिन जिन दिनों में शाम के समय चौद नहीं होता है ।

पाठ ४३

इस पाठ में एक ब्रह्मण की कथा दी हुई है, जिस कथा के कठिन शब्दों का अर्थ पाठ के अन्त में दिया है ।

१. अस्मिन्निषद् ग्रामे यज्ञप्रिय नामक एकः ब्रह्मणः प्रतिवसति
 स्म=किसी एक गांवमें यज्ञप्रिय नामक एक ब्रह्मण
 रहता था ।

२. स कस्मैचित् कारणाय एकस्मिन् दिने अन्यं ग्रामं प्रस्थितः=
 यह किसी कारण के लिये एक दिन दूसरे गांव
 को चला ।

३. तदा तस्य माता तम् आह=उस समय उसकी माता ने उसे
 कहा ।

४. हे पुत्र ! पकाकी मा घब्र=हे पुत्र ! अकेला न जा ।

५. यज्ञप्रियः आह ! हे मातः ! भयं न कुरु । अस्मिन् मार्गे किम-
 वि भयं नास्ति अतः अहम् पकाकी एव समिध्या-
 मि=यज्ञप्रिय बोला । हे माता ! भय मत कर ।
 इस मार्ग में कुछ भी भय नहीं है । इस लिये मैं
 अकेला ही जाऊंगा ।

६. तस्य निश्चयं श्रुत्वा एक कुक्कुर इस्ते कुरश माता तं आह=
 उसका निश्चय जानकर एक कुत्ता हाथ में धर के
 माता उसे बोली ।

७. यदि त्वं गन्तुम् इच्छसि तर्हि एनं कुक्कुरं गृहीत्वा गच्छ=अगर
 तू जाना हो चाहता है तो इसे कुत्ते को लेकर जा ।

८. तेन वक्तं तया करोमि इति=उसने कहा कि ऐसा ही करत हूं ।

९. ततः स तं कुक्कुरं गृहीत्वा प्रस्थितः=अब वह उस कुत्ते को
 लेकर चला ।

१०. अथ स मार्गे गमनश्रमेण आन्तः कस्यचिद् वृत्तस्य अधस्तात्
उपविश्य प्रसुप्तः=अब वह मार्ग में चलने की थका-
वट से थका हुआ किसी वृत्त के नीचे बैठकर सो
गया ।

११. नत्र कश्चित् सर्पः आगतः=वहाँ कोई एक साँप आ गया ।

१२. सर्पः तेन कुक्कुरेण हतः=वह साँप उस कुत्ते ने मारा ।

१३. यदा स ब्राह्मणः प्रबुद्धः तदा तेन दृष्टं कुक्कुरेण सर्पः हतः
इति=जब वह ब्राह्मण जागा तब उसने देखा कि
कुत्ते ने साँप मारा है ।

१४. तं हतं सर्पं दृष्ट्वा प्रसन्नः ब्राह्मणः तदा अभवीत्=उस मरे हुए
साँप को देखकर खुश हुआ ब्राह्मण तब बोला ।

१५. भरे ! सत्यं वक्तुं मम माया । पुरुषेण कः अपि सहायः
कर्तव्यः इति=भरे ! सच कहा मेरी माता ने, कि मनुष्य को
कोई सहायक रखना चाहिये ।

१६. एकाकिना एष न गन्तव्य इति=मकेले ही नहीं जाना चाहिये ।

१७. एवम् उक्त्वा स ब्राह्मणः पामं गतः=ऐसा कहकर वह ब्राह्मण
गाँव को चला गया ।

१८. तत्र गत्वा स्वकीयं कार्यं च तेन कृतं=वहाँ जाकर अपना कार्य
उसने किया ।

शब्द

‘चित्’ शब्द का भाषा में ‘एक’ ऐसा अर्थ होता है ।

कः चित्=कोई एक ने केनचित्=किसी एक ने

कस्मिंश्चित्=किसी एक में कस्यचित्=किसी एक का

प्रसुप्तः=सो गया सर्पः=साँप

हतः=मारा प्रबुद्धः=जागा

प्राक्षणः=प्राक्षण

कारणं=कारण, खजह

एकाकी=अकेला

प्रति=(यह) जाता है

प्रतापि=जाता हूँ

निश्चयं=निश्चय

प्रस्थितः=बला

शंसः=थका हुआ

वदविषय=बैठ कर

दृष्ट्वा=देखकर

अवधीत्=बोला

मात्र =मात्रा ने

वर्तमान्य=करने योग्य

गगन्यं=ज ने योग्य

दातव्यं=देने योग्य

क्षेत्रिन्यं=क्षितिज ने योग्य

अवश्यं=पाने योग्य

प्रतिषसति=रहता है

आह=बोला

अत्र=जा

अत्रसि=(तू) जाता है

मानः=हे माता

कुङ्कुरं=कुत्ते को

अमः=मेहनत

अथः=न,चे

दृष्टं=देखा

प्रसन्नं=खुश

अरे=अरे

सहायः=सहाय

एकाकिना=अकेले ने

वस्तव्यं=बोलने योग्य

पठितव्यं=पढ़ने योग्य

दृष्टव्यं=देखने योग्य

स्थातव्यं=रहने योग्य

मन्त्रः

विश्वानि देव सवितरुं विभक्तानि परा सुभ ।

यद् भद्रं तन्न वा सुभ ॥१॥

अर्थ— हे (देव) ईश्वर, तू (सवितर) सविता सब के वरपत्र
बाने हारे ईश ! विश्वानि) सब (दुष्टानि) दुष्टाओं, पाप (परा)
दूर (सुभ) फेंक । (यद्) जो (भद्र) ब्रह्माण्ड, (तत्) वह (नः)
हमारे लिये (वा सुभ) समीप कर ।

अद्भिर्गात्राणि शुष्यन्ति,
मनः सत्येन शुष्यति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा,
बुद्धिर्ज्ञानेन शुष्यति ॥२॥

मनुष्मृति ।

अर्थ—(अद्भिः) पानी से (गात्राणि) इंद्रिय, शरीर के अवयव (शुष्यन्ति) शुद्ध होते हैं । (मनः) मन (सत्येन) सच्चाई से (शुष्यति) शुद्ध होता है । (विद्यातपोभ्यां) विद्या और तप से (भूतात्मा) जीवात्मा तथा (बुद्धिः) बुद्धि (ज्ञानेन) ज्ञान से (शुष्यति) शुद्ध होती है ।

सत्यं ब्रूयत् प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात्
एव धर्मः सनातनः ॥३॥

मनुष्मृति ।

अर्थ—(सत्यं) सत्य (ब्रूयत्) बोलना, (प्रियं) प्रिय (ब्रूयात्) बोलना । (च) और (प्रिय) प्यारा परन्तु (अनृतं) असत्य (न) नहीं (ब्रूयात्) बोलना । (एव) यह (सनातनः) हमेशा का (धर्मः) धर्म है ।

पठ ४४

१. एकदा नारदः भगवतं उपेत्य पप्रच्छ—एक समय नारद ने भगवान् के पास जाकर पूछा ।
२. भगवान् ! कः तव परमः भक्तः इति—हे भगवान् ! कौन तेरा परम भक्त है ?

३. भगवान् नारदं आह ! हे नारद ! भूतले मम एकः परमः भक्तः अस्ति=भगवान् ने नारद से कहा कि हे नारद ! भूतल में मेरा एक परम भक्त है ।
४. यदि इच्छसि तं द्रष्टुं तर्हि गच्छ भूतलं तत्र च तं पश्य=मगर चाहता है उसे देखना, तो जा भूतल में और वहाँ उसे देख ।
५. भगवन् ! तस्य किं नामधेयम् अस्ति । कस्मिन् नगरे च स निवसति=हे भगवान् ! उसका क्या नाम है, और किस शहर में बह रहता है ।
६. स विदिशानामके नगरे निवसति । तस्य च नामधेयं भद्रदत्त इति । स कृषीवलः अस्ति=वह विदेशा नाम के नगर में रहता है । उसका नाम भद्रदत्त है वह किसान है ।
७. नारद एतत् श्रुत्वा विस्मितः भूत्वा भूतलं प्रस्थितः=नारद यह सुनकर विस्मित होकर भूमंडल के लिये चला ।
८. तत्र गत्वा च स कृषीवलं प्रत्यक्षोचकार=और वहाँ जाकर उस किसान को प्रत्यक्ष किया ।
९. स भद्रदत्तः कृषीवलः दिने दिने शुद्धे स्थाने वर्तमान एकाग्रैः मनसा क्षणमात्रं भगवन्तं स्मरति ततः कृषिं करोति=वह भद्रदत्त किसान प्रतिदिन शुद्ध स्थान में बैठकर एक म मन से क्षणमात्र भगवान् का स्मरण करता है पश्चात् खेती का काम करता है ।
१०. तं दृष्ट्वा नारदः तदुच्यते=उसे देखकर नारद बोला ।
११. का अत्र भक्तिः=कौन सी यहाँ भक्ति है ?
१२. इति उक्त्वा पुनः स नारदः भगवंतं प्रति गतः=ऐसा बोलकर

फिर वह नारद भगवान् के पास गया ।

१३. तेन पृष्टम् । हे नारद ! किं त्वया परमः भक्तः भद्रदत्त' दृष्टः=
बसने पूजा । हे नारद ! क्या तूने परम भक्त
भद्रदत्त की देखा ।

१४. नारदः प्रत्याह । भगवान् । स मया दृष्टः परन्तु न तत्र का अपि
विशेषता अस्ति=नारद ने उत्तर दिया कि भगवान्
वह मैंने देखा परन्तु उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

१५. भगवता श्रुतम् । य. मन एकम कृत्वा सन्ध्या करोति । स एव
परमः भक्तः भवति न अन्य. इति स्य जानीहि=भगवान् ने कहा
कि जो मन एकम करके सन्ध्या (ध्यान) करता है । वही
परम भक्त होता है । दूसरा नहीं । ऐसा तू जान ।

१६. यः तु मन एकम न कृत्वा उपासना करोति न भक्तः भवितुं
न योग्य इति=जो मन एकम न करके उपासना करता है वह
भक्त होने के योग्य नहीं है ।

शब्द

एकद=एक समय	भगव त=भगवान् को
उपेत्य=ए स जाकर	पशच्छ=पूजा
परम=सब से बड़ा	भक्त=भगत
स्थान=जगह	उपविश्य=बैठ कर
उपविशति=बैठता है	उपविशति=बैठता है
प्रत्यक्षी करिष्यति=साक्षात् करेगा	वसति=(वह) रहता है
वसामि=रहता हूँ	वससि=(तू) रहता है
वत्स्यसि=(तू) रहेगा	वत्स्यति=(वह) रहेगा
उपवेक्ष्यसि=(तू) बैठेगा	उपवेक्ष्यति=(वह) बैठेगा

आह=कहा	भूतल=पृथ्वी, भूलोक
निवसति=बहु रहता है	निवससि=तू रहता है
निवसामि=रहता हूँ	कृषीवलः=किसान
विस्मित=आश्चर्य से युक्त	प्रस्थित=चला
प्रत्यक्षीचक्षार=साक्षु तू किया	प्रत्यक्षीकरोमि=प्रत्यक्ष करता हूँ
प्रत्यक्षीकरोपि=प्रत्यक्ष करता है	प्रत्यक्षीकरोति=प्रत्यक्ष करता है
पृष्ट=पूछा	दृष्ट=देखा
प्रत्याह=जवाब दिया	विशेष=प्रास (वात)
मन=मन	एकाम=स्थिर
जानोहि=ज्ञान	वपासना=भक्ति वपासना
भवितु=होन के लिए	वपविष्ट=बैठ गया
प्रत्यक्षीकृत=साक्षात् किया	वपित=रहा हुआ
वपित्वा=रह कर	वस्तु=रहने के लिये
निर्वसिष्यति=रहेगा	निर्वसिष्यसि=(तू) रहेगा
निर्वसिष्यामि=रहूँगा	

श्लोक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते सत्र देवता ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्तत्राऽकृता क्रिया ॥१॥

मनुस्मृति ।

अर्थ—(यत्र) जहाँ (तु) तू (नार्यः) स्त्रिया (पूज्यन्ते) सत्कारित की जाती हैं । (सत्र) वहाँ (देवताः) देवताएँ (रमन्ते) खुश होती हैं । (तु) परंतु (यत्र) जहाँ (पमा) ये स्त्रिया (न पूज्यन्ते) पूजी नहीं जातीं (तत्र) वहाँ (सर्वा) सब (क्रियाः) कार्य (अकृताः) निष्फल, व्यर्थ होते हैं ।

वरदारोऽपि नेचना अपचाराय जयते ।

पयः पानं भुजंगानाम् केवलं विषवर्धनम् ॥

अर्थ—(नीचानां) नीचों के लिये (उपकार) उपकार किया (अपि) भी (अपकाराय) नुद्दान के लिये (जायते) होता है। जैसे भुजंगानां सापों के लिये (पयः पानं) दूध का पीना (केवलं) केवल (विषवर्धनम्) विष बढ़ाने वाला होता है।

सुभभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः ।

अप्रियस्य च पथस्य यथा श्रोता च दुर्लभः ॥

अर्थ है (राजन्) राजा ! (सतत) हमेशा (प्रियवादिनः) प्यारा बोलने वाले (पुरुषाः) मनुष्य (सुभभाः) आसानी से मिलते हैं। परन्तु (अप्रियस्य) अप्रिय (च) और (पथस्य) हितकारक भाषण का (यथा) बोलने वाला (च श्रोता) और सुनने वाला (दुर्लभाः) मिलन मुश्किल है।

वाक्य

(१) यत्र नार्यः पूज्यन्ते तत्र एव देवताः रमन्ते । परन्तु यत्र पताः न पूज्यन्ते तत्र सर्वाः क्रिया अपक्वा भवन्ति ।

(२) नीचानां उपकारः अपि अपकाराय जायते । यथा भुजंगानां पयःपानं विषवर्धकं भवति ।

(३) हे राजन् ! सततं प्रियवादिनः पुरुषः सुभभाः । परन्तु पथस्य अप्रियस्य यथा यथा दुर्लभः तथा श्रोता अपि दुर्लभः ।

पाठ ४५

१. वरि-अश्विदू ग्रामे घर्मदत्तः नामकः अपि कृषोक्तः आसीत्=

किसी एक गाँव में घर्मदत्त नामक कोई एक किसान था ।

२. ॥ एकं वानरं पालितवान्=उसने एक बंदर पाला था ।

३. स मर्कटः प्रभूतं अन्नं भक्षयित्वा अतीव पुष्टः जातः=बड़ बंदर

यत्तु अत्र खाकर बहुत पुष्ट हो गया ।

४. एकदा म कृगोवलः दध्यौदनं गृहीत्वा कस्मैचित् प्रयोजनाय तेन सह अन्यं ग्रामं प्रस्थितः=एक समय वह किसान दही चावल लेकर किमी कागण के लिये उस (बंदर) के साथ दूसरे गाँव को चला ।
५. स गे एकं तडागं दृष्ट्वा तत्र दध्यौदनं भक्षयितुम् उपविष्टः=रास्ते में एक तालाब देखकर वहाँ दही चावल खाने के लिए बैठ गया ।
६. तत्र कस्यचित् वृक्षस्य मूले दध्यौदनं स्थापयित्वा मुग्धप्रज्ञात् नार्थं तडागं गत्वा तीरे उपविष्टः=वहाँ किसी एक वृक्ष के मूल में दही चावल रखकर मुँह धोने के लिये तालाब के पास जाकर तालाब के किनारे पर बैठ गया ।
७. अग्रान्तरे तेन दुष्टेन भवंतेन तत् सयं दध्यौदनं भक्षितं=इतने में उस दुष्ट बंदर ने वह सब दही चावल खाए ।
८. हस्तेन द्विचिद् दधि गृहीत्वा, समीपे स्थितस्य वस्य चिद् अज्ञस्य मुग्धे क्षिप्य, किम् अपि अज्ञानम् इव दूरं गत्वा स्थितः=हाथ से थोड़ा सा दही लेकर, पास पड़े हुए किसी एक बंदरे के मुँह पर फेंक कर अज्ञान के समान दूर जाकर बैठ गया ।
९. कृगोवलः सुरां प्रक्षाल्य वृक्षस्य मूलं आगत्य दृष्ट्वा, यद् सयं दध्यौदनं केनापि निःशेषं भक्षितम् इति=किसान ने मुँह धोकर वृक्ष के पास आकर देखा कि सब दही चावल किमी ने खा लिये हैं ।
१०. समीपे स्थितस्य अज्ञस्य मुग्धे द्विचिद् दधि दृष्ट्वा तेन एव सयं अन्नं भक्षितम् इति ज्ञात्वा तम् एव तादृशमास=वाम टहरे

हुए बकरे के मुह में [लगा हुआ] थोड़ा सा दही देखकर
रसी ने सब अन्न खाया, ऐसा समझ कर रसी का ताड़न
किया ।

११. दुष्ट अपराधं स्वय कृत्वा अन्येन स अपराधं कृत इति
दर्शयति=दुष्ट [मनुष्य] अपराध स्वय करके दूसरे ने अपराध
किया है, ऐसा बतलाता है ।

१२. मूढ तत् तथा एव अस्ति इति जानाति=मूर्ख वह वैसा ही है
ऐसा जानता है ।

१३ परंतु ज्ञानी सर्वं परीक्ष्य अपराधिनम् एव यथायोग्य ताडयति=
परंतु ज्ञानी मनुष्य सब परीक्षा करके अपराधी को ही यथा
योग्य ताड़ना करता है ।

शब्द

पालितवम्=पालन किया	पालयति=पालन करता है
पालयिष्यति=पालन करेगा	पालयिष्यसि=पालन करेगा ।
पालयिष्यामि=पालन करूँगा	पालयित्वा=पालन करके
पालयितुं=पालन करने के लिये	मर्कट=बन्दर
पुष्ट=पुष्ट, मोटा ताड़ा	स्थापयित्वा=रखकर
तीर=तीर, किनारा	अत्रान्तरे=बीच में
दुष्ट=दुष्ट	अत्र=बकरा, आत्मा परमात्मा
अज=बकरी, प्रकृति	दर्शयितुं=दिखाने के लिये
ताडयामास=ताड़न किया, पीटा	अपराध=गुनाह, अपराध
ज्ञानी=समझदार	परीक्ष्य=परीक्षा करके
अपराधी=गुनाहगार, दोषी	परीक्षे=परीक्षा करता हूँ
पालयसि=पालन करता है	पालयामि=पालन करता हूँ

क्षिप्या=फेंक कर

यावत्=तब तक

निःशेषं=सम्पूर्ण

प्रयोजनं=कारण

मूलं=मूल

दर्शयति=बढ़ दिखाता है

दर्शयामि=दिखाता हूँ

दर्शयिष्यसि=दिखायेगा

दर्शयित्वा=दिखाता कर

परीक्षते=परीक्षा काता है

परीक्षिष्यसे=नू परीक्षा करेगा

अज्ञानं=अज्ञानने वाला

तावत्=तब तक

दृष्टवान्=देखने वाला

व्यविष्टः=बैठ गया

स्वयं=स्वयं, खुद, अपने आप

दर्शयसि=तू दिखाता है

दर्शयिष्यसि=दिखायेगा

दर्शयिष्यामि=दिखाऊँगा

परीक्षसे=तू परीक्षा करता है

परीक्षिष्ये=परीक्षा करूँगा

परीक्षिष्यते=परीक्षा करेगा

वाक्य

[१] यतः धर्मः ततः अयः

[२] धर्म एव दत्तः दन्तिः ।

[३] रक्षित. धर्म एव रक्षति ।

पाठ ४६

निरवयवः [निः-अवयवः]=निराकर, अवयव रहित ।

शब्दमयः=शब्दों से पूर्ण ।

सर्वशक्तिमत्-[सर्व शक्ति-मत्]=अनंत शक्तियों से युक्त ।

उच्यते=बनती है, मजती है, योग्य होती है ।

अत्रा=धिया, सिवाय ।

विद्यमान=बहना, होना ।

अस्मदीनां [अस्मद्-आदीनां]=हम जिनमें पहले हैं ऐसे

मनुष्यों का ।

अध्ययनानंतरं-[अध्ययन-अनंतरं]=पठन के पश्चात् ।

पशुवत्-[पशु-वत्]=पशुओं के समान ।

आदि-सृष्टि=आगम की सृष्टि ।

प्रवृत्तिः=स्वभाव

परमेश्वरः-[परम-ईश्वरः]=बड़ा स्वामी ।

उत्पद्यते=बनता है, उत्पन्न होता है ।

ईश्वरः-[ईश्वरः]=मालिकों में श्रेष्ठ मालिक ।

कुतः=किस कारण ? क्यों ?

सदैव-[सदा-एव]=हमेशा ।

खलु=निश्चय से !

सकलं=संपूर्ण

अंतरेण=बिना

महारथं-[महा-आरथं]=बड़ा बन् ।

आरभ्य=प्रारंभ करके ।

वेदोपदेशः-[वेद-उपदेशः] वेद का उपदेश ।

✽गुरु शिष्य संवाद

शिष्यः—निरवयवात्^१ परमेश्वरात् शब्दमयः^२ वेदः कथम्
उत्पद्यते=निराकार^१ परमेश्वर से, शब्दों से भरा हुआ वेद
कैसे उत्पन्न होता है ।

गुरुः—सर्वशक्तिमति ईश्वरे इयं शंका न उत्पद्यते=सर्व शक्ति-
मान् ईश्वर में यह शंका नहीं ठोक सकती ।

✽ इन पाठों का अर्थ संस्कृत शब्द रचना के अनुसार
दिया है इस कारण भाषा के वाक्य हिंदी शैली के विरुद्ध हुए हैं ।
परन्तु इन्हीं वाक्यों से पता चलेगा कि संस्कृत में और हिंदी में
वाक्य रचना का क्या भेद है ।

शिष्यः—कृतः=क्या ?

गुरुः—मुग्धादि-साधनं श्रंतराऽपि तस्य, कार्यं कर्तुं, सामर्थ्यस्य सदैव
विद्यमानत्वात्=मुख आदि साधन के बिना भी उस
का कार्य करने के लिये सामर्थ्य सदा ही रहता है।

यः अस्ति खलु सर्वं शक्तिमान् ॥ नैव कस्याऽपि सहाय्यं, कार्यं कर्तुं,
गृह्णाति=जो है निश्चय से सर्वशक्तिमन् वह नहीं
किमी का भी सहाय्य कार्य करने के लिये लेता है।

यथा अस्मदादीनां, महायेन बिना, कर्तुं, सामर्थ्यं नास्ति । न च
ईश्वरे=जैसा हम जैसों का, सहाय के बिना कार्य
करने के लिये सामर्थ्य नहीं है । नहीं और ईश्वर
में (अर्थात् हमारी जैसी अवस्था ईश्वर में नहीं) ।

यदा निरख्येन ईश्वरेण सकलं जगद् अरचितं, तदा वेद-रचने
का शंकाऽस्ति ?=अथ निराकार ईश्वर ने तब जगत्
रचा है, तब वेद रचने में क्या शंका है ?

शिष्यः—जगद्-रचने तु खलु ईश्वरं अतरेण, न कस्याऽपि सामर्थ्यम्
अस्ति=जगत् रचने में तो निश्चय से ईश्वर को
छोड़कर, नहीं किसका भी सामर्थ्य है ।

वेद रचने तु अन्यस्य ग्रन्थ-रचन-वत् स्यात्=वेद रचने में तो दूसरे
किसी की ग्रन्थ रचना के समान (सामर्थ्य) हो
सकता है ।

गुरुः—ईश्वरेण रचितस्य अध्ययनानंतरं एष ग्रन्थ रचने कस्याऽ
पि सामर्थ्यं स्यात् न च अन्यथा=ईश्वर ने रचे हुए
वेद के अध्ययन के पश्चात् ही ग्रन्थ रचने में किसी
का भी सामर्थ्य होता है । नहीं और (किसी)
दूसरे प्रकार से ।

नैव कश्चित् अपि पठन पाठन अन्तरा विद्वन् भवति=नहीं कोई भी पढ़ने पढ़ने बिना विद्वान् होता है ।

• किंचिद् अपि शास्त्रं, पठित्वा, उपदेशं श्रुत्वा, व्यवहारं च दृष्ट्वा एव, मनुष्याणां ज्ञानं भवति=कोई एक भी शास्त्र पढ़ के उपदेश सुनकर, और व्यवहार देखकर ही, मनुष्यों को ज्ञान होता है ।

यथा महारथस्थानां मनुष्याणां, उपदेशं अन्तरा, पशु वत्प्रवृत्तिं भवति=जिस प्रकार बड़े जङ्गलमें रहने वाले मनुष्यों की, उपदेश के बिना, पशु समान प्रवृत्ति होती है ।

तथैव आदि सृष्टिम् आभ्यस्य, अद्यपर्यन्त, वेदोपदेशम् अनरा, सर्वं मनुष्याणां प्रवृत्तिं भवेत्=वसा ही आदि सृष्टि प्रारम्भ करके, आज तक, वेद के उपदेश के बिना, सब मनुष्यों की प्रवृत्ति होती है ।

वाक्य

निराकारेण ईश्वरेण एव यथा जगत् निर्मितं तथैव वेद अपि निर्मितः । हस्तपादादि साधनं विना न ईश्वरः यथा सृष्टिं रचयति तथैव वेदम् अपि स एव रचयति । यथा सहायेन विना मनुष्यं कार्यं कर्तुं न शक्नुवन्ति तथा ईश्वरे नास्ति । स अन्यस्य सहायेन विना अपि सर्वं स्वकीयं रचनाकार्यं कर्तुं शक्नोति । स सर्वशक्तिमान् अस्ति मनुष्यवत् अलशक्तिमान् नैवास्ति ।

पाठ ४७

मानुष्येभ्यः =सब मनुष्यों
स्वाभाविकजन्म के साथ
क लिये
अथवा दुःखा

वेदानां=सब वेदों का
मन्यते=माना जाता है

अर्हति=योग्य होता है
वेदोत्पादनं=(वेद-उत्पादन)
वेदों का उत्पन्न होना

विदुषां=विद्वानों के
रक्षते=रखा जाता है
आसेत्=था

सकाशात्=पास से
सृष्टेः=सृष्टि के
क्रमः=सिलसिला

विद्य-संभव=विद्या का होना
विद्या प्राप्त होनी

सकृष्टं=उत्तम

सदुक्त्या=(सत् वस्तुता)-
ससकी वन्नति-पृष्टि से ।

मन्थ-रचनं=सुस्तक बनाना

मात्र=वेद्यत

अस्मदादिभिः=हम हैं आदि
अनेकविधि=अनेक प्रकार का
जिनमें ऐसे मनुष्यों द्वारा

अपेक्ष=आवश्यकता, जरूरी

अवश्य=जरूर

आरम्भ-समयः=प्रारम्भ का
समय

ईश्वरोपदेशः=(ईश्वर-उपदेशः)
ईश्वर का उपदेश

रक्षयेत्=रचेगा

गुरु शिष्य संग्रहः

शिष्यःवदति ईश्वरेण मनुष्येभ्यः स्वाभाविक ज्ञानं दत्तम्=शिष्य
बोलाता है-ईश्वर ने मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान
दिया है ।

तत् च सर्वमप्येभ्यः सकृष्टम् अस्ति=और वह सब पुस्तकों से
उत्तम है ।

व तेन विना वेदानाम् अपि ज्ञानं भवितुम् अर्हति नही उसके
विना वेदों का ज्ञान हो सकता है ।

तदुन्मत्त्या प्रथमरचनम् अपि करिष्यन्ति एव=उसकी भवति से
पुस्तक की रचना भी करेंगे ही ।

पुनः किमर्थं मन्यते वेदोत्पादनम् ईश्वरेण कृतम् इति—फिर
किस लिये माना जाता है वेदों की उत्पत्ति
ईश्वर ने की ऐसा ।

गुरुः वदति-न विना अध्ययनेन स्वाभाविक ज्ञान-मात्रेण, कस्य
अपि निर्वाहः भवितुम् अर्हति=गुरु कहता है—
नहीं अध्ययन के बिना, स्वाभाविक ज्ञान से ही
केवल, किसी का भी निर्वाह हो सकता है ।

यथा अस्मदादिभिः अपि अन्येषां विदुषां सकाशात् अनेकवि-
धं ज्ञानं गृहीत्वा एव ग्रन्थः रच्यते=जैसा हम
जैसे लोग भी अन्य विद्वानों के पास से अनेक
प्रकार का ज्ञान लेकर ही ग्रन्थ रचते हैं ।

तथा ईशा ज्ञानस्य सर्वेषां मनुष्याणां अपेक्षा अवश्य भवति=
वैसी ईश्वर के ज्ञान की सब मनुष्यों के लिये
आवश्यकता अवश्य होती है ।

किं च । न सृष्टेः आरंभसमये पठनपाठन क्रमः प्रथमः च कश्चिद्
अपि आसीत्=और । नहीं सृष्टि के प्रारम्भ में
पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला और प्रथम कोई भी था ।

तदानीं ईश्वरोपदेशं श्रुत्वा, न च कस्य अपि, विद्यासंभवः चमूक=
तब ईश्वर के उपदेश के बिना, नहीं और किसी
भी, विद्या की प्राप्ति हुई थी ।

पुनः कथं कश्चिन् जनः ग्रन्थं रचयेत्=फिर कैसे कोई मनुष्य ग्रन्थ

रचेगा ?

पाठ ४८

ईशा=ईश्वर ने

वास्यं=झांपने योग्य, व्यापने
रहने योग्य

स्वित्=भी, ही

कर्म=उद्योग, प्रयत्न

क्षिप्यते=क्षेप लगता है धडका नरः=मनुष्य

लगता है

अंधं तमः=गाढ़ अंधकार हिरण्मय=सुवर्णमय

पात्र=घर्जन

सत्यं=प्रचार्ई

पूयन्=पुष्ट होने वाला, बढ़ाने

दृष्टये=दर्शन के लिये

वाला

वित्तं=धन

सर्पणीय=नष्ट होने योग्य

अपावृणु=छोड़

आप्यायन्तु=बढ़ें, वृद्धि और

वृद्धि को प्राप्त

हो जाय

सर्=शक्य अशक्य विचार

आमनन्ति=विचार करते हैं

सर्पसि=अनेक प्रकार के खप

त्यक्त=दत्त, दान, त्याग किया

दृष्ट्वा

भुञ्जीथाः=भोगी

गृधः=जज्जवा भी

जिजीविषेत्=जीने की इच्छा

रातं=सौ

समाः=वर्ष, साल

प्रविरान्ति=धुमते हैं

अविद्या=जो विद्या से उल्टी हो

उपासते=(उप-आसते)-पास

बैठते हैं, उपासना करते हैं

अपिहित=ढँहा हुआ

पद्=स्थान, अवस्था, प्राप्तव्य

परन्ति=करते हैं, आचरण करते हैं सप्रः =सत्त्व, साररूप करते हैं

उपनिषद् का उपदेश

- १ ईशा वास्य इद सर्वम्—ईश्वर के व्यापने योग्य है यह सब ।
- २ तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा =उसके दिये हुए से भोग करो ।
- ३ मा गृध कस्य स्विद् घनम्=न ललचाओ किसी का भी घन
- ४ कुर्वन् पथ इह कर्माणि जिजीविषेत् शत समा = करते हुए ही यहाँ कर्म जीने की इच्छा करो सौ वर्ष ।
- ५ न कर्म लिप्यते नरे =नहीं कर्म का लेप होता है नर में ।
- ६ अध तम प्रविशन्ति ये अविद्या वपासते=अधे तम को प्राप्त होते हैं जो अज्ञान के पास रहते हैं ।
- ७ हिरण्यमेन पात्रेण सत्यस्य अविहित मुरम्=सोने के बर्तन से सत्य का ढक है मुर ।
- ८ सत् त्व पृषन् अपावृणु सत्य धर्माय हृष्टे =इमको तू, हे पोषक गोल दे सत्य धर्म को देरने के लिये ।
- ९ कृत, स्म =किये हुए का स्मरण कर ।
- १० आप्यायन्तु मम अगानि वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र अथो बल, इन्द्रियाणि च=बढ़ जाय मेरे अवयव, वाणी, प्राण और, कान और बल और इन्द्रियों ।
- ११ न तत्र चक्षु गच्छति न वाक् गच्छति=नहीं वहाँ आँख जाती है नहीं वाणी जाती है ।
- १२ न विस्तेन तर्पणीय मनुष्य =नहीं घन से तृप्त होता है मनुष्य
- १३ न एषा सर्वेण मति आपनेया=नहीं यह तर्क से बुद्धि प्राप्त होने वाली है ।
- १४ सर्वे वेदा यत् पद आपनन्ति=सब वेद जिस स्थान का मनन करते हैं ।

१५. तपांसि^१ सर्वाणि^२ च यद् वदन्ति=और जो सब^३ तप^४ बोलते हैं ।

१६. यद् इच्छन्तः ब्रह्मव्यं चरन्ति=जिसकी इच्छा करते हुए ब्रह्मव्यं पालते हैं ।

१७. तत् ते पदं संमहेण ब्रवीमि=बह तुमको स्थान संक्षेप से कहता हूँ ।

१८. ओम् इति एतत्=ओम् ही यह है ।

पाठ ४६

मूल्यं=हीमत, मूल्य

पंच=पाँच

रूपः=रूपया

मुद्रा=रूपया

मुद्रयै रया=(मुद्रया-पकया) अष्ट=आठ

पक रूपया से

पणः=रैमा

हट्ट=दुकान, हट्टी

अच्छं=अच्छा

वणिक्=बनिया

कोटशः=कैमा

द्वियान्=कितना

ठायः=तराई

पंचलक्ष्मिणि=पाँच लक्ष

हानि=नुकसान

संयत्सरः=वर्ष

जातः=हो गया

लक्षद्वयं=दो लाख

लक्षत्रयम्=तीन लाख

कुतः=कहाँ से

क=कहाँ से

वेदार=खेत

पक्ष=पक्षी हुआ

घृवं=घो

अर्थः=भाव

भाषः=भाव

स पाद=सखा

प्रस्य=सेर

गुदः=गुद

सेटकः=सेर

पला=इलायची
त्रयविक्रयौ=लेन देन

प्राप्नुत*=मिलते हैं, प्राप्त होते हैं।
मिथ्याकारी=भूठा व्यवहार
करने वाला

बहुमूल्य=कीमती
शाक=साक भाजी
लुनतु=काटे

आविक=ऊनी कपड़ा
लुनति=काटता है

अस्य किं मूल्यम् ?=इसका क्या मूल्य है ?

पच कृत्याणि=पोंच रुपये ।

गृहाण । इदं वस्त्रं देहि=लीजिये । यह वस्त्र दीजिये ।

अष्ट-ध, घृतस्य कः अर्घं=आठ कल घी का क्या भाव है ।

मुद्रैकया सपाद-प्रस्थं विक्रीयते=एक रुपया का सवा सेर बेचते हैं ।

गृहस्य को भाव ?=गृह का क्या भाव है ?

अष्टभिः पणै एषसेटकमात्रं ददाति=आठ पैसों का एक सेर
भर देते हैं ।

स्वम् आपण गच्छ=तु दुकान पर जा ।

पला आनय=इलायची ले आ ।

आनीता । गृहाण=ले आया । लीजिये ।

कस्य दृष्टे दधिदुग्धे अन्धं प्राप्नुत ?=किसकी दुकान पर दही
और दूध अच्छे मिलते हैं ।

घनपाकस्य=घनपाक की ।

स सत्येन एव त्रयविक्रयौ करोति=वह सत्य ही से लेन देन करता है ।

भीषति वणिक् कीदृशं अस्ति=भीषति बनिया कैसा है ?

स मिथ्याकारी=वह भूठा है

अस्मिन् सवत्सरे क्रियान् लाभो व्ययः क्व जातः=इस वर्ष में कितना
लाभ और खर्च हुआ ।

पंचलक्षणि लाभः=पांच लख (रुपये) लाभ ।

लक्षद्वयस्य व्ययः च=प्रौर दो लाख खर्च (हुए) ।

मम खलु अस्मिन्वर्षे लक्षत्रयस्य हानिः जातः=मेरी तो इस वर्ष

तीन लाख की हानि हो गई ।

वस्तूरी कस्माद् आनेयते=वस्तूरी वहाँ से लाई जाती है

नयपासान्=नयरास से ।

मधुमूक्य आविकं कुलः आनयन्ति=कीमती दुशाक्षे वहाँ से लाते हैं ।

फरमीराम्=फरमौर से ।

दुष्ट गच्छसि=छड़ा जाते हो ।

पाटलिपुत्रम्=पटना को ।

वदा आगमिष्यसि=व आओगे ?

एक मासे=एक महीने में ।

म क गतः=वह कहाँ गया ?

रा क आनेतुम्=राक लेने को ।

संप्रति पेदाराः पफः=इस समय खेर पड़ गये हैं ।

यदि पफः तर्लुनीत=यदि पड़े तो काटो ।

पाठ ५०

गौ=गाय

प्रतिदिनं=हर रोज, नित्य

गारी=वन, आजीव सार

मुच्यते=गया जाता है

त्रि=तीन

पादः=पौधा हिस्सा

महिषी=भैंस

क्रियन्=किनना

प्रत्यहं=प्रतिदिन

मिलति=मिलता है

मुद्र पादः=दण्ड का घीया हिस्सा

आर आने

अर्णः=१००, अण

तदानेतन = उस समय का
भज = बकरी
मन्ति = हैं
द्व दश = बारह
सार्धद्वादश = सठे बरह
सार्धं द्व = अठ ई
कति = कितने
साक्षी = गवाह

अजावय = (अजा-अवय) बकरी भेड
अवि = भेड़
१० परिमाणं = कितने परिमाण में
सार्धं = (स-अर्ध) आधे के साथ
सार्धं पच = साठे पाच
द्वय = दो
सहस्र = हजार
वर्तते = है

पंच महामणि=पौंच हज्जार ।

भो राजन् ! मम अयं श्रृणुं न ददाति=हे राजन् ! मे ॥ यद् ऋण
नहीं देता ।

यदा तेन गृहीते तदा नीतनः कश्चित् साक्षी वर्तते न वा=जब उसने
लिया था उस समय का कोई साक्षी वर्तमान है या नहीं ?
अस्ति=है ।

तर्हि आनय=तो ले आओ ।

आनीतः । अयम् अस्ति=जाया । यह है ।

पाठ ५१

आधारति=आधाता है	धरति=वसता है
धेष्टः=अच्छा	कीदः=जोग, जन, अनुष्य
वृद्धरेत्=अनति-वृद्धार करना	आरमा=आरमा ने
आरमनः=आरमा को, अपने	आरमातं=आरमा को; अपने को
आरम=आरमा, (रूप)	पूज्य=सर्वधार करने योग्य
गुरु=वरदेशक, बड़ा	गरीयान्=श्रेष्ठ
समः=समान	त्वरसमः=तेरे जैसा
अधिकः=अधिक	अधिकः=(अधि अधिक)
	सब प्रकार से अधिक

प्रभावः=राति, मासध्यं	इतरः=अन्य
प्रमाणं=प्रमाणिक, मास्य पमंद	गुरते=वरता है
अनुवर्तते=पीछे चलता है अनुसरण करता है	
व.पु.=माई	विपुः=गुप्त, दुरजन
विना=बाप, पातक	धर=चलने वाला, स्थावर
अधर=न चलने वाला, स्थावर	

चराचर=(चर-अचर)-हिलने वाले और न हिलने वाले

कुनः=कहां से, कहाँ

अन्यः=दूसरा

लोकत्रय=तीन लोक

अपतिम=अतुल

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः ।

स यप्रमाणां कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ गीता ३ । २१ ॥

पदच्छेद । यत् । यत् । आ-चरति । श्रेष्ठः । तत् । तत् । एव ।
इतरः । जनः । सः । यत् । प्रमाणं । कुरुते । लोकः । तद् ।
अनु-वर्तते ।

अन्वय । यत् यत् श्रेष्ठः^१ आचरति^२ । तत् तत् एव इतरः
जनः^३ (आचरति) । सः (श्रेष्ठः) यत् प्रमाणं^४ करत^५ । लोकः तद्
अनुवर्तते^६ ।

अर्थ—जो जो श्रेष्ठ^१ (पुरुष) आचरण^२ करता^३ है । वह वह
ही (उसको ही) इतर^३ लोक आचरता है । वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो
प्रमाण^४ करता^५ है (मानता है) । (इतर) लोग भी उसी के पीछे^६
चलते^६ हैं ।

अर्थात् जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं वैसा ही इतर लोग
करते हैं । श्रेष्ठ लोग जिसको प्रमाण मानते हैं उसी को इतर लोग
भी प्रमाण मानते हैं ।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुगत्मनः ॥ गीता ६ । ५ ॥

पदच्छेद—उद्धरेत् । आत्मना । आत्मानं । न । आत्मानं ।
अवसादयेत् । आत्मा । एव । हि आत्मनः । बन्धुः । आत्मा ।
एव । रिपुः । आत्मनः ।

अन्वयः—आत्मना^१ आत्मनं उद्धरेत्^२ । आत्मानं न अव-

सादयेत्^१ । हि^२ आत्मा एव, आत्मनः बन्धुः^३ । हि आत्मा एव
आत्मनः रिपुः^४ ।

अर्थ—आत्मानं^१ आत्मा का उद्धार^२ करना चाहिये^३ ।
आत्मा को नहीं मारना^४ चाहिए^५ । क्योंकि^६ आत्मा ही आत्मा
का भाई^७ है । आत्मा ही आ-मा का शत्रु^८ है ।

अपनी आप प्रति करनी चाहिए । अपनी गिरावट आप ही
नहीं करनी चाहिये । क्योंकि अपना आप ही भाई । और अपना
आप ही शत्रु है ।

ओ३म् शम् ।

इसे अवश्य पढ़ें—

प्रिय पाठक ! अब आपने सस्कृत १ स्वयं शिक्षक का प्रथम भाग समप्त कर लिया है । और यदि आपने पुस्तक के आरम्भ में लिखे नियमों के अनुसार प्रति-दिन नियमपूर्वक पाठों के अभ्यास में समय दिया है, तो हमें यह बड़ा विश्वास है कि आप को सस्कृत भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य हो गया होगा । आप स्वयं इस बात को मानते होंगे कि 'सस्कृत स्वयं शिक्षक' के प्रथम भाग से ही आपको सस्कृत में पर्याप्त योग्यता हो गई है । यह हम समझते हैं कि कुछ स्थलों पर शायद आप को कुछ कठिनता प्रतीत हुई हो । इस का मुख्य कारण यही है कि इस प्रथम भाग में हमने जान बूझ कर, पाठकों की आसानी के लिए, व्याकरण को बहुत ही कम स्थान दिया है । यह तो सिद्ध बात है कि व्याकरण ही बिसी भी भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की कुंजी है और यह सस्कृत के विषय में तो और भी ज्यादा पूरी उत्तरती है । सस्कृत भाषा का क्रम नियम बद्ध और विधि वैज्ञानिक है, इसलिये बिना सस्कृत के व्याकरण का पूरा ज्ञान प्राप्त किए सस्कृत सीख सकना असम्भव है । 'सस्कृत स्वयं शिक्षक' के दूसरे व तीसरे भागों में व्याकरण को ही मुख्य स्थान दिया है । सस्कृत व्याकरण यदि विधिपूर्वक सचिन् क्रम से पढ़ा जाए तो बहुत ही सुममता से सब समझ में आ जाता है । 'सस्कृत स्वयं शिक्षक' के दूसरे व तीसरे भाग में व्याकरण की कठिन और गूढ़ गुत्थियों (समस्याओं) को भी इस तरह समझाया है कि पाठकों को जरा भी कठिनता न होगी । जगह जगह पर लेखक ने अपने ४० वर्ष के सस्कृत के अनुभव से

ऐसे गुरु' दिये हैं कि जग ममभ होने पर हमेशा के लिये ध्याकरण पर आपका पूर्ण अधिकार हो जायगा ।

आपने संस्कृत सीखने के निश्चय से ही इस 'प्रथम भाग' को अपना कर्त्तव्य समझ देकर पढ़ा । अब आपको इस काम को अधूरा न छोड़ना चाहिये क्योंकि यदि आपने कुछ समय के लिये भी संस्कृत का नियमित अभ्यास बन्द कर दिया तो कुछ घरसे बाद अवश्य ही आपके सब क्रिये-कराये पर पानी फिर आयगा । हमारा यह दावा है कि संस्कृत स्वयं शिक्षक के दूसरे या तीसरे भाग को ध्यान से पढ़ लेने के बाद आप आसानी से शुद्ध संस्कृत बोल व लिख सकेंगे और आरक्षी इतनी योग्यता हो जायेगी कि आप वेदों, शास्त्रों और अन्य सस्कृत के वच मंत्रों को समझ सकें ।

'संस्कृत स्वयं शिक्षक' का दूसरा भाग ठीक वही से शुरू होता है जहाँ पहला भाग समाप्त हुआ है—इस तरह के नियमित सिलसिले में पाठशाला को दूसरे या तीसरे भाग के समझने में जग भी कठिनाता न होगी । कम-भक्त न हो इस बात का दूसरे या तीसरे भाग में पूरा ध्यान रक्खा गया है ।

हमारा आप से विशेष अनुरोध है कि आप अपने अभ्यास को अधूरा कदापि न छोड़ें और द्वितीय या तृतीय भाग को अवश्य पढ़ें—

- संस्कृत स्वयं शिक्षक—द्वितीय भाग—२६७ पृष्ठ मुख्य १।)
 संस्कृत स्वयं शिक्षक—तृतीय भाग— १।)
 दोनों भाग एक साथ मंगलाने पर केवल २) दो रुपये

धर्म का आदि-स्रोत

ले०—श्री गङ्गाप्रसाद जी एम० ए०, चीफ-जज टेहरी (गढ़वाल)

आपने पहले यह पुस्तक अंग्रेजी में The Fountain Head of Religions के नाम से लिखी थी जिसके अब तक कई संस्करण निकल चुके हैं। असल पुस्तक अंग्रेजी में होने के कारण हिन्दी-पठित सज्जन इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। अस्तु, 'आर्यमित्र' के भूतपूर्व योग्य-सम्पादक ने इसका अनुवाद कर आर्य जगत् का बड़ा उपकार किया है।

इस पुस्तक में ज़िन्दावस्ता, धार्इथिल, कुरान तथा अन्य विविध मत-मतान्तरों का भली प्रकार उल्लेख कर यह दिखाया गया है कि वैदिक-धर्म ही समस्त धर्मों का आदि स्रोत है। योग्य लेखक ने सत्तार के विभिन्न मतों की परस्पर तुलना की है जिससे सर्व साधारण अच्छी तरह लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं उपदेशकों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसी पुस्तक का प्रत्येक आर्य्य भाई के पास रहना आवश्यक है जिससे इसका अध्ययन कर विपत्तियों को मुँह तोड़ उत्तर दे सकें। पुरनक सर्वांग सुन्दर है। द्वितीय संस्करण अभी छपा है। ३०० पृष्ठ की सज्जिद्ध पुस्तक का मूल्य १)

म० राजपाल ऐरड सन्स

(आर्य्य पुस्तकालय) सरस्वती आश्रम,
अनारकली, लाहौर।

मु०—श्री विधनाथ एम. ए., आर्य्य प्रेस, लिमिटेड, १७, मोहनलाल रोड, लाहौर।

—विधनाथ एम० ए०, राजपाल एरड गन्ग, अनारकली, लाहौर।